اٰياتها ٢٨٦ ۞ ٢ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ ٨٧ ۞ ركوعاتها ٤٠

सूरए बक़रह मदनिय्या है, इस में दो सो छियासी आयतें और चालीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[1]

الٓمّٓ ۚ ١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۚۛ فِيْهِ ۚۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ ٢ الَّذِيْنَ

[2] वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं[3] इस में हिदायत है डर वालों को[4] वोह जो

معانقة ١

1 : सूरए बक़रह : येह सूरत मदनी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मदीनए त़य्यिबा में सब से पहले येही सूरत नाज़िल हुई सिवाए आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ" के कि ह़ज्जे विदाअ़ में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई। (خازن) इस सूरत में दो सो छियासी आयतें, चालीस रुकूअ़, छ[6] हज़ार एक सो इक्कीस कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो ह़र्फ़ हैं। (خازن) पहले क़ुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे येह त़रीक़ा ह़ज्जाज ने निकाला। इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरए बक़र में हज़ार अम्र, हज़ार नह्य, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरें हैं, इस के अख़्ज़ में बरकत, तर्क में ह़सरत है, अहले बात़िल जादूगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैत़ान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि शैत़ान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (جمل) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने ह़ज़रते मुग़ीरा से रिवायत की, कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा क़ुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अव्वल की और आयतुल कुर्सी और दो इस के बा'द की, और तीन आख़िरे सूरत की। **मस्अला :** त़बरानी व बैहक़ी ने ह़ज़रते इ़ब्ने उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से रिवायत की, कि हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़्न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़र के अव्वल की आयतें और पाउं की त़रफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो। **शाने नुज़ूल : अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से एक ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाने का वा'दा फ़रमाया था जो न पानी से धो कर मिटाई जा सके न पुरानी हो, जब क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा तो फ़रमाया : "ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" कि वोह किताबे मौऊ़द (जिस का वा'दा किया गया था) येह है। एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इस्माईल में से एक रसूल भेजने का वा'दा फ़रमाया था जब हुज़ूर ने मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई जहां यहूद ब कसरत थे तो "الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" नाज़िल फ़रमा कर उस वा'दे के पूरे होने की ख़बर दी। (خازن) **2 :** "الٓمّٓ" सूरतों के अव्वल जो ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़ आते हैं उन की निस्बत क़ौले राजेह़ येही है कि वोह असरारे इलाही और मुतशाबिहात से हैं, इन की मुराद **अल्लाह** और रसूल जानें हम इस के ह़क़ होने पर ईमान लाते हैं। **3 :** इस लिये कि शक उस में होता है जिस पर दलील न हो, क़ुरआने पाक ऐसी वाज़ेह़ और क़वी दलीलें रखता है जो आ़क़िल, मुन्सिफ़ को इस के किताबे इलाही और ह़क़ होने के यक़ीन पर मजबूर करती हैं तो येह किताब किसी त़रह़ क़ाबिले शक नहीं, जिस त़रह़ अन्धे के इन्कार से आफ़्ताब का वुजूद मुश्तबह नहीं होता ऐसे ही मुआ़निद सियाह दिल के शक व इन्कार से येह किताब मश्कूक नहीं हो सकती। **4 :** "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" (इस में हिदायत है डर वालों को) अगर्चे क़ुरआने करीम की हिदायत हर नाज़िर के लिये आ़म है मोमिन हो या काफ़िर जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "هُدًى لِّلنَّاسِ" (लोगों के लिये हिदायत) लेकिन चूंकि इन्तिफ़ाअ़ इस से अहले तक़्वा को होता है इस लिये "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" इर्शाद हुवा, जैसे कहते हैं बारिश सब्ज़े के लिये है या'नी मुन्तफ़ेअ़ इस से सब्ज़ा होता है अगर्चे बरस्ती कल्लर ज़मीने बे गियाह (बेकार व बन्जर) पर भी है। तक़्वा के कई मा'ना आते हैं : नफ़्स को ख़ौफ़ की चीज़ से बचाना, और उ़र्फ़े शरअ़ में मम्नूआ़त छोड़ कर नफ़्स को गुनाह से बचाना, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मुत्तक़ी वोह है जो शिर्क व कबाइर व फ़वाहि़श से बचे। बा'ज़ों ने कहा : मुत्तक़ी वोह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे। बा'ज़ का क़ौल है : तक़्वा ह़राम चीज़ों का तर्क और फ़राइज़ का अदा करना है। बा'ज़ के नज़्दीक मा'सियत पर इसरार और त़ाअ़त पर ग़ुरूर का तर्क तक़्वा है। बा'ज़ ने कहा : तक़्वा येह है कि तेरा मौला तुझे वहां न पाए जहां उस ने मन्अ़ फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि तक़्वा हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام और सहाबा رضی اللہ تعالٰی عنہم की पैरवी का नाम है। (خازن) येह तमाम मा'ना बाहम मुनासबत रखते हैं और मआल (या'नी अस्ल) के ए'तिबार से इन में कुछ मुख़ालफ़त नहीं। तक़्वा के मरातिब बहुत हैं : अ़वाम का तक़्वा ईमान ला कर कुफ़्र से बचना, मुतवस्सित़ीन का अवामिर व नवाही की इत़ाअ़त, ख़वास का हर ऐसी चीज़ को छोड़ना जो **अल्लाह** तआ़ला से ग़ाफ़िल करे। (جمل) ह़ज़रते मुतर्जिम قدس سرہ ने फ़रमाया : **तक़्वा सात क़िस्म है :** (1) कुफ़्र से बचना, येह बि फ़ज़्लिही तआ़ला हर मुसल्मान को ह़ासिल है (2) बद मज़्हबी से बचना, येह हर सुन्नी को नसीब है (3) हर कबीरा से बचना (4) सग़ाइर से भी बचना (5) शुबुहात से एह़तिराज़ (6) शहवात से बचना (7) ग़ैर की त़रफ़ इल्तिफ़ात से बचना, येह अख़स्सुल ख़वास का मन्सब है। और क़ुरआने अ़ज़ीम सातों मर्तबों का हादी है।

www.dawateislami.net

يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾

बे देखे ईमान लाएं[5] और नमाज़ क़ाइम रखें[6] और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं[7]

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَآ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمَآ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ

और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[8]

5 : ''اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' यहां से ''مُفْلِحُوْنَ'' तक आयतें मोमिनीने बा इख़्लास के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन ईमानदार हैं, इस के बा'द दो आयतें खुले काफ़िरों के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन काफ़िर हैं। इस के बा'द ''وَمِنَ النَّاسِ'' से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में हैं जो बातिन में काफ़िर हैं और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। (جمل) ''ग़ैब'' मस्दर, या इस्मे फ़ाइल के मा'ना में है इस तक़्दीर पर ''ग़ैब'' वोह है जो हवास व अक़्ल से बदीही तौर पर मा'लूम न हो सके, इस की दो क़िस्में हैं : एक वोह जिस पर कोई दलील न हो, येह इल्मे ग़ैब ज़ाती है, और येही मुराद है आयए ''عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ'' (और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वोही जानता है) में और उन तमाम आयात में जिन में इल्मे ग़ैब की ग़ैरे ख़ुदा से नफ़ी की गई है, इस क़िस्म का इल्मे ग़ैब या'नी ज़ाती जिस पर कोई दलील न हो **अल्लाह** तआला के साथ ख़ास है। ''ग़ैब'' की दूसरी क़िस्म वोह है जिस पर दलील हो जैसे सानेए आलम और उस की सिफ़ात, नुबुव्वात और उन के मुतअ़ल्लिक़ात, अह़काम व शराएअ़ व रोज़े आख़िर और उस के अह़वाल, बा'स, नश्र, हिसाब, जज़ा वग़ैरा का इल्म जिस पर दलीलें क़ाइम हैं, और जो ता'लीमे इलाही से ह़ासिल होता है यहां येही मुराद है। इस दूसरे क़िस्म के ग़ुयूब जो ईमान से अ़लाक़ा रखते हैं उन का इल्म व यक़ीन हर मोमिन को ह़ासिल है, अगर न हो आदमी मोमिन न हो सके, और **अल्लाह** तआला अपने मुक़र्रब बन्दों अम्बिया व औलिया पर जो ग़ुयूब के दरवाज़े खोलता है वोह इसी क़िस्म का ग़ैब है। या ''ग़ैब'' मा'निये मस्दरी में रखा जाए और ग़ैब का सिला ''مُؤْمَنٌ بِهٖ'' क़रार दिया जाए, या ''بِاءْ'' को मुतलब्बिसीन मह़ज़ूफ़ के मुतअ़ल्लिक़ कर के ह़ाल क़रार दिया जाए। **पहली** सूरत में आयत के मा'ना येह होंगे जो बे देखे ईमान लाएं जैसा कि ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने तरजमा किया है। **दूसरी** सूरत में मा'ना येह होंगे जो मोमिनीन के पसे ग़ैबत ईमान लाएं या'नी उन का ईमान मुनाफ़िक़ों की तरह मोमिनीन के दिखाने के लिये न हो बल्कि वोह मुख़्लिस हों, ग़ाइब, ह़ाज़िर हर ह़ाल में मोमिन रहें। ''ग़ैब'' की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि ग़ैब से क़ल्ब या'नी दिल मुराद है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह दिल से ईमान लाएं। (جمل) ''ईमान'' जिन चीज़ों की निस्बत हिदायत व यक़ीन से मा'लूम है कि येह दीने मुहम्मदी से हैं इन सब को मानने और दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करने का नाम ईमाने सहीह़ है, अ़मल ईमान में दाख़िल नहीं इसी लिये ''يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' के बा'द ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ'' फ़रमाया। **6 :** नमाज़ के क़ाइम रखने से येह मुराद है कि इस पर मुदावमत करते हैं और ठीक वक़्तों पर पाबन्दी के साथ इस के अरकान पूरे पूरे अदा करते, और फ़राइज़, सुनन, मुस्तह़ब्बात की ह़िफ़ाज़त करते हैं किसी में ख़लल नहीं आने देते, मुफ़्सिदात व मक्रूहात से इस को बचाते हैं और इस के हुक़ूक़ अच्छी तरह अदा करते हैं। नमाज़ के हुक़ूक़ दो तरह के हैं : एक ज़ाहिरी वोह तो येही हैं जो ज़िक्र हुए, दूसरे बातिनी वोह ख़ुशूअ़ और हुज़ूर या'नी दिल को फ़ारिग़ कर के हमा तन बारगाहे ह़क़ में मुतवज्जेह हो जाना और अ़र्ज़ो नियाज़ व मुनाजात में मह़विय्यत पाना। **7 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है जैसा दूसरी जगह फ़रमाया : ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ'' या मुत्लक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अह्ल का नफ़्क़ा वग़ैरा, ख़्वाह मुस्तह़ब जैसे सदक़ाते नाफ़िला, अम्वात का ईसाले सवाब। **मस्अला :** ग्यारहवीं, फ़ातिह़ा, तीजा, चालीसवां वग़ैरा भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं और क़ुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज्रो सवाब बढ़ाता है। **मस्अला :** ''مِمَّا'' में ''مِنْ'' तब्ईज़िया इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ मम्नूअ़ है या'नी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़्स पर हो, या अपने अह्ल पर, या किसी और पर ए'तिदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए। ''رَزَقْنٰهُمْ'' की तक़्दीम और रिज़्क़ को अपनी तरफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं हमारा अ़ता फ़रमाया हुवा है, इस को अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो, और येह बुख़्ल निहायत क़बीह़ है। **8 :** इस आयत में अह्ले किताब से वोह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब और तमाम पिछली आस्मानी किताबों और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की वह़्यों पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी, और ''مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ'' से तमाम क़ुरआने पाक और पूरी शरीअ़त मुराद है। (جمل) **मस्अला :** जिस तरह क़ुरआने पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़ है इसी तरह कुतुबे साबिक़ा पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से क़ब्ल अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाईं, अलबत्ता उन के जो अह़काम हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ हो गए उन पर अ़मल दुरुस्त नहीं मगर ईमान ज़रूरी है मसलन पिछली शरीअ़तों में बैतुल मक़्दिस क़िब्ला था इस पर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अ़मल या'नी नमाज़ में बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुंह करना जाइज़ नहीं मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** क़ुरआने करीम से पहले जो कुछ **अल्लाह** तआला की तरफ़ से उस के अम्बिया पर नाज़िल हुवा उन सब पर इज्मालन ईमान लाना फ़र्ज़े ऐन है और क़ुरआन शरीफ़ पर तफ़्सीलन फ़र्ज़े किफ़ाया है लिहाज़ा अ़वाम पर इस की तफ़्सीलात के इल्म की तह़सील फ़र्ज़ नहीं जब कि उ़लमा मौजूद हों जिन्हों ने इस की तह़सीले इल्म में पूरी जोहद सर्फ़ की हो।

www.dawateislami.net

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝۴ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ

और आख़िरत पर यक़ीन रखे[9] वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही

هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۵ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ

मुराद को पहुंचने वाले बेशक वोह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है[10] उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ

اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝۶ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ

या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं **अल्लाह** ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी

وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝۷ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ ع

और उन की आंखों पर घटाटोप है[11] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब और कुछ लोग कहते हैं[12]

يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝۸ يُخٰدِعُوْنَ وقف لازم

कि हम **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं फ़रेब दिया चाहते हैं

اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝۹ ؕ

अल्लाह और ईमान वालों को[13] और ह़क़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं

9 : या'नी दारे आख़िरत और जो कुछ उस में है जज़ा व ह़िसाब वग़ैरा सब पर ऐसा यक़ीन व इत़्मीनान रखते हैं कि ज़रा शको शुबा नहीं। इस में अहले किताब वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जिन के ए'तिक़ाद आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ फ़ासिद हैं। **10 :** औलिया के बा'द आ'दा का ज़िक्र फ़रमाना ह़िक्मते हिदायत है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की ह़क़ीक़त और उस के नताइज पर नज़र हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल, अबू लहब वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं इसी लिये इन के ह़क़ में **अल्लाह** तआ़ला की मुख़ालफ़त से डराना न डराना दोनों बराबर हैं इन्हें नफ़्अ़ न होगा मगर हुज़ूर की सअ़्य बेकार नहीं क्यूं कि मन्सबे रिसालते आ़म्मा का फ़र्ज़ रहनुमाई व इक़ामते हुज्जत व तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल है। **मस्अला :** अगर क़ौम पन्द पज़ीर न हो (या'नी नसीह़त क़बूल न करे) तब भी हादी को हिदायत का सवाब मिलेगा। इस आयत में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली और दिलजोई) है कि कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से आप मग़मूम न हों आप की सअ़्ये तब्लीग़ कामिल है इस का अज्र मिलेगा, मह़रूम तो येह बद नसीब हैं जिन्हों ने आप की इत़ाअ़त न की। "कुफ़्र" के मा'ना **अल्लाह** तआ़ला के वुजूद या उस की वह़दानिय्यत, या किसी नबी की नुबुव्वत, या ज़रूरिय्याते दीन से किसी अम्र का इन्कार, या कोई ऐसा फ़े'ल जो इन्दश्शरअ़ इन्कार की दलील हो कुफ़्र है। **11 :** ख़ुलासए मत़लब येह है कि कुफ़्फ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि ह़क़ के देखने, सुनने, समझने से इस त़रह़ मह़रूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोह्र लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़्आ़ल भी तह़्ते क़ुदरते इलाही हैं। **12 :** इस से मा'लूम हुवा कि हिदायत की राहें उन के लिये अव्वल ही से बन्द न थीं कि जाए उ़ज़्र होती बल्कि उन के कुफ़्रो इनाद और सरकशी व बे दीनी और मुख़ालफ़ते ह़क़ व अ़दावते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का येह अन्जाम है जैसे कोई शख़्स त़बीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे क़ातिल खा ले और उस के लिये दवा से इन्तिफ़ाअ़ की सूरत न रहे तो ख़ुद वोही मुस्तह़िक़े मलामत है। **13 : शाने नुज़ूल :** यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुईं जो बात़िन में काफ़िर थे और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते थे, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "مَاهُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ" वोह ईमान वाले नहीं या'नी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का मुद्दई होना, नमाज़ रोज़ा अदा करना मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल में तस्दीक़ न हो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जितने फ़िर्क़े ईमान का दा'वा करते हैं और कुफ़्र का ए'तिक़ाद रखते हैं सब का येही हुक्म है कि काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम हैं, शरअ़ में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं इन का ज़रर खुले काफ़िरों से ज़ियादा है। "مِنَ النَّاسِ" फ़रमाने में लत़ीफ़ रम्ज़ येह है कि येह गुरौह बेहतर सिफ़ात व इन्सानी कमालात से ऐसा आ़री है कि इस का ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वोह भी आदमी हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी को बशर कहने में उस के फ़ज़ाइलो कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है। इस लिये

www.dawateislami.net

فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۙ۬ بِمَا

उन के दिलों में बीमारी है[14] तो अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है बदला

كَانُوۡا يَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ لَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ ۙ قَالُوۡۤا

उन के झूट का[15] और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो[16] तो कहते हैं

اِنَّمَا نَحۡنُ مُصۡلِحُوۡنَ ﴿١١﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ هُمُ الۡمُفۡسِدُوۡنَ وَلٰـكِنۡ لَّا

हम तो संवारने वाले हैं सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें

يَشۡعُرُوۡنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ اٰمِنُوۡا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوۡۤا اَنُؤۡمِنُ

शुऊ़र नहीं और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं[17] तो कहें क्या हम

كَمَاۤ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰـكِنۡ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٣﴾

अह़मक़ों की त़रह़ ईमान ले आएं[18] सुनता है वोही अह़मक़ हैं मगर जानते नहीं[19]

क़ुरआने पाक में जा बजा अम्बियाए किराम के बशर कहने वालों को काफ़िर फ़रमाया गया, और दर ह़क़ीक़त अम्बिया की शान में ऐसा लफ़्ज़ अदब से दूर और कुफ़्फ़ार का दस्तूर है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : "مِنَ النَّاسِ" सामिईन को तअ़ज्जुब दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे फ़रेबी मक्कार और ऐसे अह़मक़ भी आदमियों में हैं। **14 :** अल्लाह तआला इस से पाक है कि उस को कोई धोका दे सके वोह असरार व मख़्फ़ियात का जानने वाला है। मुराद येह है कि मुनाफ़िक़ अपने गुमान में ख़ुदा को फ़रेब देना चाहते हैं, या येह कि ख़ुदा को फ़रेब देना येही है कि रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को धोका देना चाहें क्यूं कि वोह उस के ख़लीफ़ा हैं और अल्लाह तआला ने अपने ह़बीब को असरार का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया है वोह उन मुनाफ़िक़ीन के छुपे कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हैं और मुसल्मान उन के इत्तिलाअ़ देने से बा ख़बर, तो उन बे दीनों का फ़रेब न ख़ुदा पर चले न रसूल पर न मोमिनीन पर बल्कि दर ह़क़ीक़त वोह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक़िय्या बड़ा ऐ़ब है जिस मज़्हब की बिना तक़िय्ये पर हो वोह बात़िल है, तक़िय्ये वाले का हाल क़ाबिले ए'तिमाद नहीं होता, तौबा ना क़ाबिले इत़्मीनान होती है इस लिये उ़लमा ने फ़रमाया : "لَا تُقْبَلُ تَوْبَةُ الزِّنْدِيْقِ" (ज़िन्दीक़ की तौबा क़बूल नहीं होती)। **15 :** बद अ़क़ीदगी को क़ल्बी मरज़ फ़रमाया गया। इस से मा'लूम हुवा कि बद अ़क़ीदगी रूहानी ज़िन्दगी के लिये तबाह कुन है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूट ह़राम है इस पर अ़ज़ाबे अलीम मुरत्तब होता है। **16 : मस्अला :** कुफ़्फ़ार से मेलजोल, उन की ख़ात़िर दीन में मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन्हें बात़िल से न रोकना) और अहले बात़िल के साथ तमल्लुक़ व चापलूसी और उन की ख़ुशी के लिये सुल्हे कुल बन जाना और इज़्हारे ह़क़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक़ और ह़राम है, इसी को मुनाफ़िक़ीन का फ़साद फ़रमाया गया। आज कल बहुत लोगों ने येह शेवा कर लिया है कि जिस जल्से में गए वैसे ही हो गए इस्लाम में इस की मुमानअ़त है, ज़ाहिरो बात़िन का यक्सां न होना बड़ा ऐ़ब है। **17 :** यहां "اَلنَّاسُ" से या सह़ाबए किराम मुराद हैं या मोमिनीन क्यूं कि ख़ुदा शनासी, फ़रमां बरदारी व आक़िबत अन्देशी की बदौलत वोही इन्सान कहलाने के मुस्तह़िक़ हैं। **मस्अला :** "اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ" (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं) से साबित हुवा कि सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ मह़मूद व मत़लूब है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मज़्हबे अहले सुन्नत ह़क़ है क्यूं कि इस में सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ है। **मस्अला :** बाक़ी तमाम फ़िर्क़े सालिह़ीन से मुन्ह़रिफ़ हैं लिहाज़ा गुमराह हैं। **मस्अला :** बा'ज़ उ़लमा ने इस आयत को "ज़िन्दीक़" की तौबा मक़्बूल होने की दलील क़रार दिया है। (بیضاوی) "ज़िन्दीक़" वोह है जो नुबुव्वत का मुक़िर (इक़रार करता) हो, शआइरे इस्लाम का इज़्हार करे और बात़िन में ऐसे अ़क़ीदे रखे जो बिल इत्तिफ़ाक़ कुफ़्र हों येह भी मुनाफ़िक़ों में दाख़िल है। **18 :** इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन को बुरा कहना अहले बात़िल का क़दीम त़रीक़ा है, आज कल के बात़िल फ़िर्क़े भी पिछले बुज़ुर्गों को बुरा कहते हैं रवाफ़िज़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत से सह़ाबा को, ख़वारिज ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के रुफ़क़ा को, ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्मए मुज्तहिदीन बिल ख़ुसूस इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को, वहाबिया ब कसरत औलिया व मक़्बूलाने बारगाह को, मिरज़ाई अम्बियाए साबिक़ीन तक को, क़ुरआनी (चकड़ाली) सह़ाबा व मुह़द्दिसीन को, नेचरी तमाम अकाबिरे दीन को बुरा कहते और ज़बाने त़ा'न दराज़ करते हैं, इस आयत से मा'लूम हुवा कि येह सब गुमराही में हैं। इस में दीनदार आ़लिमों के लिये तसल्ली है कि वोह गुमराहों की बद ज़बानियों से बहुत रन्जीदा न हों समझ लें कि येह अहले बात़िल का क़दीम दस्तूर है। (مدارک) **19 :** मुनाफ़िक़ीन की येह बद ज़बानी मुसल्मानों के सामने न थी इन से तो वोह येही कहते थे कि हम ब इख़्लास मोमिन हैं जैसा कि अगली आयत में है

www.dawateislami.net

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों[20]

قَالُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ

तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं हम तो यूंही हंसी करते हैं[21] अल्लाह उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है[22] (जैसा उस

وَ يَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

की शान के लाइक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें येह वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही

بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَ مَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۶﴾ مَثَلُهُمْ

ख़रीदी[23] तो उन का सौदा कुछ नफ़्अ़ न लाया और वोह सौदे की राह जानते ही न थे[24] उन की कहावत

كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّاۤ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ

उस की तरह है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा अल्लाह उन का

اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا येह तबर्रा बाज़ियां अपनी ख़ास मजलिसों में करते थे अल्लाह तआ़ला ने उन का पर्दा फ़ाश कर दिया। (خازن) इसी त़रह आज कल के गुमराह फ़िर्क़े मुसल्मानों से अपने ख़यालाते फ़ासिदा को छुपाते हैं मगर अल्लाह तआ़ला उन की किताबों और तह़रीरों से उन के राज़ फ़ाश कर देता है। इस आयत से मुसल्मानों को ख़बरदार किया जाता है कि बे दीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहें धोका न खाएं। **20 :** यहां ''शयात़ीन'' से कुफ़्फ़ार के वोह सरदार मुराद हैं जो इग़्वा (वर्ग़लाने) में मसरूफ़ रहते हैं। (خازن وبیضاوی) येह मुनाफ़िक़ जब उन से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसल्मानों से मिलना मह़ज़ बराहे फ़रेब व इस्तिहज़ा, इस लिये है कि उन के राज़ मा'लूम हों और उन में फ़साद अंगेज़ी के मवाक़ेअ़ मिलें। (خازن) **21 :** या'नी इज़्हारे ईमान तमस्ख़ुर के त़ौर पर किया। येह इस्लाम का इन्कार हुवा। **मस्अला :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام और दीन के साथ इस्तिहज़ा व तमस्ख़ुर कुफ़्र है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई एक रोज़ उन्हों ने सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त को आते देखा तो इब्ने उबय ने अपने यारों से कहा देखो तो मैं इन्हें कैसा बनाता हूं ? जब वोह ह़ज़रात क़रीब पहुंचे तो इब्ने उबय ने पहले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर का दस्ते मुबारक अपने हाथ में ले कर आप की ता'रीफ़ की फिर इसी त़रह ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अ़ली की ता'रीफ़ की (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ इब्ने उबय ख़ुदा से डर निफ़ाक़ से बाज़ आ क्यूं कि मुनाफ़िक़ीन बद तरीन ख़ल्क़ हैं, इस पर वोह कहने लगा कि येह बातें निफ़ाक़ से नहीं की गईं बख़ुदा हम आप की त़रह मोमिने सादिक़ हैं, जब येह ह़ज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने यारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से मिलते वक़्त इज़्हारे ईमान व इख़्लास करते हैं और उन से अ़लाह़दा हो कर अपनी ख़ास मजलिसों में उन की हंसी उड़ाते और इस्तिहज़ा करते हैं। (اخرجہ الثعلبی والواحدی و ضعفہ ابن حجر والسیوطی فی لباب النقول) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम व पेशवायाने दीन का तमस्ख़ुर उड़ाना कुफ़्र है। **22 :** अल्लाह तआ़ला इस्तिहज़ा और तमाम नक़ाइस व उ़यूब से मुनज़्ज़ह व पाक है, यहां ''जज़ाए इस्तिहज़ा'' को इस्तिहज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिल नशीन हो जाए कि येह सज़ा उस ना कर्दनी फ़े'ल की है। ऐसे मौक़अ़ पर जज़ा को उसी फ़े'ल से ता'बीर करना आईने फ़साह़त है जैसे ''جَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ'' में। कमाले ह़ुस्ने बयान येह है कि इस जुम्ले को जुम्लए साबिक़ा पर मा'तूफ़ न फ़रमाया क्यूं कि वहां इस्तिहज़ा ह़क़ीक़ी मा'नी में था। **23 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना या'नी बजाए ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करना निहायत ख़सारे और टोटे की बात है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत या उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए, या यहूद के ह़क़ में जो पहले से तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे मगर जब ह़ुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो मुन्किर हो गए, या तमाम कुफ़्फ़ार के ह़क़ में कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़ित़्रते सलीमा अ़त़ा फ़रमाई, ह़क़ के दलाइल वाज़ेह़ किये, हिदायत की राहें खोलीं लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की। **मस्अला :** इस आयत से बैए़ तआ़ती का जवाज़ साबित हुवा या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त के अल्फ़ाज़ कहे बिग़ैर मह़ज़ रिज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जाइज़ है। **24 :** क्यूं कि अगर तिजारत का त़रीक़ा जानते तो अस्ल पूंजी (हिदायत) न खो बैठते।

www.dawateislami.net

بِنُوۡرِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِىۡ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبۡصِرُوۡنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡىٌ فَهُمۡ

नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता[25] बहरे गूंगे अन्धे तो वोह

لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿١٨﴾ اَوۡ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيۡهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعۡدٌ وَّبَرۡقٌ

फिर आने वाले नहीं या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक[26]

يَجۡعَلُوۡنَ اَصَابِعَهُمۡ فِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الۡمَوۡتِ ‌ؕ وَاللّٰهُ

अपने कानों में उंगलियां ठोंस रहे हैं कड़क के सबब मौत के डर से[27] और **अल्लाह**

مُحِيۡطٌۢ بِالۡكٰفِرِيۡنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الۡبَرۡقُ يَخۡطَفُ اَبۡصَارَهُمۡ‌ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمۡ

काफ़िरों को घेरे हुए है[28] बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक ले जाएगी[29] जब कुछ चमक हुई

مَّشَوۡا فِيۡهِ ۙ وَاِذَآ اَظۡلَمَ عَلَيۡهِمۡ قَامُوۡا ‌ؕ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

उस में चलने लगे[30] और जब अंधेरा हुवा खड़े रह गए और अगर **अल्लाह** चाहता तो उन के

25 : येह उन की मिसाल है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ हिदायत दी या इस पर कुदरत बख़्शी फिर उन्हों ने इस को ज़ाएअ़ कर दिया और अबदी दौलत को ह़ासिल न किया, उन का मआल (अन्जाम) ह़स्रतो अफ़्सोस, हैरतो ख़ौफ़ है। इस में वोह मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्हों ने इज़्हारे ईमान किया और दिल में कुफ़्र रख कर इक़रार की रोशनी को ज़ाएअ़ कर दिया, और वोह भी जो मोमिन होने के बा'द मुरतद हो गए, और वोह भी जिन्हें फ़ित्रते सलीमा अ़ता हुई और दलाइल की रोशनी ने ह़क़ को वाज़ेह़ किया मगर उन्हों ने इस से फ़ाएदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब ह़क़ सुनने मानने कहने, राहे ह़क़ देखने से मह़रूम हुए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं। **26 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की येह दूसरी तम्सील है कि जैसे बारिश ज़मीन की ह़यात का सबब होती है और उस के साथ ख़ौफ़नाक तारीकियां और मुहीब गरज और चमक होती है इसी त़रह़ "क़ुरआन व इस्लाम" क़ुलूब की ह़यात का सबब हैं, और ज़िक्रे "कुफ़्र व शिर्क व निफ़ाक़" ज़ुल्मत के मुशाबेह जैसे तारीकी रह रव (राह चलने वाले) को मन्ज़िल तक पहुंचने से मानेअ़ होती है ऐसे ही कुफ़्र व निफ़ाक़ राहयाबी (राह पाने) से मानेअ़ हैं, और "वईदात" गरज के, और "हुजजे बय्यिना" चमक के मुशाबेह हैं। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ों में से दो आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास से मुश्रिकीन की त़रफ़ भागे राह में येही बारिश आई जिस का आयत में ज़िक्र है उस में शिद्दत की गरज, कड़क और चमक थी, जब गरज होती तो कानों में उंगलियां ठोंस लेते कि कहीं येह कानों को फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती अन्धे रह जाते, आपस में कहने लगे : ख़ुदा ख़ैर से सुब्ह़ करे तो हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपने हाथ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में दें, चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम रहे। उन के ह़ाल को **अल्लाह** तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन के लिये मसल (कहावत) बनाया जो मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो कानों में उंगलियां ठोंस लेते कि कहीं हुज़ूर का कलाम उन में असर न कर जाए जिस से मर ही जाएं, और जब उन के माल व औलाद ज़ियादा होते और फ़ुतूह़ व ग़नीमत मिलती तो बिजली की चमक वालों की त़रह़ चलते और कहते कि अब तो दीने मुह़म्मदी सच्चा है, और जब माल व औलाद हलाक होते और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में ठिटक रहने वालों की त़रह़ कहते कि येह मुसीबतें इसी दीन की वज्ह से हैं और इस्लाम से पलट जाते। (لباب النقول للسیوطی) **27 :** जैसे अंधेरी रात में काली घटा छाई हो और बिजली की गरज व चमक जंगल में मुसाफ़िर को ह़ैरान करती हो, और वोह कड़क की वह़शत नाक आवाज़ से ब अन्देशए हलाक कानों में उंगलियां ठोंसता हो। ऐसे ही कुफ़्फ़ार क़ुरआने पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें येह अन्देशा होता है कि कहीं इस के दिल नशीन मज़ामीन इस्लाम व ईमान की त़रफ़ माइल कर के बाप दादा का कुफ़्री दीन तर्क न करा दें जो उन के नज़्दीक मौत के बराबर है। **28 :** लिहाज़ा येह गुरेज़ उन्हें कुछ फ़ाएदा नहीं दे सकती क्यूं कि वोह कानों में उंगलियां ठोंस कर क़ह्रे इलाही से ख़लास (छुटकारा) नहीं पा सकते। **29 :** जैसे बिजली की चमक मा'लूम होता है कि बीनाई को ज़ाइल कर देगी ऐसे ही दलाइले बाहिरा के अन्वार उन की बसर व बसीरत को ख़ीरा (तारीक) करते हैं। **30 :** जिस त़रह़ अंधेरी रात और अब्र व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतह़य्यिर होता है जब बिजली चमक्ती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है खड़ा रह जाता है इसी त़रह़ इस्लाम के ग़लबे और मो'जिज़ात की रोशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की त़रफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती

www.dawateislami.net

بِسَمۡعِهِمۡ وَاَبۡصَارِهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۲۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا

कान और आंखें ले जाता[31] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है[32] ऐ

النَّاسُ اعۡبُدُوۡا رَبَّكُمُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ

लोगो[33] अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए

تَتَّقُوۡنَ ﴿۲۱﴾ لا الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ص

कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले[34] जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को इमारत बनाया

وَّاَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخۡرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزۡقًا لَّكُمۡ ج فَلَا

और आस्मान से पानी उतारा[35] तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो

تَجۡعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا وَّاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۲﴾ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا

अल्लाह के लिये जान बूझ कर बराबर वाले न ठहराओ[36] और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो

نَزَّلۡنَا عَلٰى عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ ص وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَكُمۡ مِّنۡ

हम ने अपने इन ख़ास बन्दे[37] पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ[38] और अल्लाह के सिवा अपने सब

है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं, इसी मज़्मून को दूसरी आयत में इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : اِذَا دُعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ۝ وَاِنۡ يَّكُنۡ لَّهُمُ الۡحَقُّ يَاۡتُوۡۤا اِلَيۡهِ مُذۡعِنِيۡنَ ۝ (خازن،صاوی وغیرہ) **31 :** या'नी अगर्चे मुनाफ़िक़ीन का तर्ज़े अ़मल इस का मुक़्तज़ी था मगर अल्लाह तआ़ला ने उन के सम्अ़ व बसर को बात़िल न किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अस्बाब की तासीर मशिय्यते इलाहिय्यह के साथ मशरूत़ है, बिग़ैर मशिय्यत तन्हा अस्बाब कुछ नहीं कर सकते। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मशिय्यत अस्बाब की मोह़ताज नहीं वोह बे सबब जो चाहे कर सकता है। **32 :** "शै" उसी को कहते हैं जिसे अल्लाह चाहे और जो तह़्ते मशिय्यत आ सके, तमाम मुम्किनात "शै" में दाख़िल हैं इस लिये वोह तह़्ते क़ुदरत हैं, और जो मुम्किन नहीं वाजिब या मम्तनेअ़ है उस से क़ुदरत व इरादा मुतअ़ल्लिक़ नहीं होता जैसे अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिये मक़्दूर नहीं। **मस्अला :** बारी तआ़ला के लिये झूट और तमाम उ़यूब मुह़ाल हैं इसी लिये क़ुदरत को इन से कुछ वासित़ा नहीं। **33 :** अव्वले सूरत में कुछ बताया गया कि येह किताब मुत्तक़ीन की हिदायत के लिये नाज़िल हुई, फिर मुत्तक़ीन के औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया, इस के बा'द इस से मुन्ह़रिफ़ होने वाले फ़िर्क़ों का और उन के अह़्वाल का ज़िक्र फ़रमाया कि सआ़दत मन्द इन्सान हिदायत व तक़्वा की त़रफ़ राग़िब हो और ना फ़रमानी व बग़ावत से बचे, अब त़रीक़े तह़सीले तक़्वा ता'लीम फ़रमाया जाता है। "يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ" (ऐ लोगो) का ख़ित़ाब अक्सर अहले मक्का को और "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا" (ऐ ईमान वालो) का अहले मदीना को होता है मगर यहां येह ख़ित़ाब मोमिन, काफ़िर सब को आ़म है, इस में इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी तक़्वा ह़ासिल करे और मसरूफ़े इ़बादत रहे। "इ़बादत" वोह ग़ायते ता'ज़ीम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दिय्यत और मा'बूद की उलूहिय्यत के ए'तिक़ाद व ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए, यहां इ़बादत आ़म है, अपने तमाम अन्वाओ़ अक़्साम व उसूलो फ़ुरूअ़ को शामिल है। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार इ़बादत के मामूर हैं जिस त़रह़ बे वुज़ू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने का मानेअ़ नहीं इसी त़रह़ काफ़िर होना वुजूबे इ़बादत को मन्अ़ नहीं करता, और जैसे बे वुज़ू शख़्स पर नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत रफ़्ए ह़दस लाज़िम करती है ऐसे ही काफ़िर पर वुजूबे इ़बादत से तर्के कुफ़्र लाज़िम आता है। **34 :** इस से मा'लूम हुवा कि इ़बादत का फ़ाएदा आ़बिद ही को मिलता है, अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस को इ़बादत या और किसी चीज़ से नफ़्अ़ ह़ासिल हो। **35 :** पहली आयत में ने'मते ईजाद का बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे आबा को मा'दूम से मौजूद किया और दूसरी आयत में अस्बाबे मईशत व आसाइश व आबो ग़िज़ा का बयान फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि वोही वलिय्ये ने'मत है तो ग़ैर की परस्तिश मह़्ज़ बात़िल है। **36 :** तौह़ीदे इलाही के बा'द हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के किताबे इलाही व मो'जिज़ (आ़जिज़ कर देने वाली किताब) होने की वोह क़ाहिर दलील बयान फ़रमाई जाती है जो त़ालिबे सादिक़ को इत़्मीनान बख़्शे और मुन्किरों को आ़जिज़ कर दे। **37 :** बन्दए ख़ास से हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم मुराद हैं। **38 :** या'नी ऐसी सूरत बना कर

www.dawateislami.net

دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۳﴾ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا

हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो

النَّارَ الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲۴﴾ وَبَشِّرِ

उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं[39] तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये[40] और खुश ख़बरी दे

الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे

الۡاَنۡهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوۡا مِنۡهَا مِنۡ ثَمَرَةٍ رِّزۡقًا ۙ قَالُوۡا هٰذَا الَّذِىۡ

नहरें रवां[41] जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा सूरत देख कर कहेंगे येह तो वोही

رُزِقۡنَا مِنۡ قَبۡلُ ۙ وَاُتُوۡا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمۡ فِيۡهَاۤ اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ

रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था[42] और वोह सूरत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उन के लिये उन बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं[43]

وَّهُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسۡتَحۡىٖۤ اَنۡ يَّضۡرِبَ مَثَلًا مَّا

और वोह उन में हमेशा रहेंगे[44] बेशक **अल्लाह** इस से ह़या नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए

بَعُوۡضَةً فَمَا فَوۡقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهُ الۡحَقُّ مِنۡ

मच्छर हो या उस से बढ़ कर[45] तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़

رَّبِّهِمۡ ۚ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَيَقُوۡلُوۡنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ

وقف لازم

से ह़क़ है[46] रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में **अल्लाह** का क्या मक़्सूद है

लाओ जो फ़साह़तो बलाग़त और हुस्ने नज़्म व तरतीब और ग़ैब की ख़बरें देने में कु़रआने पाक की मिस्ल हो। **39 :** पथ्थर से वोह बुत मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार पूजते हैं और उन की मह़ब्बत में कु़रआने पाक और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इनादन इन्कार करते हैं। **40 : मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है। **मस्अला :** येह भी इशारा है कि मोमिनीन के लिये बि करमिही तआ़ला ख़ुलूदे नार या'नी हमेशा जहन्नम में रहना नहीं। **41 :** सुन्नते इलाही है कि किताब में तरहीब के साथ तरग़ीब ज़िक्र फ़रमाता है इसी लिये कुफ़्फ़ार और उन के आ'माल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के बा'द मोमिनीन और उन के आ'माल का ज़िक्र फ़रमाया और उन्हें जन्नत की बिशारत दी। "صَالِحَاتٌ" या'नी नेकियां वोह अ़मल हैं जो शरअ़न अच्छे हों, इन में फ़राइज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं। (جلالين) **मस्अला :** अ़मले सालेह़ का ईमान पर अ़त्फ़ दलील है इस की, कि अ़मल जुज़्वे ईमान नहीं। **मस्अला :** येह बिशारत मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिला क़ैद है और गुनहगारों को जो बिशारत दी गई है वोह मुक़य्यद ब मशिय्यते इलाही है कि चाहे अज़ राहे करम मुआ़फ़ फ़रमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा दे कर जन्नत अ़ता करे। (مدارک) **42 :** जन्नत के फल बाहम मुशाबेह होंगे और ज़ाएक़े उन के जुदा जुदा, इस लिये जन्नती कहेंगे कि येही फल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर खाने से नई लज़्ज़त पाएंगे तो उन का लुत़्फ़ बहुत ज़ियादा हो जाएगा। **43 :** जन्नती बीबियां, ख़्वाह हूरें हों या और, सब ज़नाने अ़वारिज़ और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबर्रा होंगी, न जिस्म पर मैल होगा न बौलो बराज़, इस के साथ ही वोह बद मिज़ाजी व बद ख़ुल्क़ी से भी पाक होंगी। (مدارک وخازن) **44 :** या'नी अहले जन्नत न कभी फ़ना होंगे न जन्नत से निकाले जाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत व अहले जन्नत के लिये फ़ना नहीं। **45 : शाने नुज़ूल :** जब **अल्लाह** तआ़ला ने आयए "مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ" और आयए "اَوْ كَصَيِّبٍ" में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाईं तो मुनाफ़िक़ों ने येह ए'तिराज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला इस से बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए, इस के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **46 :** चूंकि मिसालों का बयान

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيۡرًا ۙ وَّيَهۡدِىۡ بِهٖ كَثِيۡرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الۡفٰسِقِيۡنَ ۙ ﴿۲۶﴾

अल्लाह बहुतेरों को इस से गुमराह करता है[47] और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं[48]

الَّذِيۡنَ يَنۡقُضُوۡنَ عَهۡدَ اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مِيۡثَاقِهٖ ۖ وَيَقۡطَعُوۡنَ مَآ اَمَرَ

वोह जो **अल्लाह** के अ़हद को तोड़ देते हैं[49] पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के

اللّٰهُ بِهٖۤ اَنۡ يُّوۡصَلَ وَيُفۡسِدُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ؕ اُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۲۷﴾

जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[50(الف)] वोही नुक़्सान में हैं

كَيۡفَ تَكۡفُرُوۡنَ بِاللّٰهِ وَكُنۡتُمۡ اَمۡوَاتًا فَاَحۡيَاكُمۡ ۚ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ

भला तुम क्यूंकर ख़ुदा के मुन्किर होगे हालां कि तुम मुर्दा थे उस ने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर

يُحۡيِيۡكُمۡ ثُمَّ اِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۲۸﴾ هُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ لَـكُمۡ مَّا فِى الۡاَرۡضِ

तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की त़रफ़ पलट कर जाओगे[50(ب)] वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन

मुक़्तज़ाए हिक्मत और मज़्मून को दिल नशीन करने वाला होता है और फ़ुसहाए अ़रब का दस्तूर है इस लिये इस पर ए'तिराज़ ग़लत़ व बे जा है और बयाने अम्सिला ह़क़ है। **47 :** "يُضِلُّ بِهٖ" कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का जवाब है कि **अल्लाह** तआ़ला का इस मसल से क्या मक़्सूद है और "اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" और "اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا" जो दो जुम्ले ऊपर इर्शाद हुए उन की तफ़्सीर है कि इस मसल से बहुतों को गुमराह करता है जिन की अ़क़्लों पर जहल ने ग़लबा किया है और जिन की आ़दत मुकाबरा व इनाद (तकब्बुर व सरकशी) है और जो अम्रे ह़क़ और खुली हिक्मत के इन्कार व मुख़ालफ़त के ख़ूगर हैं, और बा वुजूदे कि येह मसल निहायत ही बर मह़ल है फिर भी इन्कार करते हैं। और इस से **अल्लाह** तआ़ला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर व तह़क़ीक़ के आ़दी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते वोह जानते हैं कि हिक्मत येही है कि अ़ज़ीमुल मर्तबा चीज़ की तम्सील किसी क़द्र वाली चीज़ से और ह़क़ीर चीज़ की अदना शै से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में ह़क़ की नूर से और बात़िल की ज़ुल्मत से तम्सील दी गई। **48 :** शरअ़ में फ़ासिक़ उस ना फ़रमान को कहते हैं जो कबीरा का मुरतकिब हो, **फ़िस्क़ के तीन दरजे हैं :** एक "**तग़ाबी**" वोह येह कि आदमी इत्तिफ़ाक़िया किसी कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुवा और उस को बुरा ही जानता रहा। दूसरा "**इन्हिमाक**" कि कबीरा का आ़दी हो गया और उस से बचने की परवाह न रही। तीसरा "**जुहूद**" कि ह़राम को अच्छा जान कर इरतिकाब करे, इस दरजे वाला ईमान से मह़रूम हो जाता है, पहले दो दरजों में जब तक अक्बरे कबाइर (कुफ़्र व शिर्क) का इरतिकाब न करे उस पर मोमिन का इत़्लाक़ होता है। यहां "फ़ासिक़ीन" से वोही ना फ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो गए, क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार पर भी फ़ासिक़ का इत़्लाक़ हुवा है : "اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये, बा'ज़ ने मुनाफ़िक़, बा'ज़ ने यहूद। **49 :** इस से वोह अ़हद मुराद है जो **अल्लाह** तआ़ला ने कुतुबे साबिक़ा में ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि अ़हद तीन हैं : **पहला अ़हद** वोह जो **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उस की रुबूबिय्यत का इक़रार करें, इस का बयान इस आयत में है "وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ ...الاية"। **दूसरा अ़हद** अम्बिया के साथ मख़्सूस है कि रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाएं और दीन की इक़ामत करें, इस का बयान आयए "وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ" में है। **तीसरा अ़हद** उ़लमा के साथ ख़ास है कि ह़क़ को न छुपाएं, इस का बयान "وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ" में है। **50 (الف) :** रिश्ता व क़राबत के तअ़ल्लुक़ात, मुसल्मानों की दोस्ती व मह़ब्बत, तमाम अम्बिया का मानना, कुतुबे इलाही की तस्दीक़, ह़क़ पर जम्अ़ होना येह वोह चीज़ें हैं जिन के मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया इन में क़त़्अ़ करना, बा'ज़ को बा'ज़ से नाह़क़ जुदा करना, तफ़र्रुक़ों की बिना डालना मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **50 (ب) :** दलाइले तौह़ीदो नुबुव्वत और जज़ाए कुफ़्रो ईमान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी आ़म व ख़ास ने'मतों का और आसारे क़ुदरत व अ़जाइबो हिक्मत का ज़िक्र फ़रमाया और क़बाह़ते कुफ़्र दिल नशीं करने के लिये कुफ़्फ़ार को ख़ित़ाब फ़रमाया कि तुम किस त़रह ख़ुदा के मुन्किर होते हो बा वुजूदे कि तुम्हारा अपना ह़ाल उस पर ईमान लाने का मुक़्तज़ी है कि तुम मुर्दा थे। मुर्दा से जिस्मे बेजान मुराद है, हमारे उ़र्फ़ में भी बोलते हैं ज़मीन मुर्दा हो गई, अ़रबी में भी मौत इस मा'नी में आई, ख़ुद क़ुरआने पाक में इर्शाद हुवा : "يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا"

www.dawateislami.net

جَمِیْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَ هُوَ بِكُلِّ

में है[51] फिर आस्मान की त़रफ़ इस्तवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह सब

ع ٤ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۲۹﴾ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ

कुछ जानता है[52] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने

خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ

वाला हूं[53] बोले क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे[54]

وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا

और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मा'लूम है जो तुम

تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓىٕكَةِ ۙ

नहीं जानते[55] और **अल्लाह** तआ़ला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए[56] फिर सब अश्या मलाएका पर पेश कर के

तो मत़लब येह है कि तुम बेजान जिस्म थे उ़न्सुर की सूरत में, फिर ग़िज़ा की शक्ल में, फिर अख़्लात़ की शान में, फिर नुत़्फ़े की ह़ालत में, उस ने तुम को जान दी, ज़िन्दा फ़रमाया, फिर उ़म्र की मीआ़द पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा इस से या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सुवाल के लिये होगी या ह़श्र की, फिर तुम ह़िसाब व जज़ा के लिये उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे, अपने इस ह़ाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अ़जीब है। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि كَیْفَ تَكْفُرُوْنَ का ख़ित़ाब मोमिनीन से है और मत़लब येह है कि तुम किस त़रह़ काफ़िर हो सकते हो दरआं ह़ाले कि तुम जह्ल की मौत से मुर्दा थे **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें इल्म व ईमान की ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाई, इस के बा'द तुम्हारे लिये वोही मौत है जो उ़म्र गुज़रने के बा'द सब को आया करती है, इस के बा'द वोह तुम्हें ह़क़ीक़ी दाइमी ह़यात अ़त़ा फ़रमाएगा फिर तुम उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे और वोह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी दिल पर उस का ख़त़रा गुज़रा। **51 :** या'नी कानें, सब्ज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में हैं सब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे दीनी व दुन्यवी नफ़्अ़ के लिये बनाए, दीनी नफ़्अ़ इस त़रह़ कि ज़मीन के अ़जाइबात देख कर तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मतो क़ुदरत की मा'रिफ़त हो, और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ येह कि खाओ पियो आराम करो अपने कामों में लाओ, तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस त़रह़ कुफ़्र करोगे। **मस्अला :** कर्ख़ी व अबू बक्र राज़ी वग़ैरा ने "خَلَقَ لَكُمْ" को क़ाबिले इन्तिफ़ाअ़ अश्या के मुबाहुल अस्ल होने की दलील क़रार दिया है। **52 :** या'नी येह ख़िल्क़त व ईजाद **अल्लाह** तआ़ला के आ़लिमे जमीअ़ अश्या होने की दलील है क्यूं कि ऐसी पुर ह़िक्मत मख़्लूक़ का पैदा करना बिग़ैर इल्मे मुह़ीत़ के मुम्किन व मुतसव्वर नहीं। मरने के बा'द ज़िन्दा होना काफ़िर मुह़ाल जानते थे इन आयतों में उन के बुत़लान पर क़वी बुरहान क़ाइम फ़रमा दी कि जब **अल्लाह** तआ़ला क़ादिर है, अ़लीम है और अबदान के माद्दे जम्अ़ व ह़यात की सलाह़िय्यत भी रखते हैं तो मौत के बा'द ह़यात कैसे मुह़ाल हो सकती है? पैदाइशे आस्मानो ज़मीन के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान में फ़िरिश्तों को और ज़मीन में जिन्नात को सुकूनत दी, जिन्नात ने फ़साद अंगेज़ी की तो मलाएका की एक जमाअ़त भेजी जिस ने इन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया। **53 :** "ख़लीफ़ा" अह़काम व अवामिर के इजरा व दीगर तसर्रुफ़ात में अस्ल का नाइब होता है, यहां ख़लीफ़ा से ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام मुराद हैं अगर्चे और तमाम अम्बिया भी **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ा हैं, ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام के ह़क़ में फ़रमाया : "یٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِیْفَةً فِی الْاَرْضِ"। फ़िरिश्तों को ख़िलाफ़ते आदम की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन के ख़लीफ़ा बनाए जाने की ह़िक्मत दरयाफ़्त कर के मा'लूम कर लें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर हो कि इन को पैदाइश से क़ब्ल ही ख़लीफ़ा का लक़ब अ़त़ा हुवा और आस्मान वालों को इन की पैदाइश की बिशारत दी गई। **मस्अला :** इस में बन्दों को ता'लीम है कि वोह काम से पहले मश्वरा किया करें और **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस को मश्वरे की ह़ाजत हो। **54 :** मलाएका का मक़्सद ए'तिराज़ या ह़ज़रते आदम पर त़ा'न नहीं बल्कि ह़िक्मते ख़िलाफ़त दरयाफ़्त करना है और इन्सानों की त़रफ़ फ़साद अंगेज़ी की निस्बत करना इस का इल्म या उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से दिया गया हो, या लौह़े मह़फ़ूज़ से ह़ासिल हुवा हो, और या ख़ुद उन्हों ने जिन्नात पर क़ियास किया हो। **55 :** या'नी मेरी ह़िक्मतें तुम पर ज़ाहिर नहीं। बात येह है कि इन्सानों में अम्बिया भी होंगे, औलिया भी, उ़लमा भी और वोह इल्मी व अ़मली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ़ होंगे। **56 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام पर तमाम अश्या व जुम्ला मुसम्मयात पेश फ़रमा

www.dawateislami.net

فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا

फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ[57] बोले

سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَاؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾

पाकी है तुझे हमें कुछ इ़ल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है[58]

قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْۙ قَالَ

फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये[59] फ़रमाया

اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۙ وَ اَعْلَمُ مَا

मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ

تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो[60] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ٘ۗ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ وَ قُلْنَا

तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया[61] और हम ने फ़रमाया

कर आप को उन के अस्मा व सिफ़ात व अफ़्आ़ल व ख़वास व उसूले उ़लूम व सनाआ़त सब का इ़ल्म ब त़रीक़े इल्हाम अ़त़ा फ़रमाया। **57 :** या'नी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़्लूक़ तुम से ज़ियादा आ़लिम पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़त के तुम ही मुस्तह़िक़ हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्यूं कि ख़लीफ़ा का काम तसर्रुफ़ व तदबीर और अ़दलो इन्साफ़ है और येह बिग़ैर इस के मुम्किन नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों का इ़ल्म हो जिन पर उस को मुतसर्रिफ़ फ़रमाया गया और जिन का उस को फ़ैसला करना है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मलाएका पर अफ़्ज़ल होने का सबब इ़ल्म ज़ाहिर फ़रमाया, इस से साबित हुवा कि इ़ल्मे अस्मा ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इ़बादत से अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मलाएका से अफ़्ज़ल हैं। **58 :** इस में मलाएका की त़रफ़ से अपने इ़ज्ज़ व क़ुसूर का ए'तिराफ़ इस अम्र का इज़्हार है कि उन का सुवाल इस्तिफ़्सारन था न कि ए'तिराज़न। और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और इस की पैदाइश की ह़िक्मत मा'लूम हो गई जिस को वोह पहले न जानते थे। **59 :** या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने हर चीज़ का नाम और उस की पैदाइश की ह़िक्मत बता दी। **60 :** मलाएका ने जो बात ज़ाहिर की थी वोह येह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी व ख़ूनरेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वोह येह थी कि मुस्तह़िक़्क़े ख़िलाफ़त वोह ख़ुद हैं और **अल्लाह** तआ़ला उन से अफ़्ज़लो आ'लम कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा। **मस्अला :** इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इ़ल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ता'लीम की निस्बत करना सह़ीह़ है अगर्चे उस को मुअ़ल्लिम न कहा जाएगा क्यूं कि मुअ़ल्लिम पेशावर ता'लीम देने वाले को कहते हैं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि जुम्ला लुग़ात और कुल ज़बानें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हैं। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मलाएका के उ़लूम व कमालात में ज़ियादती होती है। **61 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम मौजूदात का नमूना और आ़लमे रूह़ानी व जिस्मानी का मज्मूआ़ बनाया और मलाएका के लिये ह़ुसूले कमालात का वसीला किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते आदम को सज्दा करें क्यूं कि इस में शुक्र गुज़ारी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की फ़ज़ीलत के ए'तिराफ़ और अपने मक़ूले की मा'ज़िरत की शान पाई जाती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा करने से पहले ही मलाएका को सज्दे का हुक्म दिया था, उन की सनद येह आयत है : ''فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِىْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ط'' । (بیضاوی) सज्दे का हुक्म तमाम मलाएका को दिया गया था येही असह़्ह़ है। (خازن) **मस्अला :** सज्दा दो त़रह़ का होता है एक सज्दए इ़बादत जो ब क़स्दे परस्तिश किया जाता है, दूसरा सज्दए तह़िय्यत जिस से मस्जूद की ता'ज़ीम मन्ज़ूर होती है न कि इ़बादत। **मस्अला :** सज्दए इ़बादत **अल्लाह** तआ़ला के लिये ख़ास है किसी और के लिये नहीं हो सकता, न किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ हुवा। यहां जो मुफ़स्सिरीन सज्दए इ़बादत मुराद लेते हैं वोह फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये था और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام क़िब्ला बनाए गए थे तो वोह मस्जूद इलैह थे न कि मस्जूद लहू,

www.dawateislami.net

يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪

ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝۳۵ فَاَزَلَّهُمَا

मगर उस पेड़ के पास न जाना[62] कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे[63] तो शैतान ने

الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

जन्नत से उन्हें लग्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया[64] और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो[65] आपस में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ۝۳۶ فَتَلَقّٰۤی

तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है[66] फिर सीख लिये

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝۳۷ قُلْنَا

आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की[67] बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान हम ने फ़रमाया

मगर येह क़ौल ज़ईफ़ है क्यूं कि इस सज्दे से हज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़ज़्लो शरफ़ ज़ाहिर फ़रमाना मक़्सूद था और मस्जूद इलैह का साजिद से अफ़्ज़ल होना कुछ ज़रूर नहीं। जैसा कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़िब्ला व मस्जूद इलैह है बा वुजूदे कि हुज़ूर उस से अफ़्ज़ल हैं। दूसरा क़ौल येह है कि यहां सज्दए इबादत न था सज्दए तहिय्यत था और ख़ास हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रख कर था न कि सिर्फ़ झुकना, येही क़ौल सहीह है और इसी पर जम्हूर हैं। (مدارک) **मस्अला :** सज्दए तहिय्यत पहली शरीअ़तों में जाइज़ था, हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ किया गया अब किसी के लिये जाइज़ नहीं है क्यूं कि जब हज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सज्दा करने का इरादा किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ को न चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को सज्दा करे। (مدارک) मलाएका में सब से पहले सज्दा करने वाले हज़रते जिब्रील हैं फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इज़्राईल फिर और मलाइकए मुक़र्रबीन, येह सज्दा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया। एक क़ौल येह भी है कि मलाइकए मुक़र्रबीन सो बरस और एक क़ौल में पांच सो बरस सज्दे में रहे, शैतान ने सज्दा न किया और बराहे तकब्बुर येह ए'तिक़ाद करता रहा कि वोह हज़रते आदम से अफ़्ज़ल है, उस के लिये सज्दे का हुक्म مَعَاذَ اللّٰہ تَعَالٰی तआ़ला ख़िलाफ़े हिक्मत है, इस ए'तिक़ादे बातिल से वोह काफ़िर हो गया। **मस्अला :** आयत में दलालत है कि हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं कि उन से इन्हें सज्दा कराया गया। **मस्अला :** तकब्बुर निहायत क़बीह है इस से कभी मुतकब्बिर की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है। (بیضاوی وجمل) **62 :** इस से गन्दुम या अंगूर वग़ैरा मुराद है। (جلالین) **63 :** ज़ुल्म के मा'ना हैं : किसी शै को बे महल वज़्अ़ करना, येह मम्नूअ़ है और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह सरज़द नहीं होता, यहां ज़ुल्म ख़िलाफ़े औला के मा'नी में है। **मस्अला :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को ज़ालिम कहना इहानत व कुफ़्र है जो कहे वोह काफ़िर हो जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला मालिको मौला है जो चाहे फ़रमाए इस में उन की इज़्ज़त है, दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाए और ख़िताबे हज़रते हक़ को अपनी जुरअत के लिये सनद बनाए, हमें ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदब व ताअ़त का हुक्म फ़रमाया हम पर येही लाज़िम है। **64 :** शैतान ने किसी त़रह हज़रते आदम व हव्वा (عَلَیْہِمَا السَّلَام) के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें शजरे ख़ुल्द बता दूं ! हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्कार फ़रमाया, उस ने क़सम खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं, उन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है? बईं ख़याल हज़रते हव्वा ने उस में से कुछ खाया फिर हज़रते आदम को दिया उन्हों ने भी तनावुल किया, हज़रते आदम को ख़याल हुवा कि لَا تَقْرَبَا की नह्य तन्ज़ीही है तह़रीमी नहीं क्यूं कि अगर वोह तह़रीमी समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अम्बिया मा'सूम होते हैं, यहां हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से इज्तिहाद में ख़ता हुई और ख़ताए इज्तिहादी मा'सियत नहीं होती। **65 :** हज़रते आदम व हव्वा और उन की ज़ुर्रिय्यत को जो उन के सुल्ब में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुवा, हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ज़मीने हिन्द में "सरान्दीप" के पहाड़ों पर और हज़रते हव्वा "जद्दे" में उतारे गए। (خازن) हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की बरकत से ज़मीन के अश्जार में पाकीज़ा ख़ुश्बू पैदा हुई। (روح البیان) **66 :** इस से इख़्तितामे उम्र या'नी मौत का वक़्त मुराद है और हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये बिशारत है कि वोह दुन्या में सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये हैं इस के बा'द फिर उन्हें जन्नत की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाना है और आप की औलाद के लिये मआ़द पर दलालत है कि दुन्या की ज़िन्दगी मुअ़य्यन वक़्त तक है उम्र तमाम होने के बा'द उन्हें आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़ करना है। **67 :** आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन पर आने

اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا

तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा उसे

خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ

न कोई अन्देशा न कुछ ग़म[68] और वोह जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुटलाएंगे

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۹﴾ ع يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

वोह दोज़ख़ वाले हैं उन को हमेशा उस में रहना ऐ या'क़ूब की औलाद[69] याद करो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ

मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया[70] और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा[71] और ख़ास मेरा

के बा'द तीन सो बरस तक ह़या से आस्मान की त़रफ़ सर न उठाया अगर्चे ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام "कसीरुल बुका" (या'नी बहुत ज़ियादा रोने वाले) थे, आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से ज़ियादा हैं मगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام इस क़दर रोए कि आप के आंसू ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम अहले ज़मीन के आंसूओं के मज्मूए़ से बढ़ गए। (خازن) त़बरानी व ह़ाकिम व अबू नुऐ़म व बैहक़ी ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप फ़िक्रे तौबा में ह़ैरान थे, इस परेशानी के आ़लम में याद आया कि वक़्ते पैदाइश मैं ने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा है : "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" मैं समझा था कि बारगाहे इलाही में वोह रुत्बा किसी को मुयस्सर नहीं जो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ह़ासिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन का नाम अपने नामे अक़्दस के साथ अ़र्श पर मक्तूब फ़रमाया, लिहाज़ा आप ने अपनी दुआ़ में "رَبَّنَا ظَلَمْنَا...الآیہ" के साथ येह अ़र्ज़ किया : "اَسْئَلُکَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تَغْفِرَلِیْ۔" इब्ने मुन्ज़िर की रिवायत में येह कलिमे हैं : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ بِجَاہِ مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَکَرَامَتِہٖ عَلَیْکَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ خَطِیْٓئَتِیْ" या'नी या रब ! मैं तुझ से तेरे बन्दए ख़ास मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जाहो मर्तबत के तु़फ़ैल में और उस करामत के सदक़े में जो उन्हें तेरे दरबार में ह़ासिल है मग़्फ़िरत चाहता हूं। येह दुआ़ करनी थी कि ह़क़ तआ़ला ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमाई। **मस्अला :** इस रिवायत से साबित है कि मक़्बूलाने बारगाह के वसीले से दुआ़ ब ह़क़्क़े फ़ुलां और ब जाहे फ़ुलां कह कर मांगना जाइज़ और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला पर किसी का ह़क़ वाजिब नहीं होता लेकिन वोह अपने मक़्बूलों को अपने फ़ज़्लो करम से ह़क़ देता है इसी तफ़ज़्ज़ुलिये ह़क़ के वसीले से दुआ़ की जाती है, सह़ीह़ अह़ादीस से येह ह़क़ साबित है जैसे वारिद हुवा : "مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَرَسُوْلِہٖ وَاَقَامَ الصَّلٰوۃَ وَصَامَ رَمَضَانَ کَانَ حَقًّا عَلَی اللّٰہِ اَنْ یُّدْخِلَہُ الْجَنَّۃَ" (जो ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के रसूल पर और नमाज़ क़ाइम की और रमज़ान के रोज़े रखे, **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल करे)। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुह़र्रम को क़बूल हुई। जन्नत से इख़्राज के वक़्त और ने'मतों के साथ अ़रबी ज़बान भी आप से सल्ब कर ली गई थी बजाए इस के ज़बान मुबारक पर सुरयानी जारी कर दी गई थी क़बूले तौबा के बा'द फिर ज़बाने अ़रबी अ़त़ा हुई। (فتح العزیز) **मस्अला :** तौबा की अस्ल "रुजूअ़ इलल्लाह" है, इस के तीन रुक्न हैं : **एक** ए'तिराफ़े जुर्म, **दूसरे** नदामत, **तीसरे** अ़ज़्मे तर्क। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन तारिके सलात की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। तौबा के बा'द ह़ज़रते जिब्रईल ने ज़मीन के तमाम जानवरों में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िलाफ़त का ए'लान किया और सब पर उन की फ़रमां बरदारी लाज़िम होने का हुक्म सुनाया, सब ने क़बूले त़ाअ़त का इज़्हार किया। (فتح العزیز) **68 :** येह मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिशारत है कि न उन्हें फ़ज़्ए़ अक्बर (सब से बड़ी घबराहट) के वक़्त ख़ौफ़ हो न आख़िरत में ग़म, वोह बे ग़म जन्नत में दाख़िल होंगे। **69 :** इसराईल ब मा'ना अ़ब्दुल्लाह अ़बरी ज़बान का लफ़्ज़ है, येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है। (مدارک) कल्बी मुफ़स्सिर ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला ने "یٰٓاَیُّھَا النَّاسُ اعْبُدُوْا" (ऐ लोगो ! अपने रब को पूजो) फ़रमा कर पहले तमाम इन्सानों को उ़मूमन दा'वत दी, फिर "اِذْ قَالَ رَبُّکَ" फ़रमा कर उन के मब्दअ (पैदाइश) का ज़िक्र किया, इस के बा'द ख़ुसूसिय्यत के साथ बनी इसराईल को दा'वत दी, येह लोग यहूदी हैं और यहां से "سَیَقُوْلُ" तक इन से कलाम जारी है। कभी ब मुलात़फ़त (इनायत व मेहरबानी करते हुए) इन्आ़म याद दिला कर दा'वत दी जाती है कभी ख़ौफ़ दिलाया जाता है, कभी हुज्जत क़ाइम की जाती है कभी उन की बद अ़मली पर तौबीख़ होती है, कभी गुज़श्ता उ़क़ूबात का ज़िक्र किया जाता है। **70 :** येह एह़सान कि तुम्हारे आबा को फ़िरऔ़न से नजात दिलाई, दरिया को फाड़ा, अब्र को साएबान बनाया, इन के इ़लावा और एह़सानात जो आगे आते हैं उन सब को याद करो, और याद करना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व बन्दगी कर के शुक्र बजा लाओ क्यूं कि किसी ने'मत का शुक्र न करना ही उस का भुलाना है। **71 :** या'नी तुम ईमान व त़ाअ़त बजा ला कर मेरा अ़ह्द पूरा करो, मैं जज़ा व सवाब दे कर तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा, इस अ़ह्द का बयान आयए "وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰہُ مِیْثَاقَ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ" में है।

www.dawateislami.net

فَارْهَبُوْنِ ﴿۴۰﴾ وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَ لَا تَكُوْنُوْۤا

ही डर रखो[72] और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक़ करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से

اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۪ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا٘ وَّ اِیَّایَ فَاتَّقُوْنِ ﴿۴۱﴾

पहले उस के मुन्किर न बनो[73] और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो[74] और मुझी से डरो

وَ لَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ

وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِیْنَ ﴿۴۳﴾ اَتَاْمُرُوْنَ

और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो[75] क्या लोगों को

النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَؕ اَفَلَا

भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ह़ालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें

تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى

अ़क्ल नहीं[76] और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर

الْخٰشِعِیْنَ ﴿۴۵﴾ۙ الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَیْهِ

जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं[77] जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की

---

72 : मस्अला : इस आयत में शुक्रे ने'मत व वफ़ाए अ़हद के वाजिब होने का बयान है और येह भी कि मोमिन को चाहिये कि **अल्लाह** के सिवा किसी से न डरे। **73 :** या'नी कुरआने पाक और तौरैत व इन्जील पर जो तुम्हारे साथ हैं ईमान लाओ और अहले किताब में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तिबाअ़ में कुफ़्र इख़्तियार करे उस का वबाल भी तुम पर हो। **74 :** इन आयात से तौरैत व इन्जील की वोह आयात मुराद हैं जिन में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है, मक़्सद येह है कि हुज़ूर की ना'त दौलते दुन्या के लिये मत छुपाओ कि मताए दुन्या समने क़लील और ने'मते आख़िरत के मुक़ाबिल बे ह़क़ीक़त है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत का'ब बिन अशरफ़ और दूसरे रुअसा व उ़लमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके वुसूल कर लेते और उन पर सालाने मुक़र्रर करते थे और उन्हों ने फलों और नक़्द मालों में अपने हक़ मुअ़य्यन कर लिये थे उन्हें अन्देशा हुवा कि तौरैत में जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है अगर उस को ज़ाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएगी और उन की कुछ पुरसिश न रहेगी, येह तमाम मनाफ़ेअ़ जाते रहेंगे, इस लिये उन्हों ने अपनी किताबों में तग़्यीर की और हुज़ूर की ना'त को बदल डाला, जब उन से लोग दरयाफ़्त करते कि तौरैत में हुज़ूर के क्या औसाफ़ मज़्कूर हैं? तो वोह छुपा लेते और हरगिज़ न बताते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وغیرہ) **75 :** इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस त़रफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो। **मस्अला :** जमाअ़त की तरग़ीब भी है, ह़दीस शरीफ़ में है जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है। **76 : शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद से उन के मुसल्मान रिश्तेदारों ने दीने इस्लाम की निस्बत दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा कि तुम इस दीन पर क़ाइम रहो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन हक़ और कलाम सच्चा है! इस पर येह आयत नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि आयत उन यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुश्रिकीने अ़रब को हुज़ूर के मबऊ़स होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर की इत्तिबाअ़ करने की हिदायत की थी फिर जब हुज़ूर मब्ऊ़स हुए तो येह हिदायत करने वाले ह़सद से ख़ुद काफ़िर हो गए और इस पर इन्हें तौबीख़ की गई। (خازن ومدارک) **77 :** या'नी अपनी ह़ाजतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। سُبْحٰنَ اللّٰه क्या पाकीज़ा ता'लीम है! सब्र मुसीबतों का अख़्लाक़ी

www.dawateislami.net

رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ع ۵

तरफ़ फिरना[78] ऐ औलादे या'कूब याद करो मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया

وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ

और येह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी[79] और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला

نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ

न हो सकेगी[80] और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ ले कर उस की जान छोड़ी जाए और न उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

मदद हो[81] और याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी[82] कि तुम पर बुरा अ़ज़ाब करते थे[83]

يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते[84] और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से

मुक़ाबला है इन्सान अ़द्लो अ़ज़्म, ह़क़ परस्ती पर बिग़ैर इस के क़ाइम नहीं रह सकता। सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) शिद्दत व मुसीबत पर नफ़्स को रोकना। (2) ताअ़त व इबादत की मशक़्क़तों में मुस्तक़िल रहना। (3) मा'सियत की तरफ़ माइल होने से तबीअ़त को बाज़ रखना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां सब्र से रोज़ा मुराद लिया है, वोह भी सब्र का एक फ़र्द है। इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तिआ़नत की ता'लीम भी फ़रमाई क्यूं कि वोह इबादते बदनिय्या व नफ़्सानिय्या की जामेअ़ है और इस में क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अहम उमूर के पेश आने पर मश्ग़ूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिक़ीन के सिवा औरों पर नमाज़ गिरां है। **78 :** इस में बिशारत है कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की ने'मत मिलेगी। **79 :** ''اَلْعٰلَمِيْنَ'' का इस्तिग़राक़ ह़क़ीक़ी नहीं, मुराद येह है कि मैं ने तुम्हारे आबा को उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी या फ़ज़्ले जुज़्ई मुराद है जो और किसी उम्मत की फ़ज़ीलत का नाफ़ी नहीं हो सकता, इसी लिये उम्मते मुह़म्मदिय्यह के ह़क़ में इर्शाद हुवा : ''كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ''। (روح البیان جمل وغیرہ) **80 :** वोह रोज़े क़ियामत है। आयत में नफ़्स दो मरतबा आया है पहले से नफ़्से मोमिन दूसरे से नफ़्से काफ़िर मुराद है। (مدارک) **81 :** यहां से रुकूअ़ के आख़िर तक दस ने'मतों का बयान है जो उन बनी इसराईल के आबा को मिलीं। **82 :** क़ौमे क़िब्त़ व अ़मालीक़ से जो मिस्र का बादशाह हुवा उस को फ़िरऔन कहते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने के फ़िरऔन का नाम वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रय्यान है, यहां इसी का ज़िक्र है, इस की उ़म्र चार सो बरस से ज़ियादा हुई, आले फ़िरऔन से इस के मुत्तबिईन मुराद हैं। (جمل وغیرہ) **83 :** अ़ज़ाब सब बुरे होते हैं ''سُوْٓءَ الْعَذَابِ'' वोह कहलाएगा जो और अ़ज़ाबों से शदीद हो, इस लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ''बुरा अ़ज़ाब'' तरजमा किया। (کمافی الجلالین وغیرہ) फ़िरऔन ने बनी इसराईल पर निहायत बे दर्दी से मेह़नतो मशक़्क़त के दुश्वार काम लाज़िम किये थे, पथ्थरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उन की कमरें गरदनें ज़ख़्मी हो गई थीं, ग़रीबों पर टेक्स मुक़र्रर किये थे जो ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल ब जब्र (ज़बर दस्ती) वुसूल किये जाते थे, जो नादार किसी दिन टेक्स अदा न कर सका उस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाते थे और महीने भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था और तरह़ तरह़ की बे रह़माना सख़्तियां थीं। (خازن وغیرہ) **84 :** फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़्दिस की तरफ़ से आग आई उस ने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्त़ियों को जला डाला बनी इसराईल को कुछ ज़रर न पहुंचाया इस से उस को बहुत वह़्शत हुई, काहिनों ने ता'बीर दी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाले सल्तनत का बाइ़स होगा, येह सुन कर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लड़का पैदा हो क़त्ल कर दिया जाए, दाइयां तफ़्तीश के लिये मुक़र्रर हुईं, बारह हज़ार व ब रिवायते (और एक रिवायत के मुताबिक़) सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नव्वे हज़ार ह़म्ल गिरा दिये गए, और मशिय्यते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द जल्द मरने लगे, क़ौमे क़िब्त़ के रुअसा ने घबरा कर फ़िरऔन से शिकायत की, कि बनी इसराईल में मौत की गर्म बाज़ारी है, इस पर उन के बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं तो हमें ख़िदमत गार कहां से मुयस्सर आएंगे ? फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़े जाएं तो जो साल छोड़ने का था उस में ह़ज़रते हारून पैदा हुए और क़त्ल के साल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई।

www.dawateislami.net

رَبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ

बड़ी बला थी या बड़ा इन्आम[85] और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन

فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ

वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया[86] और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वा'दा फ़रमाया फिर

اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ

उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम ज़ालिम थे[87] फिर इस के बा'द हम ने

بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ

तुम्हें मुआफ़ी दी[88] कि कहीं तुम एह़सान मानो[89] और जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर देना

85 : "बला" इम्तिह़ान व आज़्माइश को कहते हैं, आज़्माइश ने'मत से भी होती है और शिद्दतो मेह़नत से भी, ने'मत से बन्दे की शुक्र गुज़ारी और मेह़नत से उस के सब्र का ह़ाल ज़ाहिर होता है। अगर "ذٰلِكُمْ" का इशारा फ़िरऔ़न के मज़ालिम की त़रफ़ हो तो "बला" से मेह़नतो मुसीबत मुराद होगी और अगर उन मज़ालिम से नजात देने की त़रफ़ हो तो ने'मत। **86 :** येह दूसरी ने'मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔ़नियों के ज़ुल्मो सितम से नजात दी और फ़िरऔ़न को मअ़ उस की क़ौम के उन के सामने ग़र्क़ किया, यहां "आले फ़िरऔ़न" से फ़िरऔ़न मअ़ अपनी क़ौम के मुराद है जैसे कि "كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ" में ह़ज़रते आदम व औलादे आदम दोनों दाख़िल हैं। (جمل) मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब हुक्मे इलाही शब में बनी इसराईल को मिस्र से ले कर रवाना हुए, सुब्ह़ को फ़िरऔ़न उन की जुस्तजू में लश्करे गिरां ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा पाया, बनी इसराईल ने लश्करे फ़िरऔ़न देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रियाद की, आप ने ब हुक्मे इलाही दरिया में अपना अ़सा मारा, इस की बरकत से ऐन दरिया में बारह ख़ुश्क रस्ते पैदा हो गए, पानी दीवारों की त़रह़ खड़ा हो गया, उन आबी दीवारों में जाली की मिस्ल रोशन दान बन गए, बनी इसराईल की हर जमाअ़त उन रस्तों में एक दूसरे को देखती और बाहम बातें करती गुज़र गई। फ़िरऔ़न दरियाई रस्ते देख कर उन में चल पड़ा जब इस का तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया ह़ालते अस्ली पर आया और तमाम फ़िरऔ़नी उस में ग़र्क़ हो गए। दरिया का अ़र्ज़ चार फ़रसंग (बारह मील से ज़ाइद फ़ासिला) था येह वाक़िआ़ बह़रे क़ुल्ज़ुम का है जो बह़रे फ़ार्स के किनारे पर है, या बह़र मा वराए मिस्र का जिस को इसाफ़ कहते हैं। बनी इसराईल लबे दरिया फ़िरऔ़नियों के ग़र्क़ का मन्ज़र देख रहे थे। येह ग़र्क़ मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दिन शुक्र का रोज़ा रखा, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक भी यहूद इस दिन का रोज़ा रखते थे, हुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की फ़त्ह़ की ख़ुशी मनाने और इस की शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूद से ज़ियादा ह़क़दार हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आ़शूरे का रोज़ा सुन्नत है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया पर जो इन्आ़मे इलाही हो उस की यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना मस्नून है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि ऐसे उमूर में दिन का तअ़य्युन सुन्नते रसूलुल्लाह है صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया की यादगार अगर कुफ़्फ़ार भी क़ाइम करते हों जब भी इस को छोड़ा न जाएगा। **87 :** फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के हलाक के बा'द जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की त़रफ़ लौटे और इन की दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने अ़त़ाए तौरैत का वा'दा फ़रमाया और इस के लिये मीक़ात मुअ़य्यन किया जिस की मुद्दत मअ़ इज़ाफ़ा एक माह दस रोज़ थी, महीना ज़ुल क़ा'दा और दस दिन ज़ुल ह़िज्जा के, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ौम में अपने भाई हारून عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लीफ़ा व जा नशीन बना कर तौरैत ह़ासिल करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए, चालीस शब वहां ठहरे इस अ़र्से में किसी से बात न की, **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बर जदी अल्वाह़ में तौरैत आप पर नाज़िल फ़रमाई। यहां सामरी ने सोने के जवाहिरात से मुरस्सअ़ बछड़ा बना कर क़ौम से कहा कि येह तुम्हारा मा'बूद है। वोह लोग एक माह ह़ज़रत का इन्तिज़ार कर के सामरी के बहकाने से बछड़ा पूजने लगे सिवाए ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और आप के बारह हज़ार हम राहियों के, तमाम बनी इसराईल ने गौसाला (बछड़े) को पूजा। (خازن) **88 :** "अ़फ़्व" की कैफ़िय्यत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तौबा की सूरत येह है कि जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह परस्तिश करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम ब रिज़ा व तस्लीम सुकून के साथ क़त्ल हो जाएं, वोह इस पर राज़ी हो गए, सुब्ह़ से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए, तब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ब तज़र्रोअ़ व ज़ारी (रोते गिड़गिड़ाते) बारगाहे ह़क़ की त़रफ़ मुल्तजी हुए, वह़्य आई कि जो क़त्ल हो चुके शहीद हुए, बाक़ी मग़्फ़ूर फ़रमाए गए, इन में के क़ातिल व मक़्तूल सब जन्नती हैं। **मस्अला :** शिर्क

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ

कि कहीं तुम राह पर आओ और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बना

اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ط

कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो[90]

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ط فَتَابَ عَلَيْكُمْ ط اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ

येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً

मेहरबान[91] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अ़लानिया ख़ुदा को न देख लें

فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْ بَعْدِ

तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें

مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ

ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एह़सान मानो और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया[92] और तुम पर

से मुसल्मान मुरतद हो जाता है। **मस्अला :** मुरतद की सज़ा क़त्ल है क्यूं कि **अल्लाह** तआला से बग़ावत क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से सख़्त तर जुर्म है। **फ़ाएदा :** गौसाला बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे **एक** तस्वीर साज़ी जो ह़राम है, **दूसरे** ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की ना फ़रमानी, **तीसरे** गौसाला पूज कर मुश्रिक हो जाना, येह ज़ुल्म आले फ़िरऔन के मज़ालिम से भी ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि येह अफ़्आल उन से बा'दे ईमान सरज़द हुए इस लिये मुस्तह़िक़ तो इस के थे कि अ़ज़ाबे इलाही उन्हें मोहलत न दे और फ़िलफ़ौर हलाकत से कुफ़्र पर उन का ख़ातिमा हो जाए लेकिन ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام की बदौलत उन्हें तौबा का मौक़अ़ दिया गया, येह **अल्लाह** तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। **89 :** इस में इशारा है कि बनी इसराईल की इस्ति'दाद फ़िरऔ़नियों की त़रह़ बात़िल न हुई थी और इन की नस्ल से सालिह़ीन पैदा होने वाले थे चुनान्चे इन में हज़ारहा नबी व सालेह़ पैदा हुए। **90 :** येह क़त्ल उन के लिये कफ़्फ़ारा था। **91 :** जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारे में अपनी जानें दे दीं तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इन्हें गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही के लिये ह़ाज़िर लाएं, ह़ज़रत उन में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब कर के तूर पर ले गए वहां वोह कहने लगे : ऐ मूसा ! हम आप का यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को अ़लानिया न देख लें, इस पर आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वोह मर गए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ब तज़र्रोअ़ (आ़जिज़ी के साथ) अ़र्ज़ की, कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा ? इस पर **अल्लाह** तआला ने उन्हें यके बा'द दीगरे ज़िन्दा फ़रमा दिया। **मस्अला :** इस से शाने अम्बिया मा'लूम होती है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से "لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ" (हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे) कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़ह्द वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बिया की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइ़स होता है इस से डरते रहें। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला अपने मक़्बूलाने बारगाह की दुआ़ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाता है। **92 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़ारिग़ हो कर लश्करे बनी इसराईल में पहुंचे और आप ने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की औलाद का मदफ़न है, उसी में बैतुल मक़्दिस है, उस को अ़मालक़ा से आज़ाद कराने के लिये जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर वहीं वत़न बनाओ, मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल पर निहायत शाक़ था अव्वल तो उन्हों ने इसी में पसो पेश किया और जब ब जब्रो इक्राह ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام की रिकाबे सआ़दत में रवाना हुए तो राह में जो कोई सख़्ती व दुश्वारी पेश आती ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से शिकायतें करते, जब उस सह़रा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था न साया न ग़ल्ला हमराह था वहां धूप की गरमी और भूक की शिकायत की, **अल्लाह** तआला ने ब दुआए ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अब्रे सफ़ेद को उन का साएबान बनाया जो रात दिन उन के साथ चलता, शब को उन के लिये नूरी सुतून उतरता जिस की रोशनी में काम करते, उन के कपड़े मैले और पुराने

www.dawateislami.net

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ

मन्न और सल्वा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें[93] और उन्हों ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां

كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا

अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ[94] फिर उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ

जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो[95] और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हों

نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दें[96] तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी

قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ

जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा[97] तो हम ने आस्मान से उन पर अज़ाब

ع ٦ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا

उतारा[98] बदला उन की बे हुक्मी का और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया

न होते, नाखुन और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो लड़का पैदा होता उस का लिबास उस के साथ पैदा होता जितना वोह बढ़ता लिबास भी बढ़ता। **93 :** "मन्न" तुरन्जबीन की तरह एक शीरीं चीज़ थी रोज़ाना सुब्हे सादिक़ से तुलूए आफ़्ताब तक हर शख़्स के लिये एक साअ़ की क़दर आस्मान से नाज़िल होती, लोग उस को चादरों में ले कर दिन भर खाते रहते। "सल्वा" एक छोटा परिन्द होता है उस को "हवा" लाती, येह शिकार कर के खाते, दोनों चीज़ें शम्बा को तो मुत्लक़ न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं जुमुआ़ को और दिनों से दूनी आतीं। हुक्म येह था कि जुमुआ़ को शम्बा के लिये भी हस्बे ज़रूरत जम्अ़ कर लो मगर एक दिन से ज़ियादा का जम्अ़ न करो, बनी इसराईल ने इन ने'मतों की नाशुक्री की, ज़ख़ीरे जम्अ़ किये, वोह सड़ गए और उन की आमद बन्द कर दी गई, येह उन्हों ने अपना ही नुक़्सान किया कि दुन्या में ने'मत से महरूम और आख़िरत में सज़ावार अ़ज़ाब के हुए। **94 :** उस बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है या अरीहा जो बैतुल मक़्दिस के क़रीब है जिस में अ़मालक़ा आबाद थे और उस को ख़ाली कर गए, वहां ग़ल्ले मेवे ब कसरत थे। **95 :** येह दरवाज़ा उन के लिये ब मन्ज़िला का'बा के था कि इस में दाख़िल होना और इस की त़रफ़ सज्दा करना सबबे कफ़्फ़ारए ज़ुनूब क़रार दिया गया। **96 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़बान से इस्तिग़फ़ार करना और बदनी इबादत सज्दा वग़ैरा बजा लाना तौबा का मुतम्मिम (कामिल व पूरा करने वाला) है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मश्हूर गुनाह की तौबा ब ए'लान होनी चाहिये। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मक़ामाते मुतबर्रका जो रहमते इलाही के मौरिद हों वहां तौबा करना और त़ाअ़त बजा लाना समराते नेक और सुरअ़ते क़बूल का सबब होता है। (فتح العزیز) इसी लिये सालिहीन का दस्तूर रहा है कि अम्बिया व औलिया के मवालिद (पैदाइश गाह) व मज़ारात पर हाज़िर हो कर इस्तिग़फ़ार व त़ाअ़त बजा लाते हैं। उर्स व ज़ियारत में भी येह फ़ाएदा मुतसव्वर है। **97 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बनी इसराईल को हुक्म हुवा था कि दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से "حِطَّةٌ" कलिमए तौबा व इस्तिग़फ़ार कहते जाएं, उन्हों ने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की, दाख़िल तो हुए सुरीनों के बल घिसटते और बजाए कलिमए तौबा के तमस्ख़ुर से "حَبَّةٌ فِیْ شَعْرَةٍ" कहा जिस के मा'ना हैं बाल में दाना। **98 :** येह अ़ज़ाब त़ाऊन था जिस से एक साअ़त में चौबीस हज़ार हलाक हो गए। **मस्अला :** सिहाह़ की ह़दीस में है कि त़ाऊन पिछली उम्मतों के अ़ज़ाब का बक़िय्या है, जब तुम्हारे शहर में वाक़ेअ़ हो वहां से न भागो, दूसरे शहर में हो तो वहां न जाओ। **मस्अला :** सह़ीह़ ह़दीस में है कि जो लोग मक़ामे वबा में रिज़ाए इलाही पर साबिर रहें अगर वोह वबा से मह़फ़ूज़ रहें जब भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

www.dawateislami.net

اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ

इस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले[99] हर

عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا

गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो ख़ुदा का दिया[100] और

تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝۶۰ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى

ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो[101] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा[102] हम से तो एक खाने पर[103]

طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ

हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले

بَقْلِهَا وَ قِثَّآئِهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ

कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़

الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا

को बेहतर के बदले मांगते हो[104] अच्छा मिस्र[105] या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा

سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ

जो तुम ने मांगा[106] और उन पर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी[107] और ख़ुदा के ग़ज़ब में

99 : जब बनी इसराईल ने सफ़र में पानी न पाया शिद्दते प्यास की शिकायत की तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म हुवा कि अपना अ़सा पथ्थर पर मारो आप के पास एक मुरब्बअ़ पथ्थर था जब पानी की ज़रूरत होती आप उस पर अ़सा मारते उस से बारह चश्मे जारी हो जाते और सब सैराब होते। येह बड़ा मो'जिज़ा है लेकिन सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अंगुश्ते मुबारक से चश्मे जारी फ़रमा कर जमाअ़ते कसीरा को सैराब फ़रमाना इस से बहुत आ'ज़म व आ'ला है क्यूं कि उ़ज़्वे इन्सानी से चश्मे जारी होना पथ्थर की निस्बत ज़ियादा आ'जब (तअ़ज्जुब खेज़) है। (خازن ومدارک) **100 :** या'नी आस्मानी तुआ़म ''मन्न व सल्वा'' खाओ और इस पथ्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही से बे मेहनत मुयस्सर है। **101 :** ने'मतों के ज़िक्र के बा'द बनी इसराईल की ना लियाक़ती (ना अहली), दूं हिम्मती (बुज़दिली) और ना फ़रमानी के चन्द वाक़िआत बयान फ़रमाए जाते हैं। **102 :** बनी इसराईल की येह अदा भी निहायत बे अदबाना थी कि पैग़म्बरे ऊलुल अ़ज़्म को नाम ले कर पुकारा, या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह ! या और कोई ता'ज़ीम का कलिमा न कहा। (فتح العزیز) जब अम्बिया का ख़ाली नाम लेना बे अदबी है तो इन को बशर और एलची कहना किस त़रह़ गुस्ताख़ी न होगा ! ग़रज़ अम्बिया के ज़िक्र में बे ता'ज़ीमी का शाएबा भी ना जाइज़ है। **103 :** ''एक खाने'' से एक क़िस्म का खाना मुराद है। **104 :** जब वोह इस पर भी न माने तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की इर्शाद हुवा ''اِهْبِطُوْا''। **105 :** ''मिस्र'' अ़रबी में शहर को भी कहते हैं कोई शहर हो, और ख़ास शहर या'नी मिस्रे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का नाम भी है, यहां दोनों में से हर एक मुराद हो सकता है। बा'ज़ का ख़याल है कि यहां ख़ास शहरे मिस्र मुराद नहीं हो सकता क्यूं कि इस के लिये येह लफ़्ज़ ग़ैर मुन्सरिफ़ हो कर मुस्ता'मल होता है और इस पर तन्वीन नहीं आती जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : ''اَلَیْسَ لِیْ مُلْکُ مِصْرَ'' और ''اُدْخُلُوْا مِصْرَ'' मगर येह ख़याल सहीह़ नहीं क्यूं कि सुकूने औसत़ की वज्ह से लफ़्ज़े हिन्द की त़रह़ इस को मुन्सरिफ़ पढ़ना दुरुस्त है नह्व में इस की तसरीह़ मौजूद है। इलावा बरीं ह़सन वग़ैरा की क़िराअत में मिस्र बिला तन्वीन आया है और बा'ज़ मसाहिफ़े हज़रते उ़स्मान और मुस्ह़फ़े उबय رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا में भी ऐसा ही है इसी लिये हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने तरजमे में दोनों एहतिमालों को अख़्ज़ फ़रमाया है और शहरे मुअ़य्यन के एहतिमाल को मुक़द्दम किया। **106 :** या'नी साग, ककड़ी वग़ैरा गो इन चीज़ों की त़लब गुनाह

www.dawateislami.net

اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

लौटे[108] यह बदला था इस का कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते और अम्बिया को नाहक़ शहीद

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

करते[109] यह बदला था उन की ना फ़रमानियों और हद से बढ़ने का बेशक ईमान वाले

وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ النَّصٰرٰى وَ الصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ

नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वोह कि सच्चे दिल से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं

وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ

और नेक काम करें उन का सवाब उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न

يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا

कुछ ग़म[110] और जब हम ने तुम से अ़हद लिया[111] और तुम पर तूर को ऊंचा किया[112] लो जो कुछ

مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

हम तुम को देते हैं ज़ोर से[113] और उस के मज़मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर इस के

न थी लेकिन "मन्न व सल्वा" जैसी ने'मते बे मेहनत छोड़ कर इन की तरफ़ माइल होना पस्त ख़याली है, हमेशा इन लोगों का मैलाने तब्अ़ पस्ती ही की तरफ़ रहा, और हज़रते मूसा व हारून वग़ैरा जलीलुल क़द्र बुलन्द हिम्मत अम्बिया (عَلَیْهِمُ السَّلَام) के बा'द बनी इसराईल की लईमी (कमीनगी) व कम हौसलगी का पूरा ज़ुहूर हुवा, और तसल्लुते जालूत व हादिसए बुख़्ते नस्सर के बा'द तो वोह बहुत ही ज़लीलो ख़्वार हो गए, इस का बयान "ضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ" में है। **107 :** यहूद की ज़िल्लत तो येह कि दुन्या में कहीं नाम को इन की सल्तनत नहीं और नादारी येह कि माल मौजूद होते हुए भी हिर्स से मोहताज ही रहते हैं। **108 :** अम्बिया व सुलहा की बदौलत जो रुत्बे इन्हें हासिल हुए थे उन से महरूम हो गए, इस ग़ज़ब का बाइस सिर्फ़ येही नहीं कि इन्हों ने आस्मानी ग़िज़ाओं के बदले अर्ज़ी पैदावार की ख़्वाहिश की या इसी तरह की और ख़ताएं जो ज़मानए हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام में सादिर हुई बल्कि अ़हदे नुबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से इन की इस्ति'दादें बातिल हुईं और निहायत क़बीह अफ़्आल और अ़ज़ीम जुर्म इन से सरज़द हुए, येह इन की इस ज़िल्लतो ख़्वारी का बाइस हुए। **109 :** जैसा कि इन्हों ने हज़रते ज़करिय्या व यहूया व शा'या عَلَیْهِمُ السَّلَام को शहीद किया और येह क़त्ल ऐसे नाहक़ थे जिन की वज्ह ख़ुद येह क़ातिल भी नहीं बता सकते। **110 : शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर व इब्ने अबी हातिम ने सुद्दी से रिवायत की, कि येह आयत सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ عَنْہ के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई। (لباب النقول) **111 :** कि तुम तौरैत मानोगे और उस पर अ़मल करोगे। फिर तुम ने उस के अहकाम को शाक़ व गिरां जान कर क़बूल से इन्कार कर दिया या बा वुजूदे कि तुम ने ख़ुद ब इल्हाह़ (गिड़गिड़ा कर) हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से ऐसी आस्मानी किताब की इस्तिद्आ़ की थी जिस में क़वानीने शरीअ़त व आईने इबादत मुफ़स्सल मज़्कूर हों और हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने तुम से बार बार उस के क़बूल करने और उस पर अ़मल करने का अ़हद लिया था, जब वोह किताब अ़ता हुई तुम ने उस के क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अ़हद पूरा न किया। **112 :** बनी इसराईल की अ़हद शिकनी के बा'द हज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही तूर पहाड़ को उठा कर उन के सरों पर क़दरे क़ामत फ़ासिले पर मुअ़ल्लक़ कर दिया और हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : या तो तुम अ़हद क़बूल करो, वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे, इस में सूरतन वफ़ाए अ़हद पर इक्राह था और दर ह़क़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअ़ल्लक़ कर देना आयते इलाही और क़ुदरते हक़ की बुरहाने क़वी है, इस से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक येह रसूल मज़्हरे क़ुदरते इलाही हैं। येह इत्मीनान इन को मानने और अ़हद पूरा करने का अस्ल सबब है। **113 :** या'नी ब कोशिश तमाम।

www.dawateislami.net

مِّنۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ لَكُنۡتُمۡ مِّنَ

बा'द तुम फिर गए तो अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे (नुक़्सान)

الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۶۴﴾ وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ الَّذِيۡنَ اعۡتَدَوۡا مِنۡكُمۡ فِى السَّبۡتِ فَقُلۡنَا

वालों में हो जाते[114] और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की[115] तो हम ने उन

لَهُمۡ كُوۡنُوۡا قِرَدَةً خٰسِـِٕيۡنَ ﴿۶۵﴾ ۚ فَجَعَلۡنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهَا وَمَا

से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए तो हम ने उस बस्ती का येह वाक़िआ उस के आगे और

خَلۡفَهَا وَمَوۡعِظَةً لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۶۶﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ

पीछे वालों के लिये इब्रत कर दिया और परहेज़ गारों के लिये नसीहत और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें

يَاۡمُرُكُمۡ اَنۡ تَذۡبَحُوۡا بَقَرَةً ؕ قَالُوۡۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوۡذُ

हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह करो[116] बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं[117] फ़रमाया ख़ुदा की

بِاللّٰهِ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوا ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنۡ لَّنَا مَا

पनाह कि मैं जाहिलों से होउं[118] बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाय

114 : यहां फ़ज़्लो रहमत से या तौफ़ीक़े तौबा मुराद है या ताख़ीरे अ़ज़ाब। (مدارک وغیرہ) एक क़ौल येह है कि फ़ज़्ले इलाही व रहमते हक़ से हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक मुराद है, मा'ना येह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के वुजूद की दौलत न मिलती और आप की हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अन्जाम हलाक व ख़ुसरान होता। **115 :** शहरे "ऐला" में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शम्बा का दिन इबादत के लिये ख़ास कर दें, इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें, उन के एक गुरौह ने येह चाल की, कि जुमुआ़ को दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और शम्बा की सुब्ह को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं, यकशम्बा (इतवार) को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा (हफ़्ते) के रोज़ नहीं निकालते, चालीस या सत्तर साल तक येही अ़मल रहा, जब हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत का अ़हद आया आप ने उन्हें इस से मन्अ़ किया और फ़रमाया क़ैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो इस से बाज़ आओ वरना अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे, वोह बाज़ न आए, आप ने दुआ़ फ़रमाई **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया, अ़क़्लो हवास तो उन के बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई, बदनों से बदबू निकलने लगी, अपने इस हाल पर रोते रोते तीन रोज़ में सब हलाक हो गए उन की नस्ल बाक़ी न रही, येह सत्तर हज़ार के क़रीब थे। बनी इसराईल का दूसरा गुरौह जो बारह हज़ार के क़रीब था उन्हें इस अ़मल से मन्अ़ करता रहा जब येह न माने तो उन्हों ने उन के और अपने महल्लों के दरमियान दीवार बना कर अ़लाहदगी कर ली उन सब ने नजात पाई। बनी इसराईल का तीसरा गुरौह साकित (ख़ामोश) रहा। उस के हक़ में हज़रते इब्ने अ़ब्बास के सामने इक्रिमा ने कहा कि वोह मग़फ़ूर हैं क्यूं कि अम्रुन बिल मा'रूफ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ का अदा करना कुल का हुक्म रखता है, उन के सुकूत की वज्ह येह थी कि येह उन के पन्द पज़ीर होने (नसीहत क़बूल करने) से मायूस थे, इक्रिमा की येह तक़रीर हज़रते इब्ने अ़ब्बास को बहुत पसन्द आई और आप ने सुरूर से उठ कर उन से मुआ़नक़ा किया और उन की पेशानी को बोसा दिया। (فتح العزیز) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सुरूर का मुआ़नक़ा सुन्नते सहाबा है इस के लिये सफ़र से आना और ग़ैबत के बा'द मिलना शर्त नहीं। **116 :** बनी इसराईल में आ़मील नामी एक मालदार था उस के चचाज़ाद भाई ने ब तमए विरासत उस को क़त्ल कर के दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुब्ह को उस के ख़ून का मुद्दई बना, वहां के लोगों ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि आप दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआ़ला हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर फ़रमाए, इस पर हुक्म सादिर हुवा कि एक गाय ज़ब्ह कर के उस का कोई हिस्सा मक़्तूल के मारें वोह ज़िन्दा हो कर क़ातिल को बता देगा। **117 :** क्यूं कि मक़्तूल का हाल मा'लूम होने और गाय के ज़ब्ह में कोई मुनासबत मा'लूम नहीं होती। **118 :** ऐसा जवाब जो सुवाल से रब्त़ न रखे जाहिलों का काम है या येह मा'ना हैं कि मुहाकमा

www.dawateislami.net

هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ

कैसी है कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है न बूढ़ी और न औसर (बछिया) बल्कि इन दोनों के

ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۸﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا

बीच में तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये हमें बता दे उस

لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ

का रंग क्या है कहा वोह फ़रमाता है वोह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती (गहरी चमकदार)

النّٰظِرِيْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ

देखने वालों को ख़ुशी देती बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को

عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

शुबा पड़ गया और **अल्लाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे[119] कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ

जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं

ع ٨ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع وَاِذْ

बोले अब आप ठीक बात लाए[120] तो उसे ज़ब्ह किया और ज़ब्ह करते मा'लूम न होते थे[121] और जब

(इन्साफ़ त़लबी) के मौक़अ़ पर इस्तिहज़ा जाहिलों का काम है अम्बिया की शान इस से बरतर है। अल क़िस्सा जब बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़ब्ह करना लाज़िम है तो उन्हों ने आप से उस के औसाफ़ दरयाफ़्त किये। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बह़स न निकालते तो जो गाय ज़ब्ह कर देते काफ़ी हो जाती। **119 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया अगर वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه न कहते तो कभी वोह गाय न पाते। **मस्अला :** हर नेक काम में اِنْ شَآءَ اللّٰه कहना मुस्तह़ब व बाइसे बरकत है। **120 :** या'नी अब तशफ़्फ़ी हुई और पूरी शान व सिफ़त मा'लूम हुई। फिर उन्हों ने गाय की तलाश शुरूअ़ की, उन अत़राफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी, उस का ह़ाल येह है कि बनी इसराईल में एक सालेह़ शख़्स थे उन का एक सग़ीरुस्सिन बच्चा था और उन के पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था, उन्हों ने उस की गरदन पर मोहर लगा कर **अल्लाह** के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे ह़क़ में अ़र्ज़ किया : या रब ! मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिये तेरे पास वदीअ़त (अमानत) रखता हूं जब येह फ़रज़न्द बड़ा हो येह इस के काम आए, उन का तो इन्तिक़ाल हो गया, बछिया जंगल में ब ह़िफ़्ज़े इलाही परवरिश पाती रही। येह लड़का बड़ा हुवा और बि फ़ज़्लिही सालेह़ व मुत्तक़ी हुवा, मां का फ़रमां बरदार था, एक रोज़ इस की वालिदा ने कहा : ऐ नूरे नज़र ! तेरे बाप ने तेरे लिये फ़ुलां जंगल में ख़ुदा के नाम एक बछिया छोड़ दी है, वोह अब जवान हो गई उस को जंगल से ला और **अल्लाह** से दुआ़ कर कि वोह तुझे अ़त़ा फ़रमाए, लड़के ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अ़लामतें उस में पाईं और उस को **अल्लाह** की क़सम दे कर बुलाया वोह ह़ाज़िर हुई, जवान उस को वालिदा की ख़िदमत में लाया, वालिदा ने बाज़ार में ले जा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और येह शर्त़ की, कि सौदा होने पर फिर इस की इजाज़त ह़ासिल की जाए, उस ज़माने में गाय की क़ीमत उन अत़राफ़ में तीन दीनार ही थी, जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़िरिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उस ने गाय की क़ीमत छ[6] दीनार लगा दी मगर इस शर्त़ से कि जवान वालिदा की इजाज़त का पाबन्द न हो, जवान ने येह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा, उस की वालिदा ने छ[6] दीनार क़ीमत मन्ज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बैअ़ में फिर दोबारा अपनी मरज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त़ की। जवान फिर बाज़ार में आया इस मरतबा फ़िरिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न

www.dawateislami.net

قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۷۲﴾ ج

तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उस की तोहमत डालने लगे और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ

तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो[122] **अल्लाह** यूंही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ

कि कहीं तुम्हें अक़्ल हो[123] फिर इस के बा'द तुम्हारे दिल सख़्त हो गए[124] तो वोह

كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ

पथ्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा करें (सख़्त) और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह

الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا

निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो

يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ

अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं[125] और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं तो ऐ मुसल्मानो ! क्या तुम्हें येह तृमअ़ है

रखो, जवान ने न माना और वालिदा को इत्तिलाअ़ दी वोह साहिबे फ़िरासत समझ गई कि येह ख़रीदार नहीं कोई फ़िरिश्ता है जो आज़्माइश के लिये आता है, बेटे से कहा कि अब की मरतबा उस ख़रीदार से येह कहना कि आप हमें इस गाय के फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं ? लड़के ने येही कहा, फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि अभी इस को रोके रहो, जब बनी इसराईल ख़रीदने आएं तो इस की क़ीमत येह मुक़र्रर करना कि इस की खाल में सोना भर दिया जाए, जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्तजू करते हुए उस के मकान पर पहुंचे तो येही क़ीमत तै की और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़मानत पर वोह गाय बनी इसराईल के सिपुर्द की। **मसाइल :** इस वाक़िए से कई मस्अले मा'लूम हुए (1) जो अपने इयाल को **अल्लाह** के सिपुर्द करे **अल्लाह** तआ़ला उस की ऐसी उ़म्दा परवरिश फ़रमाता है। (2) जो अपना माल **अल्लाह** के भरोसे पर उस की अमानत में दे **अल्लाह** उस में बरकत देता है। (3) वालिदैन की फ़रमां बरदारी **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है। (4) ग़ैबी फ़ैज़ क़ुरबानी व ख़ैरात करने से हासिल होता है। (5) राहे ख़ुदा में नफ़ीस माल देना चाहिये। (6) गाय की क़ुरबानी अफ़्ज़ल है। **121 :** बनी इसराईल के मुसल्सल सुवालात और अपनी रुस्वाई के अन्देशे और गाय की गिरानिये क़ीमत से येह ज़ाहिर होता था कि वोह ज़ब्ह का क़स्द नहीं रखते मगर जब उन के सुवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़ब्ह करना ही पड़ा। **122 :** बनी इसराईल ने गाय ज़ब्ह कर के उस के किसी उ़ज़्व से मुर्दा को मारा वोह ब हुक्मे इलाही ज़िन्दा हुवा उस के हल्क़ से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे उस ने अपने चचाज़ाद भाई का बताया कि इस ने मुझे क़त्ल किया, अब उस को भी इक़रार करना पड़ा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर क़िसास का हुक्म फ़रमाया, इस के बा'द शरअ़ का हुक्म हुवा कि **मस्अला :** क़ातिल मक़्तूल की मीरास से महरूम रहेगा। **मस्अला :** लेकिन अगर आ़दिल ने बाग़ी को क़त्ल किया या किसी ह़म्ला आवर से जान बचाने के लिये मुदाफ़अ़त की उस में वोह क़त्ल हो गया तो मक़्तूल की मीरास से महरूम न होगा। **123 :** और तुम समझो कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुर्दे ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना ह़क़ है। **124 :** और ऐसे बड़े निशानहाए क़ुदरत से तुम ने इब्रत हासिल न की। **125 :** ब ईं हमा तुम्हारे दिल असर पज़ीर नहीं, पथ्थरों में भी **अल्लाह** ने इदराक व शुऊ़र दिया है उन्हें ख़ौफ़े इलाही होता है वोह तस्बीह़ करते हैं "اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ" मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो बि'सत से पहले मुझे सलाम किया करता था।" तिरमिज़ी में हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है : मैं सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के साथ अतराफ़े मक्का में गया जो दरख़्त या पहाड़ सामने आता था "اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ" (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) अ़र्ज़ करता था।

www.dawateislami.net

اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ

कि येह यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और इन में का तो एक गुरोह वोह था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर

يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ

समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते[126] और जब मुसल्मानों से

اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْۤا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ

मिलें तो कहें हम ईमान लाए[127] और जब आपस में अकेले हों तो कहें वोह इल्म जो अल्लाह ने तुम पर खोला मुसल्मानों

بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾

से बयान किये देते हो कि उस से तुम्हारे रब के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَمِنْهُمْ

क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं और उन में कुछ

النصف

اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾

अनपढ़ हैं जो किताब[128] को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना[129] या कुछ अपनी मन घड़त और वोह निरे गुमान में हैं

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا

तो ख़राबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कहें येह

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ

ख़ुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम हासिल करें[130] तो ख़राबी है उन के लिये उन के

126 : जैसे उन्हों ने तौरैत में तह़रीफ़ की और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त बदल डाली। **127 : शाने नुज़ूल :** येह आयत उन यहूदियों की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ज़माने में थे। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : यहूदी मुनाफ़िक़ जब सह़ाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिस पर तुम ईमान लाए उस पर हम भी ईमान लाए, तुम ह़क़ पर हो और तुम्हारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم सच्चे हैं उन का क़ौल ह़क़ है, हम उन की ना'त व सिफ़त अपनी किताब तौरैत में पाते हैं उन लोगों पर रुअसाए यहूद मलामत करते थे, इस का बयान "وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ" में है। (خازن) **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ह़क़पोशी और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के औसाफ़ का छुपाना और कमालात का इन्कार करना यहूद का त़रीक़ा है आज कल के बहुत से गुमराहों की येही आ़दत है। **128 :** किताब से तौरैत मुराद है। **129 :** "اَمَانِی" (अमानी) اُمْنِيَّہ (उम्निय्या) की जम्अ़ है और इस के मा'नी ज़बानी पढ़ने के हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि आयत के मा'ना येह हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना बिग़ैर मा'ना समझे। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना भी बयान किये हैं कि اَمَانِی से वोह झूटी घड़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने उ़लमा से सुन कर बे तह़क़ीक़ मान ली थीं। **130 : शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उ़लमाए तौरैत व रुअसाए यहूद को क़वी अन्देशा हो गया कि उन की रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्यूं कि तौरैत में हुज़ूर का ह़ुल्या और औसाफ़ मज़्कूर हैं जब लोग हुज़ूर को इस के मुत़ाबिक़ पाएंगे फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने उ़लमा व रुअसा को छोड़ देंगे, इस अन्देशे से उन्हों ने तौरैत में

www.dawateislami.net

اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ
हाथों के लिखे से और ख़राबी उन के लिये उस कमाई से और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर

اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ
गिनती के दिन[131] तुम फ़रमा दो क्या ख़ुदा से तुम ने कोई अ़ह्द ले रखा है जब तो **अल्लाह** हरगिज़ अपना अ़ह्द ख़िलाफ़ न

عَهْدَهٗۤ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۰﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً
करेगा[132] या ख़ुदा पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं हां क्यूं नहीं जो गुनाह कमाए

وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِیْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۱﴾
और उस की ख़ता उसे घेर ले[133] वोह दोज़ख़ वालों में है उन्हें हमेशा उस में रहना

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा

خٰلِدُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا ع ٩ ١١ ٩
उस में रहना और जब हम ने बनी इसराईल से अ़ह्द लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न

اللّٰهَ ۟ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो[134] और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से

तह़रीफ़ व तग़्यीर कर डाली और हुल्या शरीफ़ बदल दिया, मसलन तौरैत में आप के औसाफ़ येह लिखे थे कि आप ख़ूबरू हैं, बाल ख़ूब सूरत, आंखें सुर्मगीं, क़द मियाना है, इस को मिटा कर उन्हों ने येह बनाया कि वोह बहुत दराज़ क़ामत हैं, आंखें कन्जी नीली, बाल उलझे हैं येही अ़वाम को सुनाते येही किताबे इलाही का मज़्मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस के ख़िलाफ़ पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे हमारे गिरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़र्क़ न आएगा। **131 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہ से मरवी है कि यहूद कहते थे कि वोह दोज़ख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये जितने अ़र्से उन के आबाओ अज्दाद ने गौसाला (बछड़ा) पूजा था और वोह चालीस रोज़ हैं इस के बा'द वोह अ़ज़ाब से छूट जाएंगे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **132 :** क्यूं कि किज़्ब बड़ा ऐ़ब है और ऐ़ब **अल्लाह** तआ़ला पर मुह़ाल, लिहाज़ा उस का किज़्ब तो मुम्किन नहीं लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम से सिर्फ़ चालीस रोज़ के अ़ज़ाब के बा'द छोड़ देने का वा'दा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा क़ौल बात़िल हुवा। **133 :** इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इह़ात़ा करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्र व शिर्क ही पर उस को मौत आए क्यूं कि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनाहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिये कि ईमान जो आ'ज़म त़ाअ़त है वोह इस के साथ है। **134 : अल्लाह** तआ़ला ने अपनी इ़बादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन के साथ भलाई के येह मा'ना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से इन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से इन की ख़िदमत में दरेग़ न करे जब इन्हें ज़रूरत हो इन के पास ह़ाज़िर रहे। **मस्अला :** अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे इन की ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है। **मस्अला :** वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते। वालिदैन के साथ एहसान के त़रीक़े जो अह़ादीस से साबित हैं येह हैं कि तहे दिल से उन के साथ मह़ब्बत रखे रफ़्तारो गुफ़्तार, निशस्तो बरख़ास्त में अदब लाज़िम जाने, उन की शान में ता'ज़ीम के लफ़्ज़ कहे, उन को राज़ी करने की सई करता रहे, अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए, उन के मरने के बा'द उन की वसिय्यतें जारी करे, उन के लिये फ़ातिह़ा, सदक़ात, तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे, **अल्लाह** तआ़ला

www.dawateislami.net

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّیْتُمْ

और लोगों से अच्छी बात कहो[135] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए[136]

اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ

मगर तुम में के थोड़े[137] और तुम रू गर्दां हो[138] और जब हम ने तुम से अ़हद लिया

لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِیَارِكُمْ ثُمَّ

कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर

اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ

तुम ने इस का इक़रार किया और तुम गवाह हो फिर येह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे

وَتُخْرِجُوْنَ فَرِیْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِیَارِهِمْ٘ تَظٰهَرُوْنَ عَلَیْهِمْ بِالْاِثْمِ

और अपने में एक गुरौह को उन के वत़न से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह

وَالْعُدْوَانِ ؕ وَ اِنْ یَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَیْكُمْ

और ज़ियादती में और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उन का निकालना तुम पर

اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا

ह़राम है[139] तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते और कुछ से इन्कार करते हो तो जो

से उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ करे, हफ़्तावार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे। (فتح العزیز) वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों के आ़दी हों या किसी बद मज़्हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को ब नरमी इस्लाह़ व तक़्वा और अ़क़ीदए ह़क़्क़ा की त़रफ़ लाने की कोशिश करता रहे। (خازن) **135 :** अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदियों से रोकना है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की शान में ह़क़ और सच बात कहो, अगर कोई दरयाफ़्त करे तो हुज़ूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो, आप की ख़ूबियां न छुपाओ। **136 :** अ़ह्द के बा'द **137 :** जो ईमान ले आए मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब कि इन्हों ने तो अ़ह्द पूरा किया। **138 :** और तुम्हारी क़ौम की आ़दत ही ए'राज़ करना और अ़ह्द से फिर जाना है। **139 : शाने नुज़ूल :** तौरैत में बनी इसराईल से अ़ह्द लिया गया था कि वोह आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें, वत़न से न निकालें और जो बनी इसराईल किसी की क़ैद में हो उस को माल दे कर छुड़ा लें, इस अ़ह्द पर उन्हों ने इक़रार भी किया, अपने नफ़्स पर शाहिद भी हुए लेकिन क़ाइम न रहे और इस से फिर गए। सूरते वाक़िआ़ येह है कि नवाह़े मदीना में यहूद के दो फ़िर्क़े "बनी क़ुरैज़ा" और "बनी नज़ीर" सुकूनत रखते थे और मदीना शरीफ़ में दो फ़िर्क़े "औस व ख़ज़रज" रहते थे, बनी क़ुरैज़ा औस के ह़लीफ़ थे और बनी नज़ीर ख़ज़रज के या'नी हर एक क़बीले ने अपने ह़लीफ़ के साथ क़समा क़समी की थी (यक़ीन दिहानी कराई थी) कि अगर हम में से किसी पर कोई ह़म्ला आवर हो तो दूसरा उस की मदद करेगा। औस और ख़ज़रज बाहम जंग करते थे, बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नज़ीर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे और ह़लीफ़ के साथ हो कर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे, बनी क़ुरैज़ा बनी नज़ीर को और वोह बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उन के घर वीरान कर देते थे, उन्हें उन के मसाकिन से निकाल देते थे लेकिन जब उन की क़ौम के लोगों को उन के ह़लीफ़ क़ैद करते थे तो वोह उन को माल दे कर छुड़ा लेते थे। मसलन अगर बनी नज़ीर का कोई शख़्स औस के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस को माली मुआ़वज़ा दे कर उस को छुड़ा लेते बा वुजूदे कि अगर वोही शख़्स लड़ाई के वक़्त उन के मौक़अ़ पर आ जाता तो उस के क़त्ल

جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج

तुम में ऐसा करे उस का बदला क्या है मगर येह कि दुन्या में रुस्वा हो[140]

وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰۤى اَشَدِّ الْعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

और क़ियामत में सख़्त तर अ़ज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से

تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز

बे ख़बर नहीं[141] येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

तो न उन पर से अ़ज़ाब हलका और न उन की मदद की जाए और बेशक हम ने मूसा को

الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

किताब अ़ता की[142] और इस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे[143] और हम ने ईसा बिन मरयम को

الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰۤى

खुली निशानियां अ़ता फ़रमाईं[144] और पाक रूह से[145] उस की मदद की[146] तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वोह ले कर आए जो तुम्हारे

में हरगिज़ दरेग़ न करते। इस फे'ल पर मलामत की जाती है कि जब तुम ने अपनों की ख़ूनरेज़ी न करने, उन को बस्तियों से न निकालने, उन के असीरों को छुड़ाने का अ़हद किया था तो इस के क्या मा'ना कि क़त्ल व इख़्राज में तो दर गुज़र न करो और गिरिफ़्तार हो जाएं तो छुटाते फिरो, अ़हद में से कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मा'ना रखता है? जब तुम क़त्ल व इख़्राज से बाज़ न रहे तो तुम ने अ़हद शिकनी की और हराम के मुरतकिब हुए और इस को हलाल जान कर काफ़िर हो गए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़ुल्म व हराम पर इमदाद करना भी हराम है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि हरामे क़त्ई को हलाल जानना कुफ़्र है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि किताबे इलाही के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का न मानना और कुफ़्र है। **फ़ाएदा :** इस में येह तम्बीह भी है कि जब अह़कामे इलाही में से बा'ज़ का मानना बा'ज़ का न मानना कुफ़्र हुवा तो यहूद का ह़ज़रते सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इन्कार करने के साथ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता। **140 :** दुन्या में तो येह रुस्वाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा 3 हिजरी में मारे गए, एक रोज़ में इन के सात सो आदमी क़त्ल किये गए थे और बनी नज़ीर इस से पहले ही जला वत़न कर दिये गए, ह़लीफ़ों की ख़ातिर अ़हदे इलाही की मुख़ालफ़त का येह वबाल था। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी की त़रफ़ दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना इलावा उख़्रवी अ़ज़ाब के दुन्या में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइस होता है। **141 :** इस में जैसी ना फ़रमानों के लिये वईदे शदीद है कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे अफ़्आ़ल से बे ख़बर नहीं है तुम्हारी ना फ़रमानियों पर अ़ज़ाबे शदीद फ़रमाएगा ऐसे ही इस आयत में मोमिनीन व सालिहीन के लिये मुज़्दा है कि उन्हें आ'माले ह़सना की बेहतरीन जज़ा मिलेगी। (تفسیر کبیر) **142 :** इस किताब से तौरैत मुराद है जिस में **अल्लाह** तआ़ला के तमाम अ़हद मज़्कूर थे सब से अहम अ़हद येह थे कि हर ज़माने के पैग़म्बरों की इत़ाअ़त करना, उन पर ईमान लाना और उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना। **143 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक मुतवातिर अम्बिया आते रहे, उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई है, येह सब ह़ज़रात शरीअ़ते मूसवी के मुह़ाफ़िज़ और उस के अह़काम जारी करने वाले थे, चूंकि ख़ातमुल अम्बिया के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस लिये शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह की हिफ़ाज़त व इशाअ़त की ख़िदमत रब्बानी उ़लमा और मुजद्दिदीने मिल्लत को अ़त़ा हुई। **144 :** इन निशानियों से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात मुराद हैं जैसे मुर्दे ज़िन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरा। **145 :** "रूहे क़ुदुस" से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं कि रूहानी हैं वह्य लाते हैं जिस से क़ुलूब की ह़यात है, वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ रहने पर मामूर थे, आप 33 साल की उ़म्र शरीफ़ में आस्मान पर उठा लिये गए उस वक़्त तक ह़ज़रते जिब्रील सफ़र, ह़ज़र में कभी आप से जुदा न हुए, ताईदे रूहुल क़ुदुस ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की जलील फ़ज़ीलत है। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े में हुज़ूर के बा'ज़ उम्मतियों को भी ताईदे रूहुल क़ुदुस मुयस्सर हुई। सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में है कि ह़ज़रते ह़स्सान رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه के लिये मिम्बर बिछाया जाता

www.dawateislami.net

أَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ ۡ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا

नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन (अम्बिया) में एक गुरोह को तुम झुटलाते और एक गुरोह को शहीद करते हो[147] और यहूदी बोले हमारे

قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۗ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ وَ

दिलों पर पर्दे पड़े हैं[148] बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं[149] और

لَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ

जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है[150] और इस से पहले उसी नबी

يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا

के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे[151] तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो

بِهِ ۡ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ

बैठे[152] तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर किस बुरे मोलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि

يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

अल्लाह के उतारे से मुन्किर हों[153] इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे

مِنْ عِبَادِهِ ۚ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ

वह्य उतारे[154] तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए[155] और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का

वोह ना'त शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उन के लिये फ़रमाते : "اَللّٰهُمَّ اَيِّدْهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ۔" (ऐ **अल्लाह** ! हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए इन की मदद फ़रमा) **146 :** फिर भी ऐ यहूद ! तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ न आया। **147 :** यहूद पैग़म्बरों के अह़काम अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पा कर उन्हें झुटलाते और मौक़अ़ पाते तो क़त्ल कर डालते थे जैसे कि उन्हों ने ह़ज़रते शा'या व ज़करिय्या (عَلَيْهِمَا السَّلَام) और बहुत से अम्बिया को शहीद किया, सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के भी दर पै रहे, कभी आप पर जादू किया, कभी ज़हर दिया, त़रह़ त़रह़ के फ़रेब ब इरादए क़त्ल किये। **148 :** यहूद ने येह इस्तिहज़ाअन कहा था उन की मुराद येह थी कि हुज़ूर की हिदायत को इन के दिलों तक राह नहीं है, **अल्लाह** तआ़ला ने इस का रद फ़रमाया कि बे दीन झूटे हैं, कुलूब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ित़रत पर पैदा फ़रमाए इन में क़बूले ह़क़ की लियाक़त रखी, इन के कुफ़्र की शामत है कि इन्हों ने सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का ए'तिराफ़ करने के बा'द इन्कार किया, **अल्लाह** तआ़ला ने इन पर ला'नत फ़रमाई इस का असर है कि क़बूले ह़क़ की ने'मत से मह़रूम हो गए। **149 :** येही मज़मून दूसरी जगह इर्शाद हुवा : "بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا۔" (बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े) **150 :** सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ के बयान में। (كبير وخازن) **151 : शाने नुज़ूल :** सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत और कुरआने करीम के नुज़ूल से क़ब्ल यहूद अपने ह़ाजात के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ़ करते और काम्याब होते थे और इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا وَانْصُرْنَا بِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ" या रब ! हमें नबिय्ये उम्मी के सदक़े में फ़त्ह़ो नुसरत अ़त़ा फ़रमा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूलाने ह़क़ के वसीले से दुआ़ क़बूल होती है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर से क़ब्ल जहान में हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से ख़ल्क़ की ह़ाजत रवाई होती थी। **152 :** येह इन्कार इनाद व ह़सद और हुब्बे रियासत की वज्ह से था। **153 :** या'नी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिये वोही करना चाहिये जिस से रिहाई की उम्मीद हो। यहूद ने येह बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** के नबी और उस की किताब के मुन्किर हो गए। **154 :** यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नुबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वोह मह़रूम रहे, बनी इस्माईल नवाज़े गए तो ह़सद से मुन्किर हो गए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद ह़राम और मह़रूमियों का बाइस है। **155 :** या'नी अन्वाओ़ अक़्साम के ग़ज़ब के

www.dawateislami.net

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ

अ़ज़ाब है[156] और जब उन से कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ[157] तो कहते हैं वोह जो हम पर उतरा

بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ يَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस पर ईमान लाते हैं[158] और बाक़ी से मुन्किर होते हैं ह़ालां कि वोह ह़क़ है उन के पास वाले की तस्दीक़

مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ

फ़रमाता हुवा[159] तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यूं शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَ لَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ

पर ईमान था[160] और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां ले कर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने इस के बा'द[161] बछड़े

مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे[162] और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया[163] और कोहे त़ूर को तुम्हारे सरों पर

الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا ۗ

बुलन्द किया लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना

وَ اُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ

और उन के दिलों में बछड़ा रच रहा था उन के कुफ़्र के सबब तुम फ़रमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को

اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ

तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो[164] तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर

عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर

सज़ावार हुए। 156 : इस से मा'लूम हुवा कि ज़िल्लतो इहानत वाला अ़ज़ाब कुफ़्फ़ार के साथ ख़ास है, मोमिनीन को गुनाहों की वज्ह से अ़ज़ाब हुवा भी तो ज़िल्लतो इहानत के साथ न होगा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : "وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ" (और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है) 157 : इस से कुरआने पाक और तमाम वोह किताबें और सह़ाइफ़ मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाए या'नी सब पर ईमान लाओ। 158 : इस से उन की मुराद तौरैत है। 159 : या'नी तौरैत पर ईमान लाने का दा'वा ग़लत़ है चूंकि कुरआने पाक जो तौरैत का मुसद्दिक़ (तस्दीक़ करने वाला) है इस का इन्कार तौरैत का इन्कार हो गया। 160 : इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि अगर तौरैत पर ईमान रखते तो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को हरगिज़ शहीद न करते। 161 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बा'द। 162 : इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि शरीअ़ते मूसवी के मानने का दा'वा झूटा है अगर तुम मानते तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा और यदे बैज़ा वग़ैरा खुली निशानियों के देखने के बा'द गौसाला परस्ती (बछड़े की पूजा) न करते। 163 : तौरैत के अह़काम पर अ़मल करने का। 164 : इस में भी उन के दा'वाए ईमान की तक्ज़ीब है।

www.dawateislami.net

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

सच्चे हो[165] और हरगिज़ कभी इस की आरज़ू न करेंगे[166] उन बद आ'मालियों के सबब जो आगे कर चुके[167] और **अल्लाह** ख़ूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ

ज़ालिमों को और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ

एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये[168] और वोह उसे अज़ाब

مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ

से दूर न करेगा इतनी उ़म्र दिया जाना और **अल्लाह** उन के कौतक (बुरे अ़मल) देख रहा है तुम फ़रमा दो जो कोई

عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

जिब्रील का दुश्मन हो[169] तो उस (जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह कु़रआन उतारा अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बिशारत मुसल्मानों को[170] जो कोई दुश्मन हो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों

معانقہ ٢

165 : यहूद के बातिल दआ़वी (झूटे दा'वों) में से एक येह दा'वा था कि जन्नत ख़ास उन्हीं के लिये है इस का रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे ज़ो'म में जन्नत तुम्हारे लिये ख़ास है और आख़िरत की त़रफ़ से तुम्हें इत़्मीनान है, आ'माल की ह़ाजत नहीं तो जन्नती ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्यवी मसाइब क्यूं बरदाश्त करते हो ? मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दा'वे की बिना पर तुम्हारे लिये बाइ़से राह़त है, अगर तुम ने मौत की तमन्ना न की तो येह तुम्हारे किज़्ब की दलील होगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता। **166 :** येह ग़ैब की ख़बर और मो'जिज़ा है कि यहूद बा वुजूद निहायत ज़िद और शिद्दते मुख़ालफ़त के भी तमन्नाए मौत का लफ़्ज़ ज़बान पर न ला सके। **167 :** जैसे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान और कु़रआन के साथ कुफ़्र और तौरैत की तह़रीफ़ वग़ैरा। **मस्अला :** मौत की मह़ब्बत और लिक़ाए परवर दगार का शौक़ **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ हर नमाज़ के बा'द दुआ़ फ़रमाते : ''اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھَادَۃً فِیْ سَبِیْلِکَ وَوَفَاۃً بِبَلَدِ رَسُوْلِکَ'' या रब ! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा। बिल उ़मूम तमाम सह़ाबए किबार और बिल ख़ुसूस शुहदाए बद्रो उहुद अस्ह़ाबे बैअ़ते रिज़्वान मौत फ़ी सबीलिल्लाह की मह़ब्बत रखते थे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार रुस्तम बिन फ़र्रुख़ ज़ाद के पास जो ख़त़ भेजा उस में तह़रीर फ़रमाया था : ''اِنَّ مَعِیَ قَوْمًا یُّحِبُّوْنَ الْمَوْتَ کَمَا یُحِبُّ الْاَعَاجِمُ الْخَمْرَ'' या'नी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मह़बूब रखती है जितना अ़जमी शराब को। इस में लत़ीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को मह़ब्बते दुन्या के दीवाने पसन्द करते हैं और अहलुल्लाह मौत को मह़बूबे ह़क़ीक़ी के विसाल का ज़रीआ़ समझ कर मह़बूब जानते हैं। फ़िल जुम्ला अहले ईमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर तूले ह़यात की तमन्ना भी करें तो वोह इस लिये होती है कि नेकियां करने के लिये कुछ और अ़र्सा मिल जाए जिस से आख़िरत के लिये ज़ख़ीरए सआ़दत ज़ियादा कर सकें अगर गुज़श्ता अय्याम में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लें। **मस्अला :** सिह़ाह़ की ह़दीस में है कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे। और दर ह़क़ीक़त ह़वादिसे दुन्या से तंग आ कर मौत की दुआ़ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ व ना जाइज़ है। **168 :** मुश्रिकीन का एक गुरोह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं : ''जिह हज़ार साल'' या'नी हज़ार बरस जियो, मत़लब येह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं, यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें ह़िर्से ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है। **169 : शाने नुज़ूल :** यहूद के आ़लिम अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिय्या ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा : आप के पास आस्मान से कौन फ़िरिश्ता आता है ? फ़रमाया : जिब्रील। इब्ने सूरिय्या ने कहा : वोह हमारा दुश्मन है, अ़ज़ाबे शिद्दत और ख़सफ़ उतारता है, कई मरतबा हम से अ़दावत कर चुका है, अगर आप के पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते। **170 :** तो यहूद की अ़दावत जिब्रील के साथ बे मा'ना है बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वोह जिब्रीले अमीन से मह़ब्बत करते और उन के शुक्र गुज़ार होते कि वोह ऐसी किताब लाए जिस से उन की किताबों की तस्दीक़ होती है। और ''بُشْرٰی لِلْمُؤْمِنِیْنَ'' (बिशारत मुसल्मानों को)

www.dawateislami.net

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۸﴾ وَلَقَدْ

और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का[171] और बेशक

اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿۹۹﴾ اَوَكُلَّمَا

हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें उतारीं[172] और इन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग और क्या जब कभी

عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

कोई अ़हद करते हैं उन में एक फ़रीक़ इसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं[173]

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ

और जब उन के पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल[174] उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता[175] तो किताब

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ

वालों से एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी[176] गोया वोह

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ

कुछ इ़ल्म ही नहीं रखते[177] और उस के पैरव हुए जो शैत़ान पढ़ा करते थे सल्त़नते सुलैमान के ज़माने में[178] और

फ़रमाने में यहूद का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत व बिशारत ला रहे हैं फिर भी तुम अ़दावत से बाज़ नहीं आते। **171 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया व मलाएका की अ़दावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और महबूबाने ह़क़ से दुश्मनी ख़ुदा से दुश्मनी करना है। **172 : शाने नुज़ूल :** येह आयत इब्ने सूरिय्या यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई वाज़ेह़ आयत नाज़िल हुई जिस का हम इत्तिबाअ़ करते। **173 : शाने नुज़ूल :** येह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूद को अल्लाह तआ़ला के वोह अ़हद याद दिलाए जो हुज़ूर पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ किये थे तो इब्ने सैफ़ ने अ़हद ही का इन्कार कर दिया। **174 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। **175 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तौरैत व ज़बूर वग़ैरा की तस्दीक़ फ़रमाते थे और ख़ुद इन किताबों में भी हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी की बिशारत और आप के औसाफ़ व अह़वाल का बयान था इस लिये हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी और आप का वुजूदे मुबारक ही इन किताबों की तस्दीक़ है तो ह़ाल इस का मुक़्तज़ी था कि हुज़ूर की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़ियादा पुख़्ता होता मगर इस के बर अ़क्स उन्हों ने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया। सुद्दी का क़ौल है कि जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो यहूद ने तौरैत से मुक़ाबला कर के तौरैत व क़ुरआन को मुत़ाबिक़ पाया तो तौरैत को भी छोड़ दिया। **176 :** या'नी उस किताब की त़रफ़ बे इल्तिफ़ाती की। सुफ़्यान बिन उ़यैना का क़ौल है कि यहूद ने तौरैत को ह़रीर व दीबा के रेशमी ग़िलाफ़ों में ज़र व सीम के साथ मुत़ल्ला व मुज़य्यन कर के रख लिया और उस के अह़काम को न माना। **177 :** इन आयात से मा'लूम होता है कि यहूद के चार फ़िर्क़े थे : **एक** तौरैत पर ईमान लाया और उस ने उस के हुक़ूक़ को भी अदा किया, येह मोमिनीने अहले किताब हैं इन की ता'दाद थोड़ी है और "اَكْثَرُهُمْ" से इन का पता चलता है। **दूसरा** फ़िर्क़ा जिस ने बिल ए'लान तौरैत के अ़हद तोड़े उस की हुदूद से बाहर हुए, सरकशी इख़्तियार की "نَبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ" (एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी) में उन का बयान है। **तीसरा** फ़िर्क़ा वोह जिस ने अ़हद शिकनी का ए'लान तो न किया लेकिन अपनी जहालत से अ़हद शिकनी करते रहे उन का ज़िक्र "بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ" (बल्कि उन में से बहुतेरों को ईमान नहीं) में है। **चौथे** फ़िर्क़े ने ज़ाहिरी त़ौर पर तो अ़हद माने और बात़िन में बग़ावत व इनाद से मुख़ालफ़त करते रहे येह तसन्नोअ़ से जाहिल बनते थे "كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ" (गोया वोह कुछ इ़ल्म ही नहीं रखते) में इन पर दलालत है। **178 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में बनी इसराईल जादू सीखने में मश्ग़ूल हुए तो आप ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़्न कर दीं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बा'द शयात़ीन ने वोह किताबें निकलवा कर लोगों से कहा कि सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام इसी

www.dawateislami.net

مَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ق

सुलैमान ने कुफ़्र न किया[179] हां शैतान काफ़िर हुए[180] लोगों को जादू सिखाते हैं

وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ

और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़िरिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ

مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ

न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो[181] तो उन से

مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ

सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औ़रत में और इस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते

مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَ

किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से[182] और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ़ न देगा और

لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ قف وَلَبِئْسَ مَا

बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह

شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

जिस के बदले उन्हों ने अपनी जानें बेचीं किसी त़रह उन्हें इ़ल्म होता[183] और अगर वोह ईमान लाते[184] और परहेज़ गारी करते

لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ع ۱۲ ۲

तो अल्लाह के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी त़रह उन्हें इ़ल्म होता ऐ ईमान वालो[185]

के ज़ोर से सल्त़नत करते थे, बनी इसराईल के सुलहा व उ़लमा ने तो इस का इन्कार किया, लेकिन उन के जुहहाल जादू को हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का इ़ल्म बता कर इस के सीखने पर टूट पड़े अम्बिया की किताबें छोड़ दीं और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर मलामत शुरूअ़ की, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक इसी ह़ाल पर रहे अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर पर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **179 :** क्यूं कि वोह नबी हैं और अम्बिया कुफ़्र से क़त़्अ़न मा'सूम होते हैं उन की त़रफ़ सेह़र की निस्बत बात़िल व ग़लत़ है क्यूं कि सेह़र का कुफ़्रिय्यात से ख़ाली होना नादिर है। **180 :** जिन्हों ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर जादूगरी की झूटी तोहमत लगाई। **181 :** या'नी जादू सीख कर और इस पर अ़मल व ए'तिक़ाद कर के और इस को मुबाह़ जान कर काफ़िर न बन। येह जादू फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के दरमियान इम्तियाज़ व आज़्माइश के लिये नाज़िल हुवा, जो इस को सीख कर इस पर अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा, बशर्ते कि इस जादू में मुनाफ़िये ईमान कलिमात व अफ़्आ़ल हों और जो इस से बचे न सीखे, या सीखे और इस पर अ़मल न करे और इस के कुफ़्रिय्यात का मो'तक़िद न हो वोह मोमिन रहेगा, येही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का क़ौल है। **मस्अला :** जो सेह़र कुफ़्र है उस का आ़मिल अगर मर्द हो क़त्ल कर दिया जाएगा। **मस्अला :** जो सेह़र कुफ़्र नहीं मगर उस से जानें हलाक की जाती हैं उस का आ़मिल क़ुत़्त़ाए त़रीक़ (डाकू, राहज़नों) के हुक्म में है मर्द हो या औ़रत। **मस्अला :** जादूगर की तौबा क़बूल है। (مدارک) **182 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह तआ़ला है और तासीरे अस्बाब तह़्ते मशिय्यत है। **183 :** अपने अन्जामे कार व शिद्दते अ़ज़ाब का। **184 :** हज़रत सय्यिदे काएनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआने पाक पर **185 : शाने नुज़ूल :** जब हुज़ूरे

www.dawateislami.net

لَا تَقُوۡلُوۡا رَاعِنَا وَقُوۡلُوا انۡظُرۡنَا وَاسۡمَعُوۡا ؕ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۰۴﴾

राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो[186] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[187]

مَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَلَا الۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يُّنَزَّلَ

वोह जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक[188] वोह नहीं चाहते

عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ خَيۡرٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से[189] और **अल्लाह** अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे

وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۱۰۵﴾ مَا نَنۡسَخۡ مِنۡ اٰيَةٍ اَوۡ نُنۡسِهَا نَاۡتِ بِخَيۡرٍ

और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमाएं या भुला दें[190] तो उस से

مِّنۡهَآ اَوۡ مِثۡلِهَا ؕ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمۡ تَعۡلَمۡ

बेहतर या उस जैसी ले आएंगे क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है क्या तुझे ख़बर नहीं

اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ

कि **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा

अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم सह़ाबा को कुछ ता'लीम व तल्क़ीन फ़रमाते तो वोह कभी कभी दरमियान में अ़र्ज़ किया करते : ''رَاعِنَا يَارَسُوۡلَ اللهِ'' इस के येह मा'ना थे कि या रसूलल्लाह ! हमारे ह़ाल की रिआ़यत फ़रमाइये या'नी कलामे अक़्दस को अच्छी त़रह़ समझ लेने का मौक़अ़ दीजिये, यहूद की लुग़त में येह कलिमा सूए अदब के मा'ना रखता था उन्हों ने इस निय्यत से कहना शुरूअ़ किया। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ यहूद की इस्त़िलाह़ से वाक़िफ़ थे, आप ने एक रोज़ येह कलिमा उन की ज़बान से सुन कर फ़रमाया : ऐ दुश्मनाने ख़ुदा ! तुम पर **अल्लाह** की ला'नत, अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से येह कलिमा सुना उस की गरदन मार दूंगा, यहूद ने कहा : हम पर तो आप बरहम होते हैं मुसल्मान भी तो येही कहते हैं, इस पर आप रन्जीदा हो कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए ही थे कि येह आयत नाज़िल हुई जिस में ''رَاعِنَا'' कहने की मुमानअ़त फ़रमा दी गई और इस मा'नी का दूसरा लफ़्ज़ ''اُنۡظُرۡنَا'' (हुज़ूर हम पर नज़र रखें) कहने का हुक्म हुवा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की ता'ज़ीमो तौक़ीर और इन की जनाब में कलिमाते अदब अ़र्ज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अदब का शाएबा भी हो वोह ज़बान पर लाना मम्नूअ़। **186 :** और हमा तन गोश हो जाओ (इन्तिहाई तवज्जोह के साथ सुनो) ताकि येह अ़र्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर ! तवज्जोह फ़रमाएं, क्यूं कि दरबारे नुबुव्वत का येही अदब है। **मस्अला :** दरबारे अम्बिया में आदमी को अदब के आ'ला मरातिब का लिह़ाज़ लाज़िम है। **187 : मस्अला :** ''لِلۡكٰفِرِيۡنَ'' (और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है) में इशारा है कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है। **188 : शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त मुसल्मानों से दोस्ती व ख़ैर ख़्वाही का इज़्हार करती थी उन की तक्ज़ीब में येह आयत नाज़िल हुई, मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार ख़ैर ख़्वाही के दा'वे में झूटे हैं। (جمل) **189 :** या'नी कुफ़्फ़ार अहले किताब और मुश्रिकीन दोनों मुसल्मानों से बुग़्ज़ रखते हैं और इस रन्ज में हैं कि इन के नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत व वह़्य अ़त़ा हुई और मुसल्मानों को येह ने'मते उ़ज़्मा मिली। (خازن وغيره) **190 : शाने नुज़ूल :** क़ुरआने करीम ने शराइए साबिक़ा (पहली शरीअ़तों) व कुतुबे क़दीमा को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार को बहुत तवह़्ह़ुश (दुख) हुवा और उन्हों ने इस पर त़ा'न किये, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी **अल्लाह** की त़रफ़ से है और नासिख़ भी दोनों ऐन ह़िक्मत हैं। और नासिख़ कभी मन्सूख़ से ज़ियादा सहल व अन्फ़अ़ (आसान और फ़ाएदे मन्द) होता है क़ुदरते इलाही पर यक़ीन रखने वाले को इस में जाए तरद्दुद नहीं, काएनात में मुशाहदा किया जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला दिन से रात को, गरमा से सरमा को, जवानी से बचपन को, बीमारी से तन्दुरुस्ती को, बहार से ख़ज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है, येह तमाम नस्ख़ व तब्दील उस की क़ुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअ़ज्जुब ? नस्ख़ दर ह़क़ीक़त हुक्मे साबिक़ की मुद्दत का बयान होता है कि वोह हुक्म उस मुद्दत के लिये था और ऐन ह़िक्मत था, कुफ़्फ़ार की ना फ़हमी कि नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते

www.dawateislami.net

وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمۡ تُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ تَسۡـَٔلُوۡا رَسُوۡلَكُمۡ كَمَا سُئِلَ

न कोई हिमायती न मददगार क्या येह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सुवाल करो जो पहले

مُوۡسٰى مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَمَنۡ يَّتَبَدَّلِ الۡكُفۡرَ بِالۡاِيۡمَانِ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ

मूसा से हुवा था[191] और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले[192] वोह ठीक रास्ते (से)

السَّبِيۡلِ ﴿۱۰۸﴾ وَدَّ كَثِيۡرٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَوۡ يَرُدُّوۡنَكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ

बहक गया बहुत किताबियों ने चाहा[193] काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की

اِيۡمَانِكُمۡ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِهِمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

त़रफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से[194] बा'द इस के कि ह़क़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो

الۡحَقُّ ۚ فَاعۡفُوۡا وَاصۡفَحُوۡا حَتّٰى يَاۡتِىَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर

हैं। और अहले किताब का ए'तिराज़ उन के मो'तक़िदात के लिह़ाज़ से भी ग़लत़ है, उन्हें ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام की शरीअ़त के अह़काम की मन्सूख़िय्यत तस्लीम करना पड़ेगी, येह मानना ही पड़ेगा कि शम्बा के रोज़ दुन्यवी काम इन से पहले ह़राम न थे इन पर ह़राम हुए, येह भी इक़रार ना गुज़ीर होगा कि तौरैत में ह़ज़रते नूह़ (عَلَيۡهِ السَّلَام) की उम्मत के लिये तमाम चौपाए ह़लाल होना बयान किया गया और ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام पर बहुत से ह़राम कर दिये गए, इन उमूर के होते हुए नस्ख़ का इन्कार किस त़रह़ मुम्किन है। **मस्अला :** जिस त़रह़ आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है इसी त़रह़ ह़दीसे मुतवातिर से भी होती है। **मस्अला :** नस्ख़ कभी सिर्फ़ तिलावत का होता है कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत व हुक्म दोनों का। बैहक़ी ने अबू उमामा से रिवायत की, कि एक अन्सारी सह़ाबी शब को तहज्जुद के लिये उठे और सूरए फ़ातिह़ा के बा'द जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उस को पढ़ना चाहा लेकिन वोह बिल्कुल याद न आई और सिवाए ''بِسۡمِ اللّٰه'' के कुछ न पढ़ सके, सुब्ह़ को दूसरे अस्ह़ाब से इस का ज़िक्र किया उन ह़ज़रात ने फ़रमाया हमारा भी येही ह़ाल है वोह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे ह़ाफ़िज़े में भी न रही, सब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, हु़ज़ूरे अकरम ने फ़रमाया : आज शब वोह सूरत उठा ली गई उस के हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए, जिन काग़ज़ों पर वोह लिखी गई थी उन पर नक़्श तक बाक़ी न रहे। **191 शाने नुज़ूल :** यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم) हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आस्मान से एक बारगी नाज़िल हो, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **192 :** या'नी जो आयतें नाज़िल हो चुकी हैं उन के क़बूल करने में बे जा बह़्स करे और दूसरी आयतें त़लब करे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस सुवाल में मफ़्सदा (फ़साद) हो वोह बुज़ुर्गों के सामने पेश करना जाइज़ नहीं और सब से बड़ा मफ़्सदा येह है कि उस से ना फ़रमानी ज़ाहिर होती हो। **193 : शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद के बा'द यहूद की जमाअ़त ने ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمَا से कहा कि अगर तुम ह़क़ पर होते तो तुम्हें शिकस्त न होती, तुम हमारे दीन की त़रफ़ वापस आ जाओ, ह़ज़रते अ़म्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़्दीक अ़हद शिकनी कैसी है ? उन्हों ने कहा निहायत बुरी। आप ने फ़रमाया मैं ने अ़हद किया है कि ज़िन्दगी के आख़िर लम्ह़े तक सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم से न फिरूंगा और कुफ़्र न इख़्तियार करूंगा और ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा ने फ़रमाया मैं राज़ी हुवा **अल्लाह** के रब होने, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, क़ुरआन के इमाम होने, का'बे के क़िब्ला होने, मोमिनीन के भाई होने से, फिर येह दोनों साह़िब हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप को वाक़िए की ख़बर दी, हु़ज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बेहतर किया और फ़लाह़ पाई। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **194 :** इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत जानने के बा'द यहूद का मुसल्मानों के कुफ़्र व इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से मह़रूम हो जाएं ह़सदन था, ह़सद बड़ा ही ऐब है। **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ह़सद से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ी को।'' **मस्अला :** ह़सद ह़राम है। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स अपने मालो दौलत या असरो वजाहत से गुमराही व बे दीनी फैलाता हो तो उस के फ़ितने से मह़फ़ूज़ रहने के लिये उस के ज़वाले ने'मत की तमन्ना ह़सद में दाख़िल नहीं और ह़राम भी नहीं।

www.dawateislami.net

الثلث

شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّکٰوةَ ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوۡا

चीज़ पर क़ादिर है और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो[195] और अपनी जानों के लिये

لِاَنۡفُسِکُمۡ مِّنۡ خَیۡرٍ تَجِدُوۡهُ عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के यहां पाओगे बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम

بَصِیۡرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَ قَالُوۡا لَنۡ یَّدۡخُلَ الۡجَنَّةَ اِلَّا مَنۡ کَانَ هُوۡدًا اَوۡ نَصٰرٰی ؕ

देख रहा है और अहले किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वोह जो यहूदी या नसरानी हो[196]

تِلۡکَ اَمَانِیُّهُمۡ ؕ قُلۡ هَاتُوۡا بُرۡهَانَکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰی ٭ مَنۡ

येह उन की ख़याल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील[197] अगर सच्चे हो हां क्यूं नहीं जिस ने

اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحۡسِنٌ فَلَهٗۤ اَجۡرُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ ۪ وَ لَا خَوۡفٌ

अपना मुंह झुकाया **अल्लाह** के लिये और वोह नेकोकार है[198] तो उस का नेग (बदला) उस के रब के पास है और उन्हें

ع ۱۳ / ۱۳ عَلَیۡهِمۡ وَ لَا هُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ قَالَتِ الۡیَهُوۡدُ لَیۡسَتِ النَّصٰرٰی عَلٰی

न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म[199] और यहूदी बोले नसरानी कुछ

شَیۡءٍ ۪ وَّ قَالَتِ النَّصٰرٰی لَیۡسَتِ الۡیَهُوۡدُ عَلٰی شَیۡءٍ ۙ وَّ هُمۡ یَتۡلُوۡنَ

नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं[200] हालां कि वोह किताब

الۡکِتٰبَ ؕ کَذٰلِکَ قَالَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ مِثۡلَ قَوۡلِهِمۡ ۚ فَاللّٰهُ یَحۡکُمُ

पढ़ते हैं[201] इसी तरह जाहिलों ने उन की सी बात कही[202] तो **अल्लाह** क़ियामत

195 : मोमिनीन को यहूद से दर गुज़र का हुक्म देने के बा'द उन्हें अपने इस्लाहे नफ़्स की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाता है। **196 :** या'नी यहूद कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी दाख़िल होंगे और नसरानी कहते हैं कि फ़क़त नसरानी और येह मुसल्मानों को दीन से मुन्हरिफ़ करने के लिये कहते हैं, जैसे नस्ख़ वग़ैरा के लचर (बेहूदा) शुबुहात उन्हों ने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसल्मानों को अपने दीन में कुछ तरद्दुद हो जाए, इसी तरह इन को जन्नत से मायूस कर के इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनान्चे आख़िरे पारह में उन का येह मक़ूला मज़्कूर है : ''وَقَالُوۡا كُوۡنُوۡا هُوۡدًا اَوۡ نَصٰرٰى تَهۡتَدُوۡا'' (और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे) **अल्लाह** तआ़ला उन के इस ख़याल का रद फ़रमाता है। **197 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि नफ़ी के मुद्दई को भी दलील लाना ज़रूर है बिग़ैर इस के दा'वा बातिल व ना मस्मूअ़ (ना मक़्बूल) होगा। **198 :** ख़्वाह वोह किसी ज़माने, किसी नस्ल, किसी क़ौम का हो। **199 :** इस में इशारा है कि यहूदो नसारा का येह दा'वा कि जन्नत के फ़क़त वोही मालिक हैं बिल्कुल ग़लत है क्यूं कि दुख़ूले जन्नत मुरत्तब है अ़क़ीदए सहीहा व अ़मले सालेह पर और येह उन्हें मुयस्सर नहीं। **200 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा का वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया तो उ़लमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरूअ़ हो गया, आवाज़ें बुलन्द हुईं शोर मचा, यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया, इसी तरह नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **201 :** या'नी बा वुजूद इल्म के उन्हों ने ऐसी जाहिलाना गुफ़्तगू की। हालां कि इन्जील शरीफ़ जिस को नसारा मानते हैं उस में तौरैत शरीफ़ व हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत की तस्दीक़ है, इसी तरह तौरैत जिस

www.dawateislami.net

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन[203] जो

مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَ سَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا

अल्लाह की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से[204] और उन की वीरानी में कोशिश करे[205] उन को न

كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّ لَهُمْ

पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है[206] और उन के लिये

فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا

आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब[207] और पूरब व पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब **अल्लाह** ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह

فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ

(ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है बेशक **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है और बोले ख़ुदा ने अपने लिये औलाद रखी

को यहूदी मानते हैं उस में ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत और उन तमाम अह़काम की तस्दीक़ है जो आप को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से अ़त़ा हुए। **202 :** उ़लमाए अहले किताब की त़रह़। उन जाहिलों ने जो न इ़ल्म रखते थे न किताब जैसा कि बुत परस्त, आतश परस्त वग़ैरा उन्हों ने हर एक दीन वाले की तक्ज़ीब शुरूअ़ की और कहा कि वोह कुछ नहीं, उन्हीं जाहिलों में से मुश्रिकीने अ़रब भी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के दीन की शान में ऐसे ही कलिमात कहे। **203 : शाने नुज़ूल :** येह आयत बैतुल मक़्दिस की बे ह़ुरमती के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि रूम के नसरानियों ने बनी इसराईल पर फ़ौज कशी की उन के मर्दाने कार आज़्मा को क़त्ल किया, ज़ुर्रिय्यत को क़ैद किया, तौरैत शरीफ़ को जलाया, बैतुल मक़्दिस को वीरान किया उस में नजासतें डालीं, ख़िन्ज़ीर ज़ब्ह़ किये مَعَاذَ الله, बैतुल मक़्दिस ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी तक इसी वीरानी में रहा, आप के अ़हदे मुबारक में मुसल्मान ने इस को बिना (आबाद) किया। एक क़ौल येह भी है कि येह आयत मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को का'बे में नमाज़ पढ़ने से रोका था और जंगे ह़ुदैबिया के वक़्त इस में नमाज़ व ह़ज से मन्अ़ किया था। **204 :** "ज़िक्र" नमाज़, ख़ुत़्बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और "ज़िक्रुल्लाह" को मन्अ़ करना हर जगह बुरा है ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं। **मस्अला :** जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्त़ल कर दे वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है। **205 : मस्अला :** मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र व नमाज़ के रोकने से होती है ऐसे ही इस की इ़मारत के नुक़्सान पहुंचाने और बे ह़ुरमती करने से भी। **206 :** दुन्या में उन्हें येह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरिफ़्तार हुए, जला वत़न किये गए, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी व उ़स्मानी में मुल्के शाम उन के क़ब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक़्दिस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए। **207 : शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे, जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सकी, हर एक शख़्स ने जिस त़रफ़ उस का दिल जमा नमाज़ पढ़ी, सुब्ह़ को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाल अ़र्ज़ किया तो येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सके तो जिस त़रफ़ दिल जमे कि येह क़िब्ला है उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि येह उस मुसाफ़िर के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सुवारी पर नफ़्ल अदा करे उस की सुवारी जिस त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए उसी त़रफ़ उस की नमाज़ दुरुस्त है, बुख़ारी व मुस्लिम की अह़ादीस से येह साबित है। एक क़ौल येह है कि जब तह़्वीले क़िब्ला का ह़ुक्म दिया गया तो यहूद ने मुसल्मानों पर त़ा'ना ज़नी की उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई बताया गया कि मशरिक़ो मग़रिब सब **अल्लाह** का है, जिस त़रफ़ चाहे क़िब्ला मुअ़य्यन फ़रमाए किसी को ए'तिराज़ का क्या ह़क़। (خازن) एक क़ौल येह है कि येह आयत दुआ़ के ह़क़ में वारिद हुई, ह़ुज़ूर से दरयाफ़्त किया गया कि किस त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ की जाए? उस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़क़ से गुरेज़ व फ़िरार में है और "اَيْنَمَا تُوَلُّوْا" (तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह है) का ख़ित़ाब उन लोगों को है जो ज़िक्रे इलाही से रोकते और मस्जिदों की वीरानी में सई करते हैं वोह दुन्या की रुस्वाई और अ़ज़ाबे आख़िरत से कहीं भाग नहीं सकते क्यूं कि मशरिक़ो मग़रिब सब **अल्लाह** का है जहां भागेंगे वोह गिरिफ़्त फ़रमाएगा। इस तक़्दीर पर "वज्हुल्लाह" के मा'ना ख़ुदा का क़ुर्ब

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

पाकी है उसे[208] बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[209] सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का[210] और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा

فَیَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ لَوْ لَا یُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِیْنَاۤ

वोह फ़ौरन हो जाती है[211] और जाहिल बोले[212] **अल्लाह** हम से क्यूं नहीं कलाम करता[213] या हमें कोई

اٰیَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ

निशानी मिले[214] इन से अगलों ने भी ऐसी ही कही इन की सी बात इन के उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَیَّنَّا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

एक से हैं[215] बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यक़ीन वालों के लिये[216] बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा

بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا ۙ وَّ لَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِیْمِ ﴿۱۱۹﴾ وَ لَنْ تَرْضٰی

खुश ख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख़ वालों का सुवाल न होगा[217] और हरगिज़ तुम से

عَنْكَ الْیَهُوْدُ وَ لَا النَّصٰرٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَی اللّٰهِ

यहूद और नसारा राज़ी न होंगे जब तक तुम उन के दीन की पैरवी न करो[218] तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** ही की हिदायत

व हुज़ूर है। (ت) एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि अगर कुफ़्फ़ार ख़ानए का'बा में नमाज़ से मन्अ़ करें तो तुम्हारे लिये तमाम ज़मीन मस्जिद बना दी गई है जहां से चाहो क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। **208 : शाने नुज़ूल :** यहूद ने ह़ज़रते उ़ज़ैर (عَلَيْهِ السَّلَام) को और नसारा ने ह़ज़रते मसीह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) को ख़ुदा का बेटा कहा, मुश्रिकीने अ़रब ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताया उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया : "سُبْحٰنَهٗ" वोह पाक है इस से कि उस के औलाद हो, उस की त़रफ़ औलाद की निस्बत करना उस को ऐब लगाना और बे अदबी है, ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : इब्ने आदम ने मुझे गाली दी, मेरे लिये औलाद बताई, मैं औलाद और बीवी से पाक हूं। **209 :** और मम्लूक होना औलाद होने के मुनाफ़ी है, जब तमाम जहान उस का मम्लूक है तो कोई औलाद कैसे हो सकता है। **मस्अला :** अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए वोह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी। **210 :** जिस ने बिग़ैर किसी मिसाले साबिक़ के अश्या को अ़दम से वुजूद अ़ता फ़रमाया। **211 :** या'नी काएनात उस के इरादा फ़रमाते ही वुजूद में आ जाती है। **212 :** या'नी अहले किताब या मुश्रिकीन। **213 :** या'नी बे वासित़ा ख़ुद क्यूं नहीं फ़रमाता जैसा कि मलाएका व अम्बिया से कलाम फ़रमाता है। येह उन का कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी, उन्हों ने अपने आप को अम्बिया व मलाएका के बराबर समझा। **शाने नुज़ूल :** राफ़ेअ़ बिन ख़ुज़ैमा ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : अगर आप **अल्लाह** के रसूल हैं तो **अल्लाह** से फ़रमाइये वोह हम से कलाम करे हम ख़ुद सुनें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **214 :** येह उन आयात का इनादन इन्कार है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अ़ता फ़रमाईं। **215 :** कोरी व नाबीनाई और कुफ़्र व क़सावत में। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर फ़रमाई गई कि आप उन की सरकशी और मुआ़निदाना (दुश्मनाना) इन्कार से रन्जीदा न हों पिछले कुफ़्फ़ार भी अम्बिया के साथ ऐसा ही करते थे। **216 :** या'नी आयाते क़ुरआनी व मो'जिज़ाते बाहिरात इन्साफ़ वाले को सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं मगर जो त़ालिबे यक़ीन न हो वोह दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठा सकता। **217 :** कि वोह क्यूं ईमान न लाए ? इस लिये कि आप ने अपना फ़र्ज़े तब्लीग़ पूरे त़ौर पर अदा फ़रमा दिया। **218 :** और येह

هُوَ الْهُدٰىؕ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِیْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِۙ

हिदायत है[219] और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशों का पैरव हुवा बा'द इस के कि तुझे इल्म आ चुका

مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۱۲۰﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

तो **अल्लाह** से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार[220] जिन्हें हम ने किताब दी है

وقف منزل

یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ اُولٰٓىِٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖؕ وَمَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ

वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं वोही इस पर ईमान रखते हैं और जो इस के मुन्किर हों तो वोही

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ؑ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ

ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाले) हैं[221] ऐ औलादे या'क़ूब याद करो मेरा एहसान जो मैं ने

ع ١٥

عَلَیْكُمْ وَاَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ

तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी और डरो उस दिन से कि कोई

نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْــٴًـا وَّلَا یُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ

जान दूसरे का बदला न होगी और न उस को कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़्अ़ दे[222]

وَّلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّؕ قَالَ

और न उन की मदद हो और जब[223] इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आज़्माया[224] तो उस ने वोह पूरी कर दिखाई[225] फ़रमाया

اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًاؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْؕ قَالَ لَا یَنَالُ

मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाने वाला हूं अ़र्ज़ की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अ़ह्द

ना मुम्किन क्यूं कि वोह बातिल पर हैं। **219 :** वोही क़ाबिले इत्तिबाअ़ है और उस के सिवा हर एक राह बातिल व ज़लालत। **220 :** येह ख़िताब उम्मते मुहम्मदिय्यह को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाए तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ़ न करना, अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। (خازن) **221 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अहले सफ़ीना के बाब में नाज़िल हुई जो जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हाज़िरे बारगाहे रिसालत हुए थे, उन की ता'दाद चालीस थी, बत्तीस अहले हबशा और आठ शामी राहिब, उन में बहीरा राहिब भी थे। मा'ना येह हैं कि दर हक़ीक़त तौरैत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वोही हैं जो इस की तिलावत का हक़ अदा करते हैं और बिग़ैर तहरीफ़ व तब्दील पढ़ते हैं और इस के मा'ना समझते और मानते हैं और इस में हुज़ूर सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के मुन्किर होते हैं वोह तौरैत शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते। **222 :** इस में यहूद का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हमें शफ़ाअ़त कर के छुड़ा लेंगे, उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़ाअ़त काफ़िर के लिये नहीं। **223 :** हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की विलादत सर ज़मीने अहवाज़ में ब मक़ामे सूस हुई, फिर आप के वालिद आप को बाबिल मुल्के नमरूद में ले आए, यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अ़रब सब आप के फ़ज़्लो शरफ़ के मो'तरिफ़ और आप की नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने आप के वोह हालात बयान फ़रमाए जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्यूं कि जो चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर वाजिब कीं वोह इस्लाम के ख़साइस में से हैं। **224 :** ख़ुदाई आज़्माइश येह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उस के खरे खोटे होने का इज़्हार कर दे। **225 :** जो बातें **अल्लाह** तआ़ला

عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ

ज़ालिमों को नहीं पहुंचता[226] और याद करो जब हम ने इस घर को[227] लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया[228] और

اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ وَ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤی اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ اَنْ

इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ[229] और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि

طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىِٕفِیْنَ وَ الْعٰكِفِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَ اِذْ قَالَ

मेरा घर खूब सुथरा करो तवाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह त़रह के फलों से रोज़ी दे जो

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَ مَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِیْلًا ثُمَّ

इन में से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं[230] फ़रमाया और जो काफ़िर हुवा थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर

اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰی عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَ اِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ

उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ मजबूर करूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है पलटने की और जब उठाता था इब्राहीम

الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَیْتِ وَ اِسْمٰعِیْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ

इस घर की नीवें (बुन्यादें) और इस्माईल येह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा[231] बेशक तू ही है

ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर आज़्माइश के लिये वाजिब की थीं उन में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं, क़तादा का क़ौल है कि वोह मनासिके ह़ज हैं। मुजाहिद ने कहा इस से वोह दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयात में मज़्कूर हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास का एक क़ौल येह है कि वोह दस चीज़ें येह हैं : (1) मूंछें कतरवाना (2) कुल्ली करना (3) नाक में सफ़ाई के लिये पानी इस्ति'माल करना (4) मिस्वाक करना (5) सर में मांग निकालना (6) नाखुन तरश्वाना (7) बग़ल के बाल दूर करना (8) मूए ज़ेरे नाफ़ की सफ़ाई (9) ख़तना (10) पानी से इस्तिन्जा करना। येह सब चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर वाजिब थीं और हम पर इन में से बा'ज़ वाजिब हैं बा'ज़ सुन्नत। **226 मस्अला :** या'नी आप की औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वोह इमामत का मन्सब न पाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर मुसल्मानों का पेश्वा नहीं हो सकता और मुसल्मानों को उस का इत्तिबाअ़ जाइज़ नहीं। **227 :** "बैत" से का'बा शरीफ़ मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल है। **228 :** अम्न बनाने से येह मुराद है कि ह़रमे का'बा में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून हो जाता है। "ह़रम" को ह़रम इस लिये कहा जाता है कि इस में क़त्ल, ज़ुल्म, शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है। (احمدی) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां उस से तअ़र्रुज़ न किया जाएगा। (مدارک) **229 :** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बिना (ता'मीर) फ़रमाई और उस में आप के क़दम मुबारक का निशान था, उस को नमाज़ का मक़ाम बनाने का अम्र इस्तिह़बाब के लिये है। एक क़ौल येह भी है कि इस नमाज़ से त़वाफ़ की दो रक्अ़तें मुराद हैं। (احمدی وغیرہ) **230 :** चूंकि इमामत के बाब में "لَا یَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ" (मेरा अ़ह्द ज़ालिमों को नहीं पहुंचता) इर्शाद हो चुका था इस लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने इस दुआ़ में मोमिनीन को ख़ास फ़रमाया और येही शाने अदब थी, **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा मोमिन को भी काफ़िर को भी लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है या'नी सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी में वोह बहरा मन्द हो सकता है। **231 :** पहली मरतबा का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बुन्याद ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने रखी और बा'दे तूफ़ाने नूह फिर

www.dawateislami.net

السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَ اجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَيۡنِ لَكَ وَ مِنۡ ذُرِّيَّتِنَاۤ

सुनता जानता ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गरदन रखने वाले[232] और हमारी औलाद में से

اُمَّةً مُّسۡلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبۡ عَلَيۡنَا ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ

एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमा[233] बेशक तू ही है

التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۲۸﴾ رَبَّنَا وَ ابۡعَثۡ فِيۡهِمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ

बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान ऐ रब हमारे और भेज इन में[234] एक रसूल इन्हीं में से कि इन पर तेरी आयतें तिलावत

اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الۡكِتٰبَ وَ الۡحِكۡمَةَ وَ يُزَكِّيۡهِمۡ ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ

फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब[235] और पुख़्ता इ़ल्म सिखाए[236] और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे[237] बेशक तू ही है ग़ालिब

١٥ ع ٨ ١٥ الۡحَكِيۡمُ ﴿۱۲۹﴾ ع وَ مَنۡ يَّرۡغَبُ عَنۡ مِّلَّةِ اِبۡرٰهٖمَ اِلَّا مَنۡ سَفِهَ نَفۡسَهٗ ؕ وَ لَقَدِ

हिक्मत वाला और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे[238] सिवा उस के जो दिल का अह़मक़ है और बेशक ज़रूर

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी बुन्याद पर ता'मीर फ़रमाई, येह ता'मीर ख़ास आप के दस्ते मुबारक से हुई, इस के लिये पथ्थर उठा कर लाने की ख़िदमत व सआ़दत ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को मुयस्सर हुई, दोनों ह़ज़रात ने उस वक़्त येह दुआ़ की, कि या रब हमारी येह ता़अ़त व ख़िदमत क़बूल फ़रमा। **232 :** वोह ह़ज़रात **अल्लाह** तआ़ला के मुती़ओ मुख़्लिस बन्दे थे फिर भी येह दुआ़ इस लिये है कि ता़अ़त व इख़्लास में और ज़ियादा कमाल की त़लब रखते हैं, जौक़े ता़अ़त सैर नहीं होता। سُبْحٰنَ الله : فِکرِ ہر کس بقدرِ ہمّتِ اُوست (हर कोई अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ ही ग़ौरो फ़िक्र करता है)। **233 :** ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام मा'सूम हैं आप की त़रफ़ से तो येह तवाज़ोअ़ है और **अल्लाह** वालों के लिये ता'लीम है। **मस्अला :** कि येह मक़ाम क़बूले दुआ़ का है और यहां दुआ़ व तौबा सुन्नते इब्राहीमी है। **234 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्माईल की ज़ुर्रिय्यत में। येह दुआ़ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये थी, या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ता'मीर की अ़ज़ीम ख़िदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिग़फ़ार करने के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल ने येह दुआ़ की, कि या रब ! अपने मह़बूब नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और येह शरफ़ हमें इनायत कर, येह दुआ़ क़बूल हुई और इन दोनों साह़िबों की नस्ल में हुज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुवा, औलादे ह़ज़रते इब्राहीम में बाक़ी अम्बिया ह़ज़रते इस्ह़ाक़ की नस्ल से हैं। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपना मीलाद शरीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाया, इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की, कि हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक "ख़ातमुन्नबिय्यीन" लिखा हुवा था ब ह़ाले कि ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) के पुतला का ख़मीर हो रहा था, मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए ह़ाल की ख़बर दूं, मैं दुआ़ए इब्राहीम हूं, बिशारते ईसा हूं, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ता'बीर हूं जो उन्हों ने मेरी विलादत के वक़्त देखा और उन के लिये एक नूरे सातेअ़ (फैलता हुवा नूर) ज़ाहिर हुवा जिस से मुल्के शाम के ऐवान व क़ुसूर उन के लिये रोशन हो गए। इस ह़दीस में दुआ़ए इब्राहीम से येही दुआ़ मुराद है जो इस आयत में मज़्कूर है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ (جمل وخازن) **235 :** इस किताब से क़ुरआने पाक और इस की ता'लीम से इस के ह़क़ाइक़ व मआ़नी का सिखाना मुराद है। **236 :** ह़िक्मत के मा'ना में बहुत अक़्वाल हैं बा'ज़ के नज़्दीक ह़िक्मत से फ़िक़्ह मुराद है, क़तादा का क़ौल है कि ह़िक्मत सुन्नत का नाम है, बा'ज़ कहते हैं कि ह़िक्मत इ़ल्मे अह़काम को कहते हैं, ख़ुलासा येह कि ह़िक्मत इ़ल्मे असरार है। **237 :** सुथरा करने के येह मा'ना हैं कि लौहे़ नुफ़ूस व अरवाह़ को कदूरात (आलूदगियों) से पाक कर के ह़िजाब उठा दें और आईनए इस्ति'दाद की जिला फ़रमा कर इन्हें इस क़ाबिल कर दें कि इन में ह़क़ाइक़ की जल्वा गरी हो सके। **238 शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बा'द अपने दो भतीजों मुहाजिर व सलमा को इस्लाम की दा'वत दी और उन से फ़रमाया कि तुम को मा'लूम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तौरैत में फ़रमाया है कि मैं औलादे इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिन का नाम अह़मद होगा जो उन पर ईमान लाएगा राहयाब (रास्ता पाने वाला) होगा, जो उन पर ईमान न लाएगा मल्ऊ़न है, येह सुन कर सलमा ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ुद उस रसूले मुअ़ज़्ज़म के मब्ऊ़स होने की दुआ़ फ़रमाई तो जो उन के दीन

www.dawateislami.net

اصْطَفَیْنٰهُ فِی الدُّنْیَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ

हम ने दुन्या में उसे चुन लिया[239] और बेशक वोह आख़िरत में हमारे ख़ास क़ुर्ब की क़ाबिलिय्यत वालों में है[240] जब कि उस से

لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ

उस के रब ने फ़रमाया गरदन रख अ़र्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिये जो रब है सारे जहान का और इसी दीन की वसिय्यत की इब्राहीम ने

بَنِیْهِ وَ یَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

अपने बेटों को और या'क़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक अल्लाह ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना

وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ یَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ

मगर मुसल्मान बल्कि तुम में के ख़ुद मौजूद थे[241] जब या'क़ूब को मौत आई जब कि

قَالَ لِبَنِیْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ

उस ने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बा'द किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आप का और आप के

اٰبَآىٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّ نَحْنُ لَهٗ

वालिदों इब्राहीम व इस्माईल[242] व इस्हाक़ का एक ख़ुदा और हम उस के

مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا

हुज़ूर गरदन रखे हैं येह[243] एक उम्मत है कि गुज़र चुकी[244] उन के लिये है जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिये है जो

كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا

तुम कमाओ और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी और किताबी बोले[245] यहूदी

से फिरे वोह हज़रते इब्राहीम के दीन से फिरा। इस में यहूदो नसारा व मुशरिकीने अ़रब पर ता'रीज़ है जो अपने आप को इफ़्तिख़ारन (फ़ख़्र करते हुए) हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ मन्सूब करते थे, जब उन के दीन से फिर गए तो शराफ़त कहां रही ? **239 :** रिसालत व ख़ुल्लत के साथ रसूल व ख़लील बनाया। **240 :** जिन के लिये बुलन्द दरजे हैं। तो जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام करामते दारैन के जामेअ़ हैं तो उन की त़रीक़त व मिल्लत से फिरने वाला ज़रूर नादान व अहमक़ है। **241 : शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने कहा था कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसिय्यत की थी, अल्लाह तआला ने उन के इस बोहतान के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (خازن) मा'ना येह हैं कि ऐ बनी इसराईल ! तुम्हारे पहले लोग हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के आख़िर वक़्त उन के पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्हों ने अपने बेटों को बुला कर उन से इस्लाम व तौहीद का इक़रार लिया था और येह इक़रार लिया था जो आयत में मज़्कूर है। **242 :** हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के आबा में दाख़िल करना तो इस लिये है कि आप उन के चचा हैं और चचा ब मन्ज़िला बाप के होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। और आप का नाम हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वज्ह से है **एक** तो येह कि आप हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से चौदह साल बड़े हैं, **दूसरे** इस लिये कि आप सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के जद हैं **243 :** या'नी हज़रते इब्राहीम व या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام और इन की मुसल्मान औलाद। **244 :** ऐ यहूद ! तुम इन पर बोहतान मत उठाओ। **245 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत रुअसाए यहूद और नजरान

اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِیْفًا وَ مَا كَانَ مِنَ

या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिकों

الْمُشْرِكِیْنَ (١٣٥) قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤى

से न थे[246] यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो उतारा गया

اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ وَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى

इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब और इन की औलाद पर और जो अ़त़ा किये गए मूसा

وَ عِیْسٰى وَ مَاۤ اُوْتِیَ النَّبِیُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ

व ईसा और जो अ़त़ा किये गए बाक़ी अम्बिया अपने रब के पास से हम इन में किसी पर ईमान में फ़र्क़

مِّنْهُمْ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (١٣٦) فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ

नहीं करते और हम अल्लाह के हु़ज़ूर गरदन रखे हैं फिर अगर वोह भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो

اهْتَدَوْا وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِیْ شِقَاقٍ فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ وَ هُوَ

वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में हैं[247] तो ऐ मह़बूब अ़न्क़रीब अल्लाह उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है

السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (١٣٧) صِبْغَةَ اللّٰهِ وَ مَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً

सुनता जानता[248] हम ने अल्लाह की रैनी (रंगाई) ली[249] और अल्लाह से बेहतर किस की रैनी (रंगाई)

के नसरानियों के जवाब में नाज़िल हुई, यहूदियों ने तो मुसल्मानों से येह कहा था कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْهِ السَّلَام) तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं और तौरैत तमाम किताबों से अफ़्ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अद्यान से आ'ला है, इस के साथ उन्हों ने ह़ज़रत सय्यिदे काएनात मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और इन्जील शरीफ़ व क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र कर के मुसल्मानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ, इसी त़रह़ नसरानियों ने भी अपने ही दीन को ह़क़ बता कर मुसल्मानों से नसरानी होने को कहा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **246 :** इस में यहूदो नसारा वग़ैरा पर ता'रीज़ है कि तुम मुश्रिक हो इस लिये मिल्लते इब्राहीम पर होने का दा'वा जो तुम करते हो वोह बात़िल है। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है कि वोह उन यहूदो नसारा से येह कह दें "قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا...الْاٰیَۃ۔" **247 :** और उन में त़लबे ह़क़ का शाएबा भी नहीं। **248 :** येह अल्लाह की त़रफ़ से ज़िम्मा है कि वोह अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएगा और इस में ग़ैब की ख़बर है कि आयिन्दा ह़ासिल होने वाली फ़त्ह़ो ज़फ़र का पहले से इज़्हार फ़रमाया, इस में नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है कि अल्लाह तआ़ला का येह ज़िम्मा पूरा हुवा और येह ग़ैबी ख़बर सादिक़ हो कर रही, कुफ़्फ़ार के ह़सद व इनाद और उन के मकाइद (मक्रो फ़रेब) से हु़ज़ूर को ज़रर न पहुंचा, हु़ज़ूर की फ़त्ह़ हुई, बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए, बनी नज़ीर जला वत़न किये गए, यहूदो नसारा पर जिज़्या मुक़र्रर हुवा। **249 :** या'नी जिस त़रह़ रंग कपड़े के ज़ाहिरो बात़िन में नुफ़ूज़ (सरायत) करता है इसी त़रह़ दीने इलाही के ए'तिक़ादाते ह़क़्क़ा हमारे रगो पै में समा गए, हमारा ज़ाहिरो बात़िन क़ल्बो क़ालिब उस के रंग में रंग गया, हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह नुफ़ूस को पाक करता है, ज़ाहिर में उस के आसार औज़ाअ़ व अफ़्आ़ल से नुमूदार होते हैं। नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को ग़ोत़ा देते और कहते कि अब येह सच्चा नसरानी हुवा, इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं।

www.dawateislami.net

وَنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِی اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ

और हम उसी को पूजते हैं तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के बारे में हम से झगड़ते हो[250] हालां कि वोह हमारा भी मालिक और तुम्हारा भी[251]

وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ اَمْ

और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं[252] बल्कि

تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ

तुम यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब और इन के बेटे

كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़ियादा है या **अल्लाह** को[253] और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

जिस के पास **अल्लाह** की तरफ़ की गवाही हो और वोह उसे छुपाए[254] और ख़ुदा तुम्हारे कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْئَلُوْنَ

वोह एक गुरोह है कि गुज़र गया उन के लिये उन की कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उन के कामों की

عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

तुम से पुरसिश न होगी

250 : शाने नुज़ूल : यहूद ने मुसल्मानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं, हमारा क़िब्ला पुराना है, हमारा दीन क़दीम है, अम्बिया हम में से हुए हैं, अगर सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा ﷺ नबी होते तो हम में से ही होते, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **251 :** उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अ़रब में से हो या दूसरों में से। **252 :** किसी दूसरे को **अल्लाह** के साथ शरीक नहीं करते और इबादतो त़ाअ़त ख़ालिस उसी के लिये करते हैं तो हम मुस्तह़िक़्क़े इक्राम हैं। **253 :** इस का क़त़्ई जवाब येह है कि **अल्लाह** ही आ'लम (ज़ियादा इल्म वाला) है तो जब उस ने फ़रमाया : "مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّلَا نَصْرَانِیًّا" (इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी) तो तुम्हारा येह क़ौल बात़िल हुवा। **254 :** येह यहूद का ह़ाल है, जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की शहादतें छुपाईं जो तौरैत शरीफ़ में मज़्कूर थीं कि मुहम्मद मुस्त़फ़ा ﷺ उस के नबी हैं और उन की येह ना'त व सिफ़ात हैं और ह़ज़रते इब्राहीम मुसल्मान हैं और दीने मक़्बूल इस्लाम है न यहूदिय्यत व नसरानिय्यत।

www.dawateislami.net

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا

अब कहेंगे[255] बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसल्मानों को उन के उस क़िब्ले से जिस पर

عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ

थे[256] तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब अल्लाह ही का है[257] जिसे चाहे सीधी राह

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى

चलाता है और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर

النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ

गवाह हो[258] और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह[259] और ऐ महबूब तुम पहले जिस

255 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक़्दिस के का'बए मुअ़ज़्ज़मा को क़िब्ला बनाया गया इस पर उन्हों ने ता'न किये क्यूं कि येह उन्हें ना गवार था और वोह नस्ख़ के क़ाइल न थे। एक क़ौल पर येह आयत मुश्रिकीने मक्का के और एक क़ौल पर मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई और येह भी हो सकता है कि इस से कुफ़्फ़ार के येह सब गुरौह मुराद हों क्यूं कि ता'नो तश्नीअ़ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के ता'न करने से क़ब्ल क़ुरआने पाक में इस की ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। ता'न करने वालों को बे वुक़ूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह निहायत वाज़ेह बात पर मो'तरिज़ हुए बा वुजूदे कि अम्बियाए साबिक़ीन ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आप का लक़ब ज़ुल क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाला) ज़िक्र फ़रमाया और तह्वीले क़िब्ला (क़िब्ले का तब्दील होना) उस की दलील है कि येही वोह नबी हैं जिन की पहले अम्बिया ख़बर देते आए ! ऐसे रोशन निशान से फ़ाएदा न उठाना और मो'तरिज़ होना कमाले हमाक़त है। **256 :** क़िब्ला उस जिहत को कहते हैं जिस की तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है, यहां क़िब्ला से बैतुल मक़्दिस मुराद है। **257 :** उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाए किसी को क्या जाए ए'तिराज़ ! बन्दे का काम फ़रमां बरदारी है। **258 :** दुन्या व आख़िरत में। **मस्अला :** दुन्या में तो येह कि मुसल्मान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअ़न मो'तबर है और काफ़िर की शहादत मुसल्मान पर मो'तबर नहीं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस उम्मत का इज्माअ़ हुज्जते लाज़िमुल क़बूल है। **मस्अला :** अम्वात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मो'तबर है रहमत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते इस के मुताबिक़ अ़मल करते हैं। सिहाह की हदीस में है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की ता'रीफ़ की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई, फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की बुराई की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई। हज़रते उ़मर ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई ? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की उस के लिये जन्नत वाजिब हुई, दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हुई, तुम ज़मीन में अल्लाह के शुहदा (गवाह) हो, फिर हुज़ूर ने येह आयत तिलावत फ़रमाई। **मस्अला :** येह तमाम शहादतें सुलहाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ ख़ास हैं और इन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाश्त शर्त है। जो लोग ज़बान की एहतियात नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शरअ़ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाहक़ ला'नत करते हैं सिहाह की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत न वोह शाफ़ेअ़ होंगे न शाहिद। इस उम्मत की एक शहादत येह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन जम्अ़ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा : क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और अह्काम पहुंचाने वाले नहीं आए ? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया। हज़राते अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा। वोह अ़र्ज़ करेंगे कि येह झूटे हैं हम ने इन्हें तब्लीग़ की, इस पर उन से اِقَامَةً لِّلْحُجَّة दलील तलब की जाएगी ! वोह अ़र्ज़ करेंगे कि उम्मते मुहम्मदिय्यह हमारी शाहिद है, येह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन हज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई, इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे इन्हें क्या मा'लूम येह हम से बा'द हुए थे, दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा : तुम कैसे जानते हो ? येह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ को भेजा, क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए से हम क़त्ई व यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि हज़राते अम्बिया ने फ़र्ज़े तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया। फिर सय्यिदे अम्बिया ﷺ से आप की उम्मत की निस्बत दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा, हुज़ूर उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अश्याए मा'रूफ़ा में शहादत तसामोअ़ (सुनने) के साथ भी मो'तबर है या'नी जिन चीज़ों का इल्मे यक़ीनी सुनने से हासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है। **259 :** उम्मत को तो रसूलुल्लाह ﷺ की इत्तिलाअ़ के ज़रीए से अह्वाले उमम व तब्लीग़े अम्बिया का इल्मे क़त्ई व यक़ीनी हासिल है और रसूले करीम ﷺ ब करमे इलाही नूरे नुबुव्वत से हर शख़्स के हाल और उस

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ

क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है[260]

وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ

और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की और **अल्लाह** की शान नहीं

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾ قَدْ نَرٰى

कि तुम्हारा ईमान अकारत (ज़ाएअ़) करे[261] बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत मेहरबान मेहर (रह्म) वाला है हम देख रहे हैं

تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ

बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना[262] तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो[263]

وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَ مَا اللّٰهُ

और वोह जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है[264] और **अल्लाह** उन के

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَ لَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ

कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले कर

की ह़क़ीक़ते ईमान और आ'माले नेको बद और इख़्लासो निफ़ाक़ सब पर मुत़्तलअ़ हैं। **मस्अला :** इसी लिये ह़ुज़ूर की शहादत दुन्या में ब ह़ुक्मे शरअ़ उम्मत के ह़क़ में मक़्बूल है। येही वज्ह है कि ह़ुज़ूर ने अपने ज़माने के ह़ाज़िरीन के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया मसलन सह़ाबा व अज़्वाज व अहले बैत के फ़ज़ाइलो मनाक़िब या ग़ाइबों और बा'द वालों के लिये मिस्ल ह़ज़रते उवैस व इमाम महदी वग़ैरा के, उस पर ए'तिक़ाद वाजिब है। **मस्अला :** हर नबी को उन की उम्मत के आ'माल पर मुत़्तलअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़ियामत शहादत दे सकें चूंकि हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शहादत आ़म होगी इस लिये ह़ुज़ूर तमाम उम्मतों के अह़वाल पर मुत़्तलअ़ हैं। **फ़ाएदा :** यहां शहीद ब मा'ना मुत़्तलअ़ भी हो सकता है क्यूं कि शहादत का लफ़्ज़ इल्म व इत़्तिलाअ़ के मा'ना में भी आया है قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْد (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : और **अल्लाह** हर चीज़ पर गवाह है)। **260 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पहले का'बे की त़रफ़ (मुंह कर के) नमाज़ पढ़ते थे, बा'दे हिजरत बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने का ह़ुक्म हुवा, सतरह महीने के क़रीब इस त़रफ़ नमाज़ पढ़ी, फिर का'बे शरीफ़ की त़रफ़ मुंह करने का ह़ुक्म हुवा। इस तह़्वील (क़िब्ला तब्दील करने) की एक येह ह़िक्मत इर्शाद हुई कि इस से मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाएगा, चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **261 शाने नुज़ूल :** बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सह़ाबा ने वफ़ात पाई उन के रिश्तेदारों ने तह़्वीले क़िब्ला के बा'द उन की नमाज़ों का ह़ुक्म दरयाफ़्त किया ! इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इत़्मीनान दिलाया गया कि उन की नमाज़ें ज़ाएअ़ नहीं, उन पर सवाब मिलेगा। **फ़ाएदा :** नमाज़ को ईमान से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि इस की अदा और ब जमाअ़त पढ़ना दलीले ईमान है। **262 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को का'बे का क़िब्ला बनाया जाना पसन्दे ख़ात़िर (मह़बूब) था और ह़ुज़ूर इस उम्मीद में आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई, आप नमाज़ ही में का'बे की त़रफ़ फिर गए मुसल्मानों ने भी आप के साथ इसी त़रफ़ रुख़ किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला को आप की रिज़ा मन्ज़ूर है और आप ही की ख़ात़िर का'बे को क़िब्ला बनाया गया। **263 :** इस से साबित हुवा कि नमाज़ में रू ब क़िब्ला होना फ़र्ज़ है। **264 :** क्यूं कि उन की किताबों में ह़ुज़ूर के औसाफ़ के सिल्सिले में येह भी मज़्कूर था कि आप बैतुल मक़्दिस से का'बे की त़रफ़ फिरेंगे और उन

www.dawateislami.net

اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ

आओ वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करेंगे[265] और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो[266] और वोह आपस में भी एक दूसरे

قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं[267] और [ऐ सुनने वाले कसे बाशद] अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चला बा'द इस के कि तुझे इल्म मिल चुका

اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا

तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (ज़ालिम) होगा जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई[268] वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे

يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ

आदमी अपने बेटों को पहचानता है[269] और बेशक उन में एक गुरोह जान बूझ कर हक़ छुपाते

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ وَلِكُلٍّ

हैं[270] (ऐ सुनने वाले) येह हक़ है तेरे रब की त़रफ़ से (या हक़ वोही है जो तेरे रब की त़रफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना और हर एक के लिये तवज्जोह की

وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ

एक सम्त है कि वोह उसी की त़रफ़ मुंह करता है तो येह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो **अल्लाह** तुम सब को

اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۴۸﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

इकठ्ठा ले आएगा[271] बेशक **अल्लाह** जो चाहे करे और जहां से आओ[272]

وقف لازم

ع ١٧ ٢ وقف منزل

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

अम्बिया ने बिशारतों के साथ हुज़ूर का येह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़्दिस और का'बा दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। **265 :** क्यूं कि निशानी उस को नाफ़ेअ़ हो सकती है जो किसी शुबे की वज्ह से मुन्किर हो, येह तो ह़सद व इनाद से इन्कार करते हैं इन्हें इस से क्या नफ़्अ़ होगा। **266 :** मा'ना येह हैं कि येह क़िब्ला मन्सूख़ न होगा तो अब अहले किताब को येह त़मअ़ न रखना चाहिये कि आप इन में से किसी के क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करेंगे। **267 :** हर एक का क़िब्ला जुदा है। यहूद तो सख़्रए बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस में रखी एक चटान) को अपना क़िब्ला क़रार देते हैं और नसारा बैतुल मक़्दिस के उस मकाने शर्क़ी को जहां नफ़्ख़े रूहे ह़ज़रत मसीह़ (ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की रूह मुबारक फूंकना) वाक़ेअ़ हुवा। (ख़) **268 :** या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा। **269 :** मत़लब येह कि कुतुबे साबिक़ा में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ ऐसे वाज़ेह़ और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उ़लमाए अहले किताब को हुज़ूर के ख़ातमुल अम्बिया होने में कुछ शक बाक़ी नहीं रह सकता और वोह हुज़ूर के इस मन्सबे आ़ली को अतम (पूरे) यक़ीन के साथ जानते हैं। अह़बारे यहूद (यहूदियों के उ़लमा) में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए तो ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने उन से दरयाफ़्त किया कि आयए "يَعْرِفُوْنَهٗ" (या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है) में जो मा'रिफ़त बयान की गई है उस की क्या शान है? उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर! मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा तो बे इश्तिबाह (बिग़ैर किसी शको शुबा के) पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से ब दरजहा ज़ियादा अतम व अक्मल है! ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : येह कैसे? उन्हों ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि हुज़ूर **अल्लाह** की त़रफ़ से उस के भेजे रसूल हैं, इन के औसाफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी किताब तौरैत में बयान फ़रमाए हैं, बेटे की त़रफ़ से ऐसा यक़ीन किस त़रह हो! औरतों का ह़ाल ऐसा क़त़ई किस त़रह़ मा'लूम हो सकता है! ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने उन का सर चूम लिया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ग़ैर मह़ल्ले शह्वत में दीनी मह़ब्बत से पेशानी चूमना जाइज़ है। **270 :** या'नी तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त है उ़लमाए अहले किताब का एक गुरोह उस को ह़सदन व इनादन दीदा व दानिस्ता छुपाता है। **मस्अला :** ह़क़ का छुपाना मा'सियत व गुनाह है। **271 :** रोज़े क़ियामत सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और आ'माल की जज़ा देगा। **272 :** या'नी

www.dawateislami.net

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا

अपना मुंह मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और वोह ज़रूर तुम्हारे रब की त़रफ़ से ह़क़ है और

اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं और ऐ मह़बूब तुम जहां से आओ अपना मुंह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ

मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ करो और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो

لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا

कि लोगों को तुम पर कोई ह़ुज्जत न रहे[273] मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें[274] तो उन से न

تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ ۛ

डरो और मुझ से डरो और येह इस लिये है कि मैं अपनी ने'मत तुम पर पूरी करूं और किसी त़रह़ तुम हिदायत पाओ

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ

जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से[275] कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता[276]

وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ ؕ معانقة ٣

और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है[277] और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था

فَاذْكُرُوْنِيْۤ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع ١٨ ٥

तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा[278] और मेरा ह़क़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो ऐ ईमान

ख़्वाह किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे ह़राम (का'बे) की त़रफ़ करो। **273 :** और कुफ़्फ़ार को येह त़ा'न करने का मौक़अ़ न मिले कि इन्हों ने क़ुरैश की मुख़ालफ़त में ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला भी छोड़ दिया बा वुजूदे कि नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उन की औलाद में हैं और उन की अ़ज़्मतो बुज़ुर्गी मानते भी हैं। **274 :** और बराहे इनाद बे जा ए'तिराज़ करें। **275 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **276 :** नजासते शिर्क व जुनूब से। **277 :** हिक्मत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक़्ह मुराद ली है। **278 :** ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है : (1) लिसानी (2) क़ल्बी (3) बिल जवारेह़। **ज़िक्रे लिसानी :** तस्बीह़, तक़्दीस, सना वग़ैरा बयान करना है, ख़ुत़्बा, तौबा, इस्तिग़्फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं। **ज़िक्रे क़ल्बी :** अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का याद करना, उस की अ़ज़्मतो किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़लमा का इस्तिम्बात़, मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। **ज़िक्र बिल जवारेह़ :** येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना, येह ज़िक्र बिल जवारेह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह़ व तक्बीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है, और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ व इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी, और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह़ है। इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : तुम त़ाअ़त बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा। सह़ीह़ैन की ह़दीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उस को उस से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं। क़ुरआनो ह़दीस में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और येह हर त़रह़ के ज़िक्र को शामिल हैं, ज़िक्र बिल जहर (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने) को भी और

اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا

वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो[279] बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है और जो

تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا

ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो[280] बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें

تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ

ख़बर नहीं[281] और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से[282] और कुछ

الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَاۤ

मालों और जानों और फलों की कमी से[283] और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓىِٕكَ

कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना[284] येह लोग हैं

बिल इख़्फ़ा को भी। **279 :** हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में नमाज़े इस्तिस्क़ा व सलाते हाजत दाख़िल है। **280 शाने नुज़ूल :** येह आयत शुहदाए बद्र के हक़ में नाज़िल हुई। लोग शुहदा के हक़ में कहते थे कि फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया वोह दुन्यवी आसाइश से महरूम हो गया ! उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **281 :** मौत के बा'द ही **अल्लाह** तआला शुहदा को हयात अ़ता फ़रमाता है, उन की अरवाह पर रिज़्क़ पेश किये जाते हैं, उन्हें राहतें दी जाती हैं, उन के अ़मल जारी रहते हैं, अज्रो सवाब बढ़ता रहता है, हदीस शरीफ़ में है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (रूप) में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं। **मस्अला :** **अल्लाह** तआला के फ़रमां बरदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती ने'मतें मिलती हैं। शहीद वोह मुसल्मान मुकल्लफ़ ताहिर है जो तेज़ हथियार से ज़ुल्मन मारा गया हो और उस के क़त्ल से माल भी वाजिब न हुवा हो, या मा'रिकए जंग में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया और उस ने कुछ आसाइश न पाई। उस पर दुन्या में येह अह्काम हैं कि न उस को ग़ुस्ल दिया जाए न कफ़न, अपने कपड़ों में ही रखा जाए, इसी तरह उस पर नमाज़ पढ़ी जाए, इसी हालत में दफ़्न किया जाए। आख़िरत में शहीद का बड़ा रुत्बा है। बा'ज़ शुहदा वोह हैं कि उन पर दुन्या के येह अह्काम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उन के लिये शहादत का दरजा है जैसे डूब कर या जल कर, या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, तलबे इल्म, सफ़रे हज, ग़रज़ राहे ख़ुदा में मरने वाला, और निफ़ास में मरने वाली औरत, और पेट के मरज़ और ताऊन और ज़ातुल जम्ब और सिल (पस्ली के दर्द और फेफड़ों की बीमारी व पुराने बुख़ार) में, और जुमुआ के रोज़ मरने वाले वग़ैरा। **282 :** आज़्माइश से फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है। **283 :** इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से **अल्लाह** का डर, भूक से रमज़ान के रोज़े, मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना, जानों की कमी से अमराज़ के ज़रीए मौतें होना, फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है इस लिये कि औलाद दिल का फल होती है हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है **अल्लाह** तआला मलाएका से फ़रमाता है तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ की ? वोह अर्ज़ करते हैं कि हां या रब ! फिर फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल ले लिया ? अर्ज़ करते हैं हां या रब ! फ़रमाता है : इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? अर्ज़ करते हैं उस ने तेरी हम्द की और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा ! फ़रमाता है : उस के लिये जन्नत में मकान बनाओ और उस का नाम "बैतुल हम्द" रखो। **हिक्मत :** मुसीबत के पेश आने से क़ब्ल ख़बर देने में कई हिक्मतें हैं एक तो येह कि इस से आदमी को वक़्ते मुसीबत सब्र आसान हो जाता है। एक येह कि जब काफ़िर देखें कि मुसल्मान बला व मुसीबत के वक़्त साबिरो शाकिर और इस्तिक़्लाल के साथ अपने दीन पर क़ाइम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मा'लूम और इस की तरफ़ रग़बत हो। एक येह कि आने वाली मुसीबत की क़ब्ले वुक़ूअ़ इत्तिलाअ़ ग़ैबी ख़बर और नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है। एक हिक्मत येह कि मुनाफ़िक़ीन के क़दम इब्तिला (मुसीबत में मुब्तला होने) की ख़बर से उखड़ जाएं और मोमिन व मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ हो जाए। **284 :** हदीस शरीफ़ में है कि वक़्त मुसीबत के "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ"

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ اِنَّ

जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं बेशक

الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا

सफ़ा और मर्वह[285] **अल्लाह** के निशानों से हैं[286] तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ

جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ

गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे[287] और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला

عَلِيْمٌ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْ

ख़बरदार है बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं[288]

بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ

बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर **अल्लाह** की ला'नत है और ला'नत करने वालों

पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है, येह भी ह़दीस में है कि मोमिन की तक्लीफ़ को **अल्लाह** तआ़ला कफ़्फ़ारए गुनाह बनाता है। **285 :** सफ़ा व मर्वह मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के मुक़ाबिल जानिबे शर्क़ वाक़ेअ़ हैं, मर्वह शिमाल की त़रफ़ माइल, और सफ़ा जुनूब की त़रफ़ जबले अबी क़ुबैस के दामन में है ह़ज़रते हाजिरा और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब इस मक़ाम पर जहां चाहे ज़मज़म है ब हुक्मे इलाही सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई, उस वक़्त येह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था, न यहां सब्ज़ा था न पानी न ख़ुर्दो नोश का कोई सामान, रिज़ाए इलाही के लिये इन मक़्बूल बन्दों ने सब्र किया। ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ख़ुर्द साल (कम उ़म्र) थे तिश्नगी से जब उन की जां बलबी की ह़ालत हुई तो ह़ज़रते हाजिरा बेताब हो कर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गईं वहां भी पानी न पाया तो उतर कर नशेब के मैदान में दौड़ती हुई मर्वह तक पहुंचीं इस त़रह़ सात मरतबा गर्दिश हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने "اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ" का जल्वा इस त़रह़ ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा "ज़मज़म" नुमूदार किया और इन के सब्रो इख़्लास की बरकत से इन के इत्तिबाअ़ में इन दोनों पहाड़ों के दरमियान दौड़ने वालों को मक़्बूले बारगाह किया और इन दोनों को मह़ल्ले इजाबते दुआ़ बनाया। **286 :** "شَعَآئِرُ اللّٰه" से दीन के आ'लाम या'नी निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वोह मकानात हों जैसे का'बा, अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, जिमारे सलासा, सफ़ा, मर्वह, मिना, मसाजिद। या अज़्मिनह जैसे रमज़ान, अश्हुरे ह़राम, ईदे फ़ित्र व अज़्ह़ा, जुमुआ़, अय्यामे तशरीक़। या दूसरे अ़लामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े बा जमाअ़त, नमाज़े जुमुआ़, नमाज़े ईदैन, ख़तना येह सब शआइरे दीन हैं। **287 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में सफ़ा व मर्वह पर दो बुत रखे थे, सफ़ा पर जो बुत था उस का नाम असाफ़ और जो मर्वह पर था उस का नाम नाइला था, कुफ़्फ़ार जब सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करते तो इन बुतों पर ता'ज़ीमन हाथ फेरते, अ़हदे इस्लाम में बुत तो तोड़ दिये गए लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार यहां मुश्रिकाना फ़े'ल करते थे इस लिये मुसल्मानों को सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना गिरां हुवा कि इस में कुफ़्फ़ार के मुश्रिकाना फ़े'ल के साथ कुछ मुशाबहत है। इस आयत में उन का इत़्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी निय्यत ख़ालिस इबादते इलाही की है तुम्हें अन्देशए मुशाबहत नहीं ! और जिस त़रह़ का'बे के अन्दर ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने बुत रखे थे, अब अ़हदे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और का'बा शरीफ़ का त़वाफ़ दुरुस्त रहा और वोह शआइरे दीन में से रहा इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मर्वह के शआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। **मस्अला :** सई (या'नी सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ना) वाजिब है ह़दीस से साबित है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस पर मुदावमत फ़रमाई है, इस के तर्क से दम देना या'नी क़ुरबानी वाजिब होती है। **मस्अला :** सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई ह़ज व उ़मरह दोनों में लाज़िम है। फ़र्क़ येह है कि ह़ज के अन्दर अ़रफ़ात में जाना और वहां से त़वाफ़े का'बा के लिये आना शर्त़ है, और उ़मरह के लिये अ़रफ़ात में जाना शर्त़ नहीं। **मस्अला :** उ़मरह करने वाला अगर बैरूने मक्का से आए उस को बराहे रास्त मक्कए मुकर्रमा में आ कर त़वाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का साकिन (रहने वाला) हो तो उस को चाहिये कि ह़रम से बाहर जाए वहां से त़वाफ़े का'बा का एह़राम बांध कर आए। ह़ज व उ़मरह में एक फ़र्क़ येह भी है कि ह़ज साल में एक ही मरतबा हो सकता है क्यूं कि अ़रफ़ात में अ़रफ़ा के दिन या'नी नवीं ज़िल ह़िज्जा को जाना जो ह़ज में शर्त़ है साल में एक ही मरतबा मुम्किन है और उ़मरह हर दिन हो सकता है इस के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं। **288 :** येह आयत उन उ़लमाए यहूद की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ और आयते रज्म और तौरैत के दूसरे अह़काम को छुपाया

www.dawateislami.net

اللّٰعِنُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ

की ला'नत[289] मगर वोह जो तौबा करें और संवारें (इस्लाह करें) और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल

عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ

फ़रमाऊंगा और मैं ही हूं बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर

كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۶۱﴾

ही मरे उन पर ला'नत है **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और आदमियों सब की[290]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۱۶۲﴾

हमेशा रहेंगे उस में न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ ع اِنَّ فِيْ خَلْقِ

और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[291] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रहमत वाला मेहरबान बेशक

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ

आस्मानों[292] और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि

करते थे। **मस्अला :** उ़लूमे दीन का इज़्हार फ़र्ज़ है। **289 :** ला'नत करने वालों से मलाएका व मोमिनीन मुराद हैं, एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** के तमाम बन्दे मुराद हैं। **290 :** मोमिन तो काफ़िरों पर ला'नत करेंगे ही, काफ़िर भी रोज़े क़ियामत बाहम एक दूसरे पर ला'नत करेंगे। **मस्अला :** इस आयत में उन पर ला'नत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे। इस से मा'लूम हुवा कि जिस की मौत कुफ़्र पर मा'लूम हो उस पर ला'नत करनी जाइज़ है। **मस्अला :** गुनहगार मुसल्मान पर बित्ता'यीन (उस का नाम ले कर) ला'नत करना जाइज़ नहीं लेकिन अ़लल इत्लाक़ जाइज़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़्वार वग़ैरा पर ला'नत आई है। **291 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : आप अपने रब की शान व सिफ़त बयान फ़रमाइये ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बता दिया कि मा'बूद सिर्फ़ एक है, न वोह मुतजज़्ज़ी होता है न मुन्क़सिम, न उस के लिये मिस्ल न नज़ीर, उलूहिय्यत व रबूबिय्यत में कोई उस का शरीक नहीं, वोह यक्ता है अपने अफ़्आ़ल में, मस्नूआ़त को तन्हा उसी ने बनाया, वोह अपनी ज़ात में अकेला है कोई उस का क़सीम (शरीक) नहीं, अपने सिफ़ात में यगाना है कोई उस का शबीह नहीं। अबू दावूद व तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला का इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है एक येही आयत "وَاِلٰـهُكُمْ" दूसरी "الٓمّٓ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ...الآيه" **292 :** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द मुश्रिकीन के तीन सो साठ बुत थे जिन्हें वोह मा'बूद ए'तिक़ाद करते थे, उन्हें येह सुन कर बड़ी ह़ैरत हुई कि मा'बूद सिर्फ़ एक ही है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! इस लिये उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ऐसी आयत त़लब की जिस से वह़दानिय्यत पर इस्तिद्लाल सह़ीह़ हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें येह बताया गया कि आस्मान और उस की बुलन्दी और उस का बिग़ैर किसी सुतून और अ़लाक़े के क़ाइम रहना और जो कुछ उस में नज़र आता है आफ़्ताब महताब सितारे वग़ैरा येह तमाम, और ज़मीन और इस की दराज़ी और पानी पर मफ़रूश (बिछा हुवा) होना, और पहाड़ दरिया चश्मे, मआ़दिन जवाहिर दरख़्त सब्ज़ा फल, और शबो रोज़ का आना जाना घटना बढ़ना, कश्तियां और उन का मुसख़्ख़र होना बा वुजूद बहुत से वज़्न और बोझ के रूए आब (पानी की सत्ह़) पर रहना और आदमियों का उन में सुवार हो कर दरिया के अ़जाइब देखना और तिजारतों में उन से बार बरदारी (वज़्न उठाने) का काम लेना, और बारिश और उस से ख़ुश्क व मुर्दा हो जाने के बा'द ज़मीन का सर सब्ज़ो शादाब करना और ताज़ा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाना, और ज़मीन को अन्वाओ़ अक़्साम के जानवरों से भर देना जिन में बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत वदीअ़त (रखे हुए) हैं, इसी त़रह़ हवाओं की गर्दिश और इन के ख़वास और हवा के अ़जाइबात, और अब्र (बादल) और उस का इतने कसीर पानी के साथ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहना, येह आठ अन्वाअ़ हैं जो ह़ज़रते क़ादिर मुख़्तार के इल्मो ह़िक्मत और उस की वह़दानिय्यत पर बुरहाने क़वी (मज़बूत़ दलाइल) हैं और इन की दलालत वह़दानिय्यत पर बे शुमार वुजूह से है। इज्माली बयान येह है कि येह सब उमूरे मुम्किना हैं और इन का वुजूद बहुत से मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से मुम्किन था मगर वोह मख़्सूस शान से वुजूद में

www.dawateislami.net

فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ

दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो अल्लाह ने आस्मान से पानी उतार कर

فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ

मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और

تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ

हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

इन सब में अक़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और मा'बूद बना

اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ

लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह महबूब रखते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं और कैसी हो अगर

يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ

देखें ज़ालिम वोह वक़्त जब कि अ़ज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिये कि सारा ज़ोर ख़ुदा को है और इस लिये कि

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है जब बेज़ार होंगे पेश्वा अपने पैरवों से[293]

आए, येह दलालत करता है कि ज़रूर इन के लिये मूजिद है क़ादिर व हकीम जो ब मुक़्तज़ाए हिक्मतो मशिय्यत जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़्ल व ए'तिराज़ की मजाल नहीं। वोह मा'बूद बिल यक़ीन वाहिदो यक्ता है क्यूं कि अगर उस के साथ कोई दूसरा मा'बूद भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस को भी इन मक़्दूरात पर क़ादिर मानना पड़ेगा ! अब दो हाल से ख़ाली नहीं या तो ईजाद व तासीर में दोनों मुत्तफ़िक़ुल इरादा होंगे, या न होंगे अगर हों तो एक ही शै के वुजूद में दो मुअस्सिरों का तासीर करना लाज़िम आएगा और येह मुहाल है क्यूं कि येह मुस्तल्ज़िम है मा'लूल के दोनों से मुस्तग़्नी होने को और दोनों की त़रफ़ मुफ़्तक़िर होने को। क्यूं कि इल्लत जब मुस्तक़िल्ला हो तो मा'लूल सिर्फ़ उसी की त़रफ़ मोहताज होता है दूसरे की त़रफ़ मोहताज नहीं होता, और दोनों को इल्लते मुस्तक़िल्ला फ़र्ज़ किया गया है तो लाज़िम आएगा कि मा'लूल दोनों में से हर एक की त़रफ़ मोहताज हो और हर एक से ग़नी हो, तो नक़ीज़ैन मुज्तमअ़ हो गईं और येह मुहाल है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि तासीर उन में से एक की है तो तरजीह बिला मुरज्जिह लाज़िम आएगी और दूसरे का इज्ज़ लाज़िम आएगा जो इलाह होने के मुनाफ़ी है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि दोनों के इरादे मुख़्तलिफ़ होते हैं तो तमानोअ़ व तत़ारुद लाज़िम आएगा कि एक किसी शै के वुजूद का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उस के अ़दम का, तो वोह शै एक ही हाल में मौजूद व मा'दूम दोनों होगी या दोनों न होगी, येह दोनों तक़्दीरें बातिल हैं तो ज़रूर है कि या मौजूद होगी या मा'दूम एक ही बात होगी, अगर मौजूद हुई तो अ़दम का चाहने वाला आ़जिज़ हुवा इलाह न रहा और अगर मा'दूम हुई तो वुजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा इलाह न रहा ! साबित हो गया कि इलाह एक ही हो सकता है और येह तमाम अन्वाअ़ बे निहायत वुजूह से उस की तौह़ीद पर दलालत करते हैं **293 :** येह रोज़े क़ियामत का बयान है जब मुश्रिकीन और उन के पेश्वा जिन्हों ने उन्हें कुफ़्र की तरग़ीब दी थी एक जगह जम्अ़ होंगे और अ़ज़ाब नाज़िल होता हुवा देख कर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे।

www.dawateislami.net

وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

और देखेंगे अ़ज़ाब और कट जाएंगी उन की सब डोरें[294] और कहेंगे पैरव

لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ

काश हमें लौट कर जाना होता (दुन्या में) तो हम उन से तोड़ देते (जुदा हो जाते) जैसे उन्हों ने हम से तोड़ दी यूंही **अल्लाह** उन्हें दिखाएगा

اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के काम उन पर ह़स्रतें हो कर[295] और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ऐ

ع ٢٠

النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में[296] ह़लाल पाकीज़ा है और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ

बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है वोह तो तुम्हें येही हुक्म देगा बदी और बे ह़याई का और येह कि

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ

अल्लाह पर वोह बात जोड़ो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और जब उन से कहा जाए **अल्लाह** के उतारे पर

اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا

चलो[297] तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न

يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ

कुछ अ़क़्ल रखते हों न हिदायत[298] और काफ़िरों की कहावत उस की सी है जो

294 : या'नी वोह तमाम तअ़ल्लुक़ात जो दुन्या में उन के माबैन थे ख़्वाह वोह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां, या बाहमी मुवाफ़क़त के अ़ह्द। **295 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला उन के बुरे आ'माल उन के सामने करेगा तो उन्हें निहायत ह़सरत होगी कि उन्हों ने येह काम क्यूं किये थे, एक क़ौल येह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमां बरदारी करते तो येह तुम्हारे लिये थे, फिर वोह मसाकिन व मनाज़िल मोमिनीन को दिये जाएंगे इस पर उन्हें ह़स्रतो नदामत होगी। **296 :** येह आयत उन अश्ख़ास के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने बिजार (ज़मानए जाहिलिय्यत के नामज़द मख़्सूस जानवरों) वग़ैरा को ह़राम क़रार दिया था। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना उस की रज़्ज़ाक़िय्यत से बग़ावत है, मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जो माल मैं अपने बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता हूं वोह उन के लिये ह़लाल है, और इसी में है कि मैं ने अपने बन्दों को बात़िल से बे तअ़ल्लुक़ पैदा किया, फिर उन के पास शयात़ीन आए और उन्हों ने दीन से बहकाया और जो मैं ने उन के लिये ह़लाल किया था उस को ह़राम ठहराया। एक और ह़दीस में है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मैं ने येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने तिलावत की तो ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात कर दे ! हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'द अपनी ख़ूराक पाक करो मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे ! उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़्मा डालता है तो चालीस रोज़ तक क़बूलिय्यत से मह़रूमी रहती है। (تفسیر ابن کثیر) **297 :** तौह़ीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को ह़लाल जानो जिन्हें **अल्लाह** ने ह़लाल किया। **298 :** जब बाप दादा दीन के उमूर को

www.dawateislami.net

يَنۡعِقُ بِمَا لَا يَسۡمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡىٌ فَهُمۡ لَا

पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने[299] बहरे गूंगे अन्धे तो उन्हें

يَعۡقِلُوۡنَ ۝١٧١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ وَ

समझ नहीं[300] ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और

اشۡكُرُوۡا لِلّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ۝١٧٢ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ

अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो[301] उस ने येही तुम पर हराम किये हैं मुर्दार[302]

وَالدَّمَ وَلَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيۡرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ

और ख़ून[303] और सुअर का गोश्त[304] और वोह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया गया[305] तो जो नाचार हो[306] न यूं कि

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثۡمَ عَلَيۡهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝١٧٣ اِنَّ الَّذِيۡنَ

ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है वोह जो

يَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ الۡكِتٰبِ وَيَشۡتَرُوۡنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ۙ

छुपाते हैं[307] **अल्लाह** की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं[308]

न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उन की पैरवी करना ह़माक़त व गुमराही है। **299 :** या'नी जिस त़रह़ चौपाए चराने वाले की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं कलाम के मा'ना नहीं समझते येही ह़ाल इन कुफ़्फ़ार का है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सदाए मुबारक को सुनते हैं लेकिन उस के मा'ना दिल नशीन कर के इर्शादे फ़ैज़ बुन्याद से फ़ाएदा नहीं उठाते। **300 :** येह इस लिये कि वोह ह़क़ बात सुन कर मुन्तफ़ेअ़ न हुए, कलामे ह़क़ उन की ज़बान पर जारी न हुवा, नसीह़तों से उन्हें ने फ़ाएदा न उठाया। **301 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है। **302 :** जो ह़लाल जानवर बिग़ैर ज़ब्ह़ किये मर जाए या उस को त़रीक़े शरअ़ के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन गला घोंट कर, या लाठी पथ्थर ढेले ग़ुल्ले गोली से मार कर हलाक किया गया हो, या वोह गिर कर मर गया हो, या किसी जानवर ने सींग से मारा हो, या किसी दरिन्दे ने हलाक किया हो उस को मुर्दार कहते हैं, और इसी के हुक्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वोह उ़ज़्व जो काट लिया गया हो। **मस्अला :** मुर्दार जानवर का खाना ह़राम है मगर उस का पका हुवा चमड़ा काम में लाना और उस के बाल, सींग, हड्डी, पठ्ठे, सुम (खुर) से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی) **303 मस्अला :** ख़ून हर जानवर का ह़राम है अगर बहने वाला हो, दूसरी आयत में फ़रमाया : "اَوْدَمًا مَّسْفُوْحًا"। **304 मस्अला :** ख़िन्ज़ीर नजिसुल ऐ़न (बिल्कुल नापाक) है इस का गोश्त, पोस्त, बाल, नाख़ुन वग़ैरा तमाम अज्ज़ा नजिस व ह़राम हैं किसी को काम में लाना जाइज़ नहीं। चूंकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिये यहां गोश्त के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा फ़रमाया गया। **305 मस्अला :** जिस जानवर पर वक़्ते ज़ब्ह़ ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए ख़्वाह तन्हा या ख़ुदा के नाम के साथ अ़त्फ़ से मिला कर (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ وَمُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰه) वोह ह़राम है। **मस्अला :** और अगर नामे ख़ुदा के साथ ग़ैर का नाम बिग़ैर अ़त्फ़ मिलाया (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰه) तो मक्रूह है। **मस्अला :** अगर ज़ब्ह़ फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर किया और इस से क़ब्ल या बा'द ग़ैर का नाम लिया मसलन येह कहा कि अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का दुम्बा, या जिस की त़रफ़ से वोह ज़बीह़ा है उसी का नाम लिया, या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उन का नाम लिया तो येह जाइज़ है इस में कुछ ह़रज नहीं। (تفسیر احمدی) **306 :** "मुज़्तर" (नाचार) वोह है जो ह़राम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से ख़ौफ़े जान हो ख़्वाह शिद्दत की भूक या नादारी की वज्ह से जान पर बन जाए और कोई ह़लाल चीज़ हाथ न आए, या कोई शख़्स ह़राम खाने पर जब्र करता हो और उस से जान का अन्देशा हो ऐसी ह़ालत में जान बचाने के लिये ह़राम चीज़ का क़द्रे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि ख़ौफ़े हलाकत न रहे। **307 शाने नुज़ूल :** यहूद के उ़लमा व रुअसा जो उम्मीद रखते थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इन में से मब्ऊ़स होंगे जब उन्हों ने देखा कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم दूसरी क़ौम में से मब्ऊ़स फ़रमाए गए तो उन्हें येह अन्देशा हुवा कि लोग तौरैत व इन्जील में हु़ज़ूर के

www.dawateislami.net

أُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं[309] और **अल्लाह** क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा

وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

और न उन्हें सुथरा करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ

गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब तो किस दरजे उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है यह

بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ

इस लिये कि **अल्लाह** ने किताब ह़क़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ डालने लगे[310] वोह ज़रूर

٢١ ع ٥ ٩ النصف
شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾ ع لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

परले सिरे के झगड़ालू हैं कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

करो[311] हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों

وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ

और किताब और पैग़म्बरों पर[312] और **अल्लाह** की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और

औसाफ़ देख कर आप की फ़रमां बरदारी की त़रफ़ झुक पड़ेंगे और इन के नज़राने हदिये तोह़फ़े तह़ाइफ़ सब बन्द हो जाएंगे हुकूमत जाती रहेगी ! इस ख़याल से उन्हें ह़सद पैदा हुवा और तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त और आप के वक़्ते नुबुव्वत का बयान था उन्हों ने उस को छुपाया इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **मस्अला :** छुपाना येह भी है कि किताब के मज़्मून पर किसी को मुत्तलअ़ न होने दिया जाए न वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए न दिखाया जाए, और येह भी छुपाना है कि ग़लत़ तावीलें कर के मा'ना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मा'ना पर पर्दा डाला जाए। **308 :** या'नी दुन्या के ह़क़ीर नफ़्अ़ के लिये इख़्फ़ाए ह़क़ करते हैं। **309 :** क्यूं कि येह रिश्वतें और येह माले ह़राम जो ह़क़पोशी के इ़वज़ उन्हों ने लिया है उन्हें आतशे जहन्नम में पहुंचाएगा। **310 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत में इख़्तिलाफ़ किया बा'ज़ ने इस को ह़क़ कहा, बा'ज़ ने बात़िल, बा'ज़ ने ग़लत़ तावीलें कीं, बा'ज़ ने तह़रीफ़ें। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई ! इस सूरत में किताब से क़ुरआन मुराद है, और उन का इख़्तिलाफ़ येह है कि बा'ज़ उन में से इस को शे'र कहते थे, बा'ज़ सेह़र, बा'ज़ कहानत। **311 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूं कि यहूद ने बैतुल मक़्दिस के मशरिक़ को और नसारा ने उस के मग़रिब को क़िब्ला बना रखा था, और हर फ़रीक़ का गुमान था कि सिर्फ़ इस क़िब्ले ही की त़रफ़ मुंह करना काफ़ी है, इस आयत में इन का रद फ़रमा दिया गया कि बैतुल मक़्दिस का क़िब्ला होना मन्सूख़ हो गया। (مدارک) मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह ख़ित़ाब अहले किताब और मोमिनीन सब को आ़म है और मा'ना येह हैं कि सिर्फ़ रू ब क़िब्ला होना अस्ल नेकी नहीं जब तक अ़क़ाइद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे क़िब्ला की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो। **312 :** इस आयत में नेकी के छ[6] त़रीक़े इर्शाद फ़रमाए (1) ईमान लाना (2) माल देना (3) नमाज़ क़ाइम करना (4) ज़कात देना (5) अ़ह्द पूरा करना (6) सब्र करना। ईमान की तफ़्सील येह है कि **एक** तो **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाए कि वोह ह़य्यो क़य्यूम, अ़लीम, ह़कीम, समीअ़, बसीर, ग़नी, क़दीर, अज़ली, अबदी, वाह़िद, لَاشَرِیْکَ لَہٗ है। **दूसरे** क़ियामत पर ईमान लाए कि वोह ह़क़ है उस में बन्दों का ह़िसाब होगा, आ'माल की जज़ा दी जाएगी, मक़्बूलाने ह़क़ शफ़ाअ़त करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم सआ़दत मन्दों को ह़ौज़े कौसर पर सैराब फ़रमाएंगे, पुल सिरात़ पर गुज़र होगा, और उस रोज़ के तमाम अह़वाल जो क़ुरआन में आए या सय्यिदे अम्बिया ने बयान फ़रमाए सब ह़क़ हैं। **तीसरे**

www.dawateislami.net

الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में[313] और नमाज़ क़ाइम रखे

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي

और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें और सब्र वाले

الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ

मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ

येही परहेज़ गार हैं ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है[314] कि जो नाहक़ मारे जाएं

الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

उन के ख़ून का बदला लो[315] आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ

बदले औ़रत[316] तो जिस के लिये उस के भाई की त़रफ़ से कुछ मुआ़फ़ी हुई[317] तो भलाई से तक़ाज़ा हो और

फ़िरिश्तों पर ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** की मख़्लूक़ और फ़रमां बरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं न औ़रत, उन की ता'दाद **अल्लाह** जानता है, चार उन में से बहुत मुक़र्रब हैं जिब्रईल, मीकाईल, इसराफ़ील, इज़्राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام । **चौथे** कुतुबे इलाहिय्यह पर ईमान लाना कि जो किताब **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई ह़क़ है, उन में चार बड़ी किताबें हैं (1) तौरैत जो ह़ज़रते मूसा पर (2) इन्जील जो ह़ज़रते ईसा पर (3) ज़बूर ह़ज़रते दावूद पर (4) क़ुरआन ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा पर नाज़िल हुईं, और पचास सह़ीफ़े ह़ज़रते शीस पर, तीस ह़ज़रते इदरीस पर, दस ह़ज़रते आदम पर, दस ह़ज़रते इब्राहीम पर नाज़िल हुए। عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام । **पांचवें** तमाम अम्बिया पर ईमान लाना कि वोह सब **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और मा'सूम या'नी गुनाहों से पाक हैं, उन की सह़ीह़ ता'दाद **अल्लाह** जानता है, उन में से तीन सो तेरह रसूल हैं। "نَبِيّٖنَ" ब सीग़ए जम्अ़ मुज़क्कर सालिम ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि अम्बिया मर्द होते हैं कोई औ़रत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا...الْاٰيه से साबित है। ईमाने मुज्मल येह है اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَبِجَمِيْعِ مَاجَآءَ بِهِ النَّبِيُّ (صلی اللہ علیہ وسلم) या'नी मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और उन तमाम उमूर पर जो सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** के पास से लाए। (تفسیر احمدی)
313 : ईमान के बा'द आ'माल का और इस सिल्सिले में माल देने का बयान फ़रमाया, इस के छ[6] मसरफ़ ज़िक्र किये। गरदनें छुड़ाने से गुलामों का आज़ाद करना मुराद है, येह सब मुस्तह़ब त़ौर पर माल देने का बयान था। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम होता है कि सदक़ा देना ब ह़ालते तन्दुरुस्ती ज़ियादा अज्र रखता है ब निस्बत इस के कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर दे। (كَذَا فِيْ حَدِيْثٍ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ) **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं : एक सदक़े का, एक सिलए रेह़्म का। (نسائی شریف) **314 शाने नुज़ूल :** येह आयत औस व ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई, इन में से एक क़बीला दूसरे से क़ुव्वते ता'दाद, माल व शरफ़ में ज़ियादा था उस ने क़सम खाई थी कि वोह अपने गुलाम के बदले दूसरे क़बीले के आज़ाद को और औ़रत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा ! ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग इस क़िस्म की तअ़द्दी (ज़ियादती) के आ़दी थे, अ़ह्दे इस्लाम में येह मुआ़मला ह़ुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई और अ़द्ल व मुसावात का ह़ुक्म दिया गया और इस पर वोह लोग राज़ी हुए। क़ुरआने करीम में क़िसास (ख़ून का बदला लेने) का मस्अला कई आयतों में बयान हुवा है, इस आयत में क़िसास व अ़फ़्व दोनों के मस्अले हैं और **अल्लाह** तआ़ला के इस एह़सान का बयान है कि उस ने अपने बन्दों को क़िसास व अ़फ़्व में मुख़्तार किया चाहें क़िसास लें या अ़फ़्व करें। आयत के अव्वल में क़िसास के वुजूब का बयान है। **315 :** इस से हर क़ातिल बिल अ़मद (जान बूझ कर क़त्ल करने वाले) पर क़िसास का वुजूब साबित होता है ख़्वाह उस ने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मुसल्मान को या काफ़िर को, मर्द को या औ़रत को क्यूं कि قَتْلٰى जो قَتِيْل की जम्अ़ है वोह सब को शामिल है, हां जिस को दलीले शरई ख़ास करे वोह मख़्सूस हो जाएगा। (احکام القرآن) **316 :** इस आयत में बताया गया जो क़त्ल

www.dawateislami.net

اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

अच्छी त़रह अदा येह तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रह़मत तो इस के बा'द जो ज़ियादती

بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِي

करे[318] उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ

الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ

अ़क़्ल मन्दो[319] कि तुम कहीं बचो तुम पर फ़र्ज़ हुवा कि जब तुम में किसी को मौत आए

اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا

अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िक़े दस्तूर[320] येह वाजिब है

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾ فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

परहेज़ गारों पर तो जो वसिय्यत को सुन सुना कर बदल दे[321] उस का गुनाह उन्हीं बदलने

يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ

वालों पर है[322] बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है फिर जिसे अन्देशा हुवा कि वसिय्यत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या

ع ٢٢ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع يٰاَيُّهَا

गुनाह किया तो उस ने उन में सुल्ह़ करा दी उस पर कुछ गुनाह नहीं[323] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है ऐ

करेगा वोही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या ग़ुलाम, मर्द हो या औ़रत, और अहले जाहिलिय्यत का येह त़रीक़ा ज़ुल्म है जो उन में राइज था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वोह एक के बदले दो को क़त्ल करते, ग़ुलामों में होती तो बजाए ग़ुलाम के आज़ाद को मारते, औ़रतों में होती तो औ़रत के बदले मर्द को क़त्ल करते और मह़्ज़ क़ातिल के क़त्ल पर इक्तिफ़ा न करते, इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। **317 :** मा'ना येह हैं कि जिस क़ातिल को वलिये मक़्तूल कुछ मुआ़फ़ करें और उस के ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए उस पर औलियाए मक़्तूल तक़ाज़ा करने में नेक रविश इख़्तियार करें और क़ातिल ख़ूंबहा ख़ुश मुआ़मलगी के साथ अदा करे इस में सुल्ह़ बर माल (माल पर सुल्ह़ करने) का बयान है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को इख़्तियार है कि ख़्वाह क़ातिल को बे इ़वज़ मुआ़फ़ करे या माल पर सुल्ह़ करे, अगर वोह इस पर राज़ी न हो और क़िसास चाहे तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा। (جمل) **मस्अला :** अगर मक़्तूल के तमाम औलिया क़िसास मुआ़फ़ कर दें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता। **मस्अला :** अगर माल पर सुल्ह़ करें तो क़िसास साक़ित़ हो जाता है और माल वाजिब होता है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को क़ातिल का भाई फ़रमाने में दलालत है इस पर कि क़त्ल अगर्चे बड़ा गुनाह है मगर इस से उख़ुव्वते ईमानी क़त्अ़ नहीं होती, इस में ख़वारिज का इब्त़ाल है जो मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर कहते हैं। **318 :** या'नी ब दस्तूरे जाहिलिय्यत ग़ैर क़ातिल को क़त्ल करे, या दियत क़बूल करने और मुआ़फ़ करने के बा'द क़त्ल करे **319 :** क्यूं कि क़िसास मुक़र्रर होने से लोग क़त्ल से बाज़ रहेंगे और जानें बचेंगी। **320 :** या'नी मुवाफ़िक़ दस्तूरे शरीअ़त के अ़द्ल करे और एक तिहाई माल से ज़ियादा की वसिय्यत न करे, और मोह़ताजों पर मालदारों को तरजीह़ न दे। **मस्अला :** इब्तिदाए इस्लाम में येह वसिय्यत फ़र्ज़ थी, जब मीरास के अह़काम नाज़िल हुए मन्सूख़ की गई, अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में वसिय्यत करना मुस्तह़ब है बशर्ते कि वारिस मोह़ताज न हों या तर्का मिलने पर मोह़ताज न रहें, वरना तर्का वसिय्यत से अफ़्ज़ल है। (تفسیر احمدی) **321 :** ख़्वाह वसी हो या वली या शाहिद। और वोह तब्दील किताबत में करे या तक़्सीम में या अदाए शहादत में, अगर वोह वसिय्यत मुवाफ़िक़े शरअ़ है तो बदलने वाला गुनहगार है। **322 :** और दूसरे ख़्वाह वोह मूसी हों या मूसालहू बरी हैं। **323 :** मा'ना येह हैं कि वारिस, या वसी, या इमाम, या क़ाज़ी जिस को भी मूसी की त़रफ़ से ना इन्साफ़ी या नाह़क़ कारवाई का अन्देशा हो वोह अगर

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ

ईमान वालो[324] तुम पर रोजे़ फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए

قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ

थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले[325] गिनती के दिन हैं[326] तो तुम में जो कोई

مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ

बीमार या सफ़र में हो[327] तो इतने रोजे़ और दिनों में और जिन्हें इस की ताक़त न हो

فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ

वोह बदला दें एक मिस्कीन का खाना[328] फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे[329] तो वोह उस के लिये बेहतर है और

تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ

रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो[330] रमज़ान का महीना जिस में

فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ

क़ुरआन उतरा[331] लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें तो तुम में जो कोई

मूसालहू या वारिसों में शरअ़ के मुवाफ़िक़ सुल्ह़ करा दे तो गुनहगार नहीं क्यूं कि उस ने ह़क़ की ह़िमायत के लिये बात़िल को बदला। एक क़ौल येह भी है कि मुराद वोह शख़्स है जो वक़्ते वसिय्यत देखे कि मूसी ह़क़ से तजावुज़ करता और ख़िलाफ़े शरअ़ त़रीक़ा इख़्तियार करता है तो उस को रोक दे और ह़क़ व इन्साफ़ का हुक्म करे। **324 :** इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है। रोज़ा शरअ़ में इस का नाम है कि मुसल्मान ख़्वाह मर्द हो या ह़ैज़ व निफ़ास से ख़ाली औ़रत सुब्ह़े सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक ब निय्यते इ़बादत ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त (खाना पीना और जिमाअ़ करना) तर्क करे। (عالمگیری وغیرہ) रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हि. को फ़र्ज़ किये गए। (درمختار وخازن) इस आयत से साबित होता है कि रोज़े इ़बादते क़दीमा हैं ज़मानए आदम عَلَيْهِ السَّلَام से तमाम शरीअ़तों में फ़र्ज़ होते चले आए अगर्चे अय्याम व अह़काम मुख़्तलिफ़ थे मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे। **325 :** और तुम गुनाहों से बचो। क्यूं कि येह कस्रे नफ़्स का सबब और मुत्तक़ीन का शिआ़र है। **326 :** या'नी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना। **327 :** सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन से कम न हो। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़्सत दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देशा हो, या सफ़र में शिद्दतो तक्लीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़्त़ार करे और बजाए इस के अय्यामे मन्हिय्या के सिवा और दिनों में इस की क़ज़ा करे, अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं दोनों ई़दें और ज़िल हि़ज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ें। **मस्अला :** मरीज़ को मह़्ज़ वह्म पर रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तजरिबे या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क़ त़बीब की ख़बर से इस का ग़लबए ज़न न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़ियादती का सबब होगा। **मस्अला :** जो बिलफ़े'ल बीमार न हो लेकिन मुसल्मान त़बीब येह कहे कि वोह रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है। **मस्अला :** ह़ामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़्त़ार जाइज़ है : **मस्अला :** जिस मुसाफ़िर ने तुलूए फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरूअ़ किया उस को तो रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे तुलूअ़ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं। **328 मस्अला :** जिस बूढ़े मर्द या औ़रत को पीरानासाली (बुढ़ापे) के ज़ो'फ़ से रोज़ा रखने की क़ुदरत न रहे और आयिन्दा क़ुव्वत ह़ासिल होने की उम्मीद भी न हो उस को शैख़े फ़ानी कहते हैं, उस के लिये जाइज़ है कि इफ़्त़ार करे और हर रोज़े के बदले निस्फ़ साअ़ या'नी एक सो पछत्तर रुपिया और एक अठन्नी भर गेहूं या गेहूं का आटा या इस से दूने जव या इस की क़ीमत बत़ौरे फ़िदया दे। **मस्अला :** अगर फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की क़ुव्वत आ गई तो रोज़ा वाजिब होगा। **मस्अला :** अगर शैख़े फ़ानी नादार हो और फ़िदया देने की क़ुदरत न रखे तो **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे और अपने अ़फ़्वे तक़्सीर (कोताही की बख़्शिश) की दुआ़ करता रहे। **329 :** या'नी फ़िदये की मिक़्दार से ज़ियादा दे **330 :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे मुसाफ़िर व मरीज़ को इफ़्त़ार

www.dawateislami.net

شَهِدَ مِنۡكُمُ الشَّهۡرَ فَلۡيَصُمۡهُ ؕ وَمَنۡ كَانَ مَرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ

यह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो

فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيۡدُ اللّٰهُ بِكُمُ الۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيۡدُ بِكُمُ

तो इतने रोज़े और दिनों में अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी

الۡعُسۡرَ وَلِتُكۡمِلُوا الۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰٮكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ

नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो[332] और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम

تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۸۵﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىۡ عَنِّىۡ فَاِنِّىۡ قَرِيۡبٌ ؕ اُجِيۡبُ

हक़ गुज़ार हो और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं[333] दुआ़ क़बूल करता हूं

دَعۡوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡيَسۡتَجِيۡبُوۡا لِىۡ وَلۡيُؤۡمِنُوۡا بِىۡ لَعَلَّهُمۡ

पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे[334] तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं

يَرۡشُدُوۡنَ ﴿۱۸۶﴾ اُحِلَّ لَكُمۡ لَيۡلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمۡ ؕ هُنَّ

राह पाएं रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना तुम्हारे लिये ह़लाल हुवा[335] वोह

की इजाज़त है लेकिन ज़ियादा बेहतर व अफ़्ज़ल रोज़ा रखना ही है। **331 :** इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : (1) यह कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा (2) यह कि क़ुरआने करीम के नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान में हुई (3) यह कि क़ुरआने करीम बि तमामिही रमज़ान मुबारक की शबे क़द्र में लौहे मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया और बैतुल इ़ज़्ज़त में रहा, यह इसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुवा जिब्रीले अमीन लाते रहे, यह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्से में पूरा हुवा। **332 :** ह़दीस में है हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है तो चांद देख कर रोज़े शुरूअ़ करो और चांद देख कर इफ़्त़ार करो, अगर 29 रमज़ान को चांद की रूयत न हो तो तीस दिन की गिनती पूरी करो। **333 :** इस में त़ालिबाने ह़क़ की त़लबे मौला का बयान है जिन्हों ने इ़श्क़े इलाही पर अपने हवाइज को क़ुरबान कर दिया, वोह उसी के त़लब गार हैं उन्हें क़ुर्बो विसाल के मुज़्दे से शादकाम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल :** एक जमाअ़ते सह़ाबा ने जज़्बए इ़श्क़े इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब कहां है ? इस पर नवीदे क़ुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि अल्लाह तआ़ला मकान से पाक है जो चीज़ किसी से मकानी क़ुर्ब रखती हो वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बो'द रखती है और अल्लाह तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है मकानी की यह शान नहीं। मनाज़िले क़ुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़्लत दूर करने से मुयस्सर आती है। دوست نزدیک تر از من بمن است- ویں عجب تر کہ من از وے دورم (दोस्त तो मुझ से भी ज़ियादा मेरे क़रीब है। और यह अ़जब तर है कि मैं उस से दूर हूं)। **334 :** "दुआ़" अ़र्ज़े ह़ाजत है, और इजाबत यह है कि परवर दगार अपने बन्दे की दुआ़ पर "لَبَّيْكَ عَبْدِى" फ़रमाता है। मुराद अ़त़ा फ़रमाना दूसरी चीज़ है वोह भी कभी उस के करम से फ़िलफ़ौर होती है कभी ब मुक़्तज़ाए ह़िक्मत किसी ताख़ीर से, कभी बन्दे की ह़ाजत दुन्या में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़्अ़ दूसरी चीज़ में होता है वोह अ़त़ा की जाती है कभी बन्दा मह़बूब होता है उस की ह़ाजत रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अ़र्से तक दुआ़ में मश्ग़ूल रहे, कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ो इख़्लास वग़ैरा शराइत़े क़बूल नहीं होते इसी लिये अल्लाह के नेक और मक़्बूल बन्दों से दुआ़ कराई जाती है। **मस्अला :** ना जाइज़ अम्र की दुआ़ करना जाइज़ नहीं। दुआ़ के आदाब में से है कि ह़ुज़ूरे क़ल्ब के साथ क़बूल का यक़ीन रखते हुए दुआ़ करे और शिकायत न करे कि मेरी दुआ़ क़बूल न हुई, तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ़ करे। **335 शाने नुज़ूल :** शराइए़ साबिक़ा में इफ़्त़ार के बा'द खाना पीना मुजामअ़त करना नमाज़े इशा तक ह़लाल था बा'द नमाज़े इशा यह सब चीज़ें शब में भी ह़राम हो जाती थीं, यह हुक्म ज़मानए अक़्दस तक बाक़ी था, बा'ज़ सह़ाबा से रमज़ान की रातों में बा'दे इशा मुबाशरत वुक़ूअ़ में आई उन में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ भी थे इस पर वोह ह़ज़रात नादिम

www.dawateislami.net

لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ

तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास **अल्लाह** ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में

اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا

डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमाया[336] तो अब उन से सोहबत करो[337] और तलब करो जो **अल्लाह** ने

كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ

तुम्हारे नसीब में लिखा हो[338] और खाओ और पियो[339] यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा

مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا

सियाही के डोरे से पौ फट कर[340] फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो[341] और

تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِى الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا

औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो[342] येह **अल्लाह** की हदें हैं उन के

تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ وَلَا

पास न जाओ **अल्लाह** यूं ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़ गारी मिले और

हुए और दरगाहे रिसालत में अ़र्ज़े ह़ाल किया **अल्लाह** तआ़ला ने मुआफ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल हुई, और बयान कर दिया गया कि आयिन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्ह़े सादिक़ तक मुजामअ़त करना ह़लाल किया गया। **336 :** इस ख़ियानत से वोह मुजामअ़त मुराद है जो क़ब्ले इबाह़त रमज़ान की रातों में मुसल्मानों से सरज़द हुई थी, उस की मुआफ़ी का बयान फ़रमा कर उन की तस्कीन फ़रमा दी गई। **337 :** येह अम्र इबाह़त के लिये है कि अब वोह मुमानअ़त उठा दी गई और लयालिये रमज़ान (रमज़ान की रातों) में मुबाशरत मुबाह़ कर दी गई। **338 :** इस में हिदायत है कि मुबाशरत नस्ल व औलाद ह़ासिल करने की निय्यत से होनी चाहिये जिस से मुसल्मान बढ़ें और दीन क़वी हो। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि मुबाशरत मुवाफ़िक़े हुक्मे शरअ़ हो जिस मह़ल में जिस त़रीक़े से मुबाह़ फ़रमाई उस से तजावुज़ न हो। (تفسیر احمدی) एक क़ौल येह भी है जो **अल्लाह** ने लिखा उस को त़लब करने के मा'ना हैं रमज़ान की रातों में कस्रते इबादत और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तुजू करना। **339 :** येह आयत सिरमा बिन क़ैस के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप मेह़नती आदमी थे एक दिन ब ह़ालते रोज़ा दिन भर अपनी ज़मीन में काम कर के शाम को घर आए बीवी से खाना मांगा वोह पकाने में मसरूफ़ हुई येह थके थे आंख लग गई जब खाना तय्यार कर के इन्हें बेदार किया इन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्यूं कि उस ज़माने में सो जाने के बा'द रोज़ादार पर खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था और इसी ह़ालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, ज़ो'फ़ इन्तिहा को पहुंच गया था दोपहर को ग़शी आ गई, इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और रमज़ान की रातों में इन के सबब से खाना पीना मुबाह़ फ़रमाया गया जैसे कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ की इनाबत व रुजूअ़ के बाइ़स क़ुरबत ह़लाल हुई। **340 :** रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई, मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्ह़े सादिक़ तक मुबाह़ फ़रमाया गया। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** सुब्ह़े सादिक़ तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत रोज़े के मुनाफ़ी नहीं, जिस शख़्स को ब ह़ालते जनाबत सुब्ह़ हुई वोह ग़ुस्ल कर ले उस का रोज़ा जाइज़ है (تفسیر احمدی) **मस्अला :** इसी से उ़लमा ने येह मस्अला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की निय्यत दिन में जाइज़ है। **341 :** इस से रोज़े की आख़िर ह़द मा'लूम होती है और येह मस्अला साबित होता है कि ब ह़ालते रोज़ा ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त में से हर एक के इरतिकाब से कफ़्फ़ारा लाज़िम हो जाता है। (مدارک) **मस्अला :** उ़लमा ने इस आयत को सौमे विसाल या'नी तह के रोज़े के मम्नूअ़ होने की दलील क़रार दिया है। **342 :** इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिये जिमाअ़ ह़लाल है जब कि वोह मो'तकिफ़ न हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में औरतों से क़ुरबत और बोसो किनार ह़राम है। **मस्अला :** मर्दों के ए'तिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है। **मस्अला :** मो'तकिफ़ को मस्जिद

www.dawateislami.net

ع ۲۳ ۷

تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا

आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का

فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ

कुछ माल ना जाइज़ तौर पर खा लो[343] जान बूझ कर तुम से नए चांद

الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِیَ مَوَاقِیْتُ لِلنَّاسِ وَ الْحَجِّ ؕ وَ لَیْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا

को पूछते हैं[344] तुम फ़रमा दो वोह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज के लिये[345] और येह कुछ भलाई नहीं कि[346] घरों में

الْبُیُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَ اْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ

पच्छीत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़ गारी है और घरों में दरवाज़ों

اَبْوَابِهَا ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾ وَ قَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

से आओ[347] और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ और **अल्लाह** की राह में लड़ो[348]

में खाना पीना सोना जाइज़ है। **मस्अला :** औ़रतों का ए'तिकाफ़ उन के घरों में जाइज़ है। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जाइज़ है जिस में जमाअ़त क़ाइम हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में रोज़ा शर्त़ है। **343 :** इस आयत में बात़िल त़ौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से, या जूए से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले, या रिश्वत या झूटी गवाही या चुग़ल ख़ोरी से येह सब मम्नूअ़ व ह़राम है। **मस्अला** इस से मा'लूम हुवा कि ना जाइज़ फ़ाएदे के लिये किसी पर मुक़द्दमा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना ना जाइज़ व ह़राम है, इसी त़रह़ अपने फ़ाएदे की ग़रज़ से दूसरे को ज़रर पहुंचाने के लिये हुक्काम पर असर डालना रिश्वतें देना ह़राम है। जो हुक्काम रस लोग हैं (या'नी जिन की पहुंच हुक्मरानों तक है) वोह इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें, ह़दीस शरीफ़ में मुसल्मानों के ज़रर पहुंचाने वाले पर ला'नत आई है। **344 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल और सा'लबा बिन ग़न्म अन्सारी के जवाब में नाज़िल हुई, इन दोनों ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह ﷺ ! चांद का क्या ह़ाल है ? इब्तिदा में बहुत बारीक निकलता है फिर रोज़ बरोज़ बढ़ता है यहां तक कि पूरा रोशन हो जाता है, फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की त़रह़ बारीक हो जाता है एक ह़ाल पर नहीं रहता। इस सुवाल से मक़्सद चांद के घटने बढ़ने की ह़िक्मतें दरयाफ़्त करना था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि सुवाल का मक़्सूद चांद के इख़्तिलाफ़ात का सबब दरयाफ़्त करना था। **345 :** चांद के घटने बढ़ने के फ़वाइद बयान फ़रमाए कि वोह वक़्त की अ़लामतें हैं और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुन्यावी काम इस से मुतअ़ल्लिक़ हैं ज़राअ़त, तिजारत लैन दैन के मुआ़मलात, रोज़े और ई़द के अवक़ात, औ़रतों की इ़द्दतें, ह़ैज़ के अय्याम, ह़म्ल और दूध पिलाने की मुद्दतें और दूध छुड़ाने के वक़्त, और हज के अवक़ात इस से मा'लूम होते हैं क्यूं कि अव्वल में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि येह इब्तिदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रोशन होता है तो मा'लूम हो जाता है कि येह महीने की दरमियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मा'लूम होता है कि महीना ख़त्म पर है इसी त़रह़ इन के माबैन अय्याम में चांद की ह़ालतें दलालत किया करती हैं, फिर महीनों से साल का ह़िसाब होता है। येह वोह क़ुदरती जन्तरी है जो आस्मान के सफ़ह़े पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब इस से अपना ह़िसाब मा'लूम करते हैं। **346 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह हज के लिये एह़राम बांधते तो किसी मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पच्छीत (मकान की पिछली दीवार) तोड़ कर आते और इस को नेकी जानते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **347 :** ख़्वाह ह़ालते एह़राम हो या ग़ैर एह़राम। **348 :** 6 सि.हि. में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल सय्यिदे आ़लम ﷺ मदीनए त़य्यिबा से ब क़स्दे उ़मरह मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए मुश्रिकीन ने हुज़ूर ﷺ को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुल्ह़ हुई कि आप साले आयिन्दा तशरीफ़ लाएं तो आप के लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा। चुनान्चे अगले साल 7 सि.हि. में हुज़ूर ﷺ उ़म्रए क़ज़ा के लिये तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सो की जमाअ़त थी मुसल्मानों को येह अन्देशा हुवा कि कुफ़्फ़ार वफ़ाए अ़हद न करेंगे और ह़रमे मक्का में शहरे ह़राम या'नी माहे ज़िल क़ा'दा में जंग करेंगे और मुसल्मान ब ह़ालते एह़राम हैं, इस

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

उन से जो तुम से लड़ते हैं[349] और ह़द से न बढ़ो[350] **अल्लाह** पसन्द नहीं रखता ह़द से बढ़ने वालों को

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

और काफ़िरों को जहां पाओ मारो[351] और उन्हें निकाल दो[352] जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था[353]

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और उन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है[354] और मस्जिदे ह़राम के पास उन से न लड़ो

حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

जब तक वोह तुम से वहां न लड़ें[355] और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो[356] काफ़िरों की येही

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۱﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۲﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى

सज़ा है फिर अगर वोह बाज़ रहें[357] तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और उन से लड़ो यहां तक कि

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى

कोई फ़ितना न रहे और एक **अल्लाह** की पूजा हो फिर अगर वोह बाज़ आएं[358] तो ज़ियादती नहीं मगर

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ

ज़ालिमों पर माहे ह़राम के बदले माहे ह़राम और अदब के बदले अदब है[359]

ह़ालत में जंग करना गिरां है क्यूं कि ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए इस्लाम तक न ह़रम में जंग जाइज़ थी न माहे ह़राम में न ह़ालते एह़राम में तो इन्हें तरद्दुद हुवा कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **349 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की ह़िमायत और ए'ज़ाज़ के लिये लड़ो ! येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से क़िताल करना वाजिब हुवा ख़्वाह वोह इब्तिदा करें या न करें, या येह मा'ना हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं। येह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्यूं कि वोह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसल्मानों के दुश्मन हैं, ख़्वाह उन्हों ने किसी वज्ह से जंग न की हो लेकिन मौक़अ़ पाने पर चूकने वाले नहीं। येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे मुक़ाबिल आएं और तुम से लड़ने वाले हों उन से लड़ो ! इस सूरत में ज़ईफ़, बूढ़े, बच्चे मजनून, अन्धे, बीमार, औ़रतें वग़ैरा जो जंग की क़ुदरत नहीं रखते इस हुक्म में दाख़िल न होंगे उन को क़त्ल करना जाइज़ नहीं। **350 :** जो जंग के क़ाबिल नहीं उन से न लड़ो, या जिन से तुम ने अ़हद किया हो, या बिग़ैर दा'वत के जंग न करो क्यूं कि त़रीक़ए शरअ़ येह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दी जाए अगर इन्कार करें तो जिज़्या त़लब किया जाए, इस से भी मुन्किर हों तब जंग की जाए ! इस मा'ना पर आयत का हुक्म बाक़ी है मन्सूख़ नहीं। (تفسیر احمدی) **351 :** ख़्वाह ह़रम हो या ग़ैरे ह़रम **352 :** मक्कए मुकर्रमा से **353 :** साले गुज़श्ता। चुनान्चे रोज़े फ़त्ह़े मक्का जिन लोगों ने इस्लाम क़बूल न किया उन के साथ येही किया गया। **354 :** फ़साद से शिर्क मुराद है या मुसल्मानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना। **355 :** क्यूं कि येह हुरमते ह़रम (ह़रम की ता'ज़ीम) के ख़िलाफ़ है। **356 :** कि उन्हों ने ह़रम शरीफ़ की बे हुरमती की। **357 :** क़त्ल व शिर्क से **358 :** कुफ़्र व बात़िल परस्ती से **359 :** जब गुज़श्ता साल ज़िल क़ा'दा 6 सि.हि. में मुश्रिकीने अ़रब ने माहे ह़राम की हुरमत व अदब का लिहाज़ न रखा और तुम्हें अदाए उ़मरह से रोका तो येह बे हुरमती उन से वाक़ेअ़ हुई और उस के बदले ब तौफ़ीक़े इलाही 7 सि.हि. के ज़िल क़ा'दा में तुम्हें मौक़अ़ मिला कि तुम उ़म्रए क़ज़ा को अदा करो।

www.dawateislami.net

فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ص

तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उस ने की

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ

और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह डर वालों के साथ है और अल्लाह की राह में ख़र्च

مع اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

करो[360] और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो[361] और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ

अल्लाह के मह़बूब हैं और ह़ज और उ़मरह अल्लाह के लिये पूरा करो[362] फिर अगर तुम रोके जाओ[363] तो कुरबानी भेजो

مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ

जो मुयस्सर आए[364] और अपने सर न मुंडाओ जब तक कुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए[365]

360 : इस से तमाम दीनी उमूर में त़ाअ़त व रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करना मुराद है ख़्वाह जिहाद हो या और नेकियां। **361 :** राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ का तर्क भी सबबे हलाक है और इसराफ़े बे जा भी, और इस त़रह़ और चीज़ भी जो ख़त़रा व हलाक का बाइस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है ह़त्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी त़रह़ ख़ुदकुशी करना। **मस्अला :** उ़लमा ने इस से येह मस्अला अख़्ज़ किया है कि जिस शहर में त़ाऊ़न हो वहां न जाएं अगर्चे वहां के लोगों को वहां से भागना मम्नूअ़ है। **362 :** और इन दोनों को इन के फ़राइज़ व शराइत़ के साथ ख़ास अल्लाह के लिये बे सुस्ती व नुक़्सान कामिल करो। ह़ज नाम है एह़राम बांध कर नवीं ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के त़वाफ़ का। इस के लिये ख़ास वक़्त मुक़र्रर है जिस में येह अफ़्आ़ल किये जाएं तो ह़ज है। **मस्अला :** ह़ज बक़ौले राजेह़ 9 हि. में फ़र्ज़ हुवा इस की फ़र्ज़िय्यत क़त़ई है। **ह़ज** के फ़राइज़ येह हैं (1) एह़राम (2) अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ (3) त़वाफ़े ज़ियारत। **ह़ज** के वाजिबात (1) मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ (2) सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई (3) रम्ये जिमार (शयात़ीन को कंकरियां मारना) और (4) आफ़ाक़ी (मक्का के बाहर रहने वाले) के लिये त़वाफ़े रुजूअ़ और (5) ह़ल्क़ या तक़्सीर (सर के बाल मूंडना या छोटे करवाना)। **उ़मरह** के रुक्न त़वाफ़ व सई हैं, और इस की शर्त़ एह़राम व ह़ल्क़ है। **ह़ज व उ़मरह** के चार त़रीक़े हैं (1) इफ़्राद बिल ह़ज : वोह येह है कि ह़ज के महीनों में या इन से क़ब्ल, मीक़ात से या इस से पहले ह़ज का एह़राम बांधे और दिल से इस की निय्यत करे ख़्वाह ज़बान से तल्बिया के वक़्त इस का नाम ले या न ले। (2) इफ़्राद बिल उ़मरह : वोह येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे ह़ज में या इन से क़ब्ल, उ़मरह का एह़राम बांधे और दिल से इस का क़स्द करे ख़्वाह वक़्ते तल्बिया ज़बान से इस का ज़िक्र करे या न करे, और इस के लिये अश्हुरे ह़ज में या इस से क़ब्ल त़वाफ़ करे ख़्वाह इस साल में ह़ज करे या न करे मगर ह़ज व उ़मरह के दरमियान इलमामे सह़ीह़ करे इस त़रह़ कि अपने अह्ल की त़रफ़ ह़लाल हो कर वापस हो। (इलमामे सह़ीह़ येह है कि उ़मरह के बा'द एह़राम खोल कर अपने वत़न को वापस जाए।) (3) क़िरान : येह है कि ह़ज व उ़मरह दोनों को एक एह़राम में जम्अ़ करे वोह एह़राम मीक़ात से बांधा हो या इस से पहले, अश्हुरे ह़ज में या इस से क़ब्ल, अव्वल से ह़ज व उ़मरह दोनों की निय्यत हो ख़्वाह वक़्ते तल्बिया, ज़बान से दोनों का ज़िक्र करे या न करे, पहले उ़मरह के अफ़्आ़ल अदा करे फिर ह़ज के। (4) तमत्तोअ़ : येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे ह़ज में या इस से क़ब्ल, उ़मरह का एह़राम बांधे और अश्हुरे ह़ज में उ़मरह करे या अक्सर त़वाफ़ इस के अश्हुरे ह़ज में हों ! और ह़लाल हो कर ह़ज के लिये एह़राम बांधे और इसी साल ह़ज करे, और ह़ज व उ़मरह के दरमियान अपने अह्ल के साथ इलमामे सह़ीह़ न करे। (مسکین وغ) **मस्अला :** इस आयत से उ़लमा ने क़िरान साबित किया है। **363 :** ह़ज या उ़मरह से। बा'द शुरूअ़ करने और घर से निकलने और मोह़रिम हो जाने के या'नी तुम्हें कोई मानेअ़ अदाए ह़ज या उ़मरह से पेश आए ख़्वाह वोह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरा, ऐसी ह़ालत में तुम एह़राम से बाहर आ जाओ। **364 :** ऊंट या गाय या बकरी और येह कुरबानी भेजना वाजिब है। **365 :** या'नी ह़रम में जहां इस के ज़ब्ह़ का हुक्म है। **मस्अला :** येह कुरबानी बैरूने ह़रम नहीं हो सकती।

www.dawateislami.net

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ

फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है[366] तो बदला दे रोज़े[367]

اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۫ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ

या ख़ैरात[368] या कुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उ़मरह मिलाने का फ़ाएदा उठाए[369]

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي

उस पर कुरबानी है जैसी मुयस्सर आए[370] फिर जिसे मक्दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में

الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ

रखे[371] और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुए येह हुक्म उस

يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ

के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो[372] और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ ع ٢٤ ٨

अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है हज के कई महीने हैं जाने हुए[373] तो जो उन में हज की निय्यत

الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ

करे[374] तो न औ़रतों के सामने सोहबत का तज़्किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा[375] हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई

366 : जिस से वोह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडा ले **367 :** तीन दिन के **368 :** छ[6] मिस्कीनों का खाना हर मिस्कीन के लिये पौने दो सेर गेहूं। (दो किलो में अस्सी (80) ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत") **369 :** या'नी तमत्तोअ़ करे **370 :** येह कुरबानी तमत्तोअ़ की है हज के शुक्र में वाजिब हुई ख़्वाह तमत्तोअ़ करने वाला फ़क़ीर हो, ईदे अज़्हा की कुरबानी नहीं जो फ़क़ीर व मुसाफ़िर पर वाजिब नहीं होती। **371 :** या'नी यकुम शव्वाल से नवीं ज़िल हिज्जा तक एहराम बांधने के बा'द इस दरमियान में जब चाहे रख ले ख़्वाह एक साथ या मुतफ़र्रिक़ कर के, बेहतर येह है कि 7, 8, 9 ज़िल हिज्जा को रखे। **372 मस्अला :** अहले मक्का के लिये न तमत्तोअ़ है न क़िरान, और हुदूदे मवाक़ीत के अन्दर के रहने वाले अहले मक्का में दाख़िल हैं। **मवाक़ीत :** पांच हैं (1) ज़ुल हुलैफ़ा (2) ज़ाते इर्क़ (3) जुह़फ़ा (4) क़र्न (5) यलम्लम। "ज़ुल हुलैफ़ा" अहले मदीना के लिये, "ज़ाते इर्क़" अहले इराक़ के लिये, "जुह़फ़ा" अहले शाम के लिये, "क़र्न" अहले नज्द के लिये, "यलम्लम" अहले यमन के लिये। **373 :** शव्वाल, ज़ुल क़ा'दा और दस तारीख़ें ज़िल हिज्जा की। हज के अफ़्आ़ल इन्ही अय्याम में दुरुस्त हैं। **मस्अला :** अगर किसी ने इन अय्याम से पहले हज का एहराम बांधा तो जाइज़ है लेकिन ब कराहत। **374 :** या'नी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे एहराम बांध कर या तल्बिया कह कर या हदी (कुरबानी का जानवर) चला कर। उस पर येह चीज़ें लाज़िम हैं जिन का आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **375 :** "رَفَث" जिमाअ़ या औ़रतों के सामने ज़िक्रे जिमाअ़ या कलामे फ़ोह़्श करना है, निकाह़ इस में दाख़िल नहीं। **मस्अला :** मोह़रिम व मोह़रिमा (एह़राम वाले अजनबी मर्द व औ़रत) का निकाह़ जाइज़ है मुजामअ़त जाइज़ नहीं। "فُسُوق" से मआ़सी व सय्यिआत, और "جِدال" से झगड़ा मुराद है ख़्वाह वोह अपने रफ़ीक़ों या ख़ादिमों के साथ हो या गैरों के साथ।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ

करो अल्लाह उसे जानता है[376] और तोशा (सफ़र का ख़र्च) साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है[377] और मुझ से डरते रहो

يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

ऐ अ़क़्ल वालो[378] तुम पर कुछ गुनाह नहीं[379] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो

فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ

तो जब अ़रफ़ात से पलटो[380] तो अल्लाह की याद करो[381] मश्अ़रे ह़राम के पास[382] और

اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ

उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक तुम इस से पहले बहके हुए थे[383] फिर बात

اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

येह है कि ऐ कुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहां से लोग पलटते हैं[384] और अल्लाह से मुआफ़ी मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ

मेहरबान है फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको[385] तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे[386] बल्कि

376 : बदियों की मुमानअ़त के बा'द नेकियों की तरग़ीब फ़रमाई कि बजाए फ़िस्क़ के तक़्वा और बजाए जिदाल के अख़्लाक़े ह़मीदा इख़्तियार करो। **377 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ यमनी ह़ज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर सुवाल शुरूअ़ करते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के मुरतकिब होते उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो! औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़ गारी है। एक क़ौल येह है कि तक़्वा का तोशा साथ लो जिस त़रह दुन्यवी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिये परहेज़ गारी का तोशा लाज़िम है। **378 :** या'नी अ़क़्ल का मुक़्तज़ा ख़ौफ़े इलाही है जो अल्लाह से न डरे वोह बे अ़क़्लों की त़रह है। **379 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मानों ने ख़याल किया कि राहे ह़ज में जिस ने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उस का ह़ज ही क्या? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** जब तक तिजारत से अफ़्आ़ले ह़ज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत मुबाह़ है। **380 :** "अ़रफ़ात" एक मक़ाम का नाम है जो मौक़िफ़ (ह़ाजियों के ठहरने की जगह) है। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि ह़ज़रते आदम और ह़ज़रते ह़व्वा जुदाई के बा'द 9 ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात के मक़ाम पर जम्अ़ हुए और दोनों में तआ़रुफ़ हुवा, इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा और मक़ाम का नाम अ़रफ़ात हुवा। एक क़ौल येह है कि चूंकि इस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा है। **मस्अला :** अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़र्ज़ है क्यूं कि इफ़ाज़ा (मश्अ़रे ह़राम की त़रफ़ जाना) बिला वुक़ूफ़ मुतसव्वर नहीं। **381 :** तल्बिया व तह्लील ("لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ" और "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना) व तक्बीर व सना व दुआ़ के साथ या नमाज़े मग़रिब व इशा के साथ **382 :** मश्अ़रे ह़राम जबले क़ुज़ह़ है जिस पर इमाम वुक़ूफ़ करता है। **मस्अला :** वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा मौक़िफ़ है इस में वुक़ूफ़ वाजिब है बे उ़ज़्र तर्क करने से दम लाज़िम आता है, और मश्अ़रे ह़राम के पास वुक़ूफ़ अफ़्ज़ल है। **383 :** त़रीक़े ज़िक्र व इबादत कुछ न जानते थे। **384 :** क़ुरैश मुज़्दलिफ़ा में ठहर रहते थे और सब लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ न करते, जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो येह मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते, इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ पलटें येही ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام की सुन्नत है। **385 :** त़रीक़े ह़ज का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ाजी 8 ज़िल ह़िज्जा की सुब्ह़ को मक्कए मुकर्रमा से मिना की त़रफ़ रवाना हो वहां अ़रफ़ा या'नी 9 ज़िल ह़िज्जा की फ़ज्र तक ठहरे, उसी रोज़ मिना से अ़रफ़ात आए। बा'दे ज़वाल इमाम दो ख़ुत़्बे पढ़े यहां ह़ाजी ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ इमाम के साथ ज़ोहर के वक़्त में जम्अ़ कर के पढ़े, इन दोनों नमाज़ों के लिये अज़ान एक होगी और तक्बीरें दो और दोनों नमाज़ों के दरमियान सुन्नते ज़ोहर के सिवा कोई नफ़्ल न पढ़ा जाए, इस जम्अ़ के लिये इमामे आ'ज़म ज़रूरी है अगर इमामे

اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي

इस से ज़ियादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में दे और

الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا

आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में

حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ النصف

भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा[387] ऐसों को उन की कमाई से

مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْۤ اَيَّامٍ

भाग है[388] और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है[389] और अल्लाह की याद करो गिने हुए

مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَاۤ

दिनों में[390] तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस

اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

पर गुनाह नहीं परहेज़ गार के लिये[391] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

आ'ज़्म न हो, या गुमराह बद मज़्हब हो तो हर एक नमाज़ अ़लाहृदा अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए। और अ़रफ़ात में ग़ुरूब तक ठहरे फिर मुज़्दलिफ़ा की त़रफ़ लौटे और जबले क़ुज़ह के क़रीब उतरे, मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इशा की नमाज़ें जम्अ़ कर के इशा के वक़्त पढ़े और फ़ज्र की नमाज़ ख़ूब अव्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े। वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा और बत़्ने उ़रना के सिवा तमाम अ़रफ़ात मौक़िफ़ है। जब सुब्ह़ ख़ूब रोशन हो तो रोज़े नह़्र या'नी 10 ज़िल ह़िज्जा को मिना की त़रफ़ आए और बत़्ने वादी से जमरए अ़क़बा की 7 मर्तबा रमी करे। फिर अगर चाहे क़ुरबानी करे फिर बाल मुंडाए या कतराए, फिर अय्यामे नह़्र में से किसी दिन त़वाफ़े ज़ियारत करे। फिर मिना आ कर तीन रोज़ इक़ामत करे और ग्यारहवीं के ज़वाल के बा'द तीनों जमरों की रमी करे उस जमरे से शुरूअ़ करे जो मस्जिद के क़रीब है फिर जो उस के बा'द है फिर जमरए अ़क़बा, हर एक की सात सात मरतबा, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही, फिर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ चला आए। (तफ़्सील कुतुबे फ़िक़्ह में मज़्कूर है)। **386 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब ह़ज के बा'द का'बे के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे, इस्लाम में बताया गया कि येह शोहरत व ख़ुदनुमाई की बेकार बातें हैं, बजाए इस के ज़ौक़ो शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो। **मस्अला :** इस आयत से ज़िक्रे जह्र व ज़िक्रे जमाअ़त साबित होता है। **387 :** दुआ़ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाईं **: एक** वोह काफ़िर जिन की दुआ़ में सिर्फ़ त़लबे दुन्या होती थी आख़िरत पर उन का ए'तिक़ाद न था, उन के ह़क़ में इर्शाद हुवा कि आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं। **दूसरे** वोह ईमानदार जो दुन्या व आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ़ करते हैं। **मस्अला :** मोमिन दुन्या की बेहतरी जो त़लब करता है वोह भी अम्रे जाइज़ और दीन की ताईद व तक़्विय्यत के लिये, इस लिये इस की येह दुआ़ भी उमूरे दीन से है। **388 : मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि दुआ़ कस्ब व आ'माल में दाख़िल है। ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक्सर येही दुआ़ फ़रमाते थे "اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ"। **389 :** अ़न्क़रीब क़ियामत क़ाइम कर के बन्दों का हिसाब फ़रमाएगा। तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्रो दुआ़ व त़ाअ़त में जल्दी करें। (مدارک وخازن) **390 :** उन दिनों से अय्यामे तशरीक़ (ज़िल ह़िज्जा के तीन दिन 11, 12, 13), और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बा'द और रम्ये जिमार के वक़्त तक्बीर कहना मुराद है। **391 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग दो फ़रीक़ थे बा'ज़ जल्दी करने वालों को गुनहगार बताते थे, बा'ज़ रह जाने वालों को। क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनहगार नहीं।

www.dawateislami.net

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا

और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे[392] और अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को

فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ

गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता

فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾ وَاِذَا قِيْلَ

फिरे और खेती और जानें तबाह करे और **अल्लाह** फ़साद से राज़ी नहीं और जब उस से कहा

لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की[393] ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ

और कोई आदमी अपनी जान बेचता है[394] **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर

بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो[395] और शैतान

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا

के क़दमों पर न चलो[396] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और अगर इस के बा'द भी बिचलो (बहको) कि

392 शाने नुज़ूल : येह और इस से अगली आयत अख़्नस बिन शुरैक़ मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत लजाजत (ख़ुशामद) से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आप की महब्बत का दा'वा करता और इस पर क़समें खाता, और दरपर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था, मुसल्मानों के मवेशी को इस ने हलाक किया और उन की खेती को आग लगा दी। **393 :** गुनाह से ज़ुल्म व सरकशी (करना) और नसीहत की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करना मुराद है। (خازن) **394 शाने नुज़ूल :** हज़रते सुहैब इब्ने सिनान रूमी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत कर के हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ की ख़िदमत में मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ रवाना हुए, मुश्रिकीने क़ुरैश की एक जमाअ़त ने आप का तआ़क़ुब किया तो आप सुवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ क़ुरैश ! तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूं, और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूं ! उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअ़त का खेत (ख़ातिमा) हो जाएगा ! अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में मदफ़ून है तो मैं तुम्हें उस का पता बता दूं तुम मुझ से तअर्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ! वोह इस पर राज़ी हो गए और आप ने अपने तमाम माल का पता बता दिया, जब हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो येह आयत नाज़िल हुई, हुज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारी येह जान फ़रोशी बड़ी नाफ़ेअ़ तिजारत है। **395 शाने नुज़ूल :** अहले किताब में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ पर ईमान लाने के बा'द शरीअ़ते मूसवी के बा'ज़ अहकाम पर क़ाइम रहे, शम्बा (हफ़्ते के दिन) की ता'ज़ीम करते इस रोज़ शिकार से इज्तिनाब लाज़िम जानते, और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते, और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह हैं इन का करना ज़रूरी नहीं और तौरैत में इन से इज्तिनाब लाज़िम किया गया है तो इन के तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअ़ते मूसवी पर अ़मल भी होता है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अहकाम का पूरा इत्तिबाअ़ करो या'नी तौरैत के अहकाम मन्सूख़ हो गए अब उन से तमस्सुक (या'नी उन पर अ़मल) न करो। (خازن) **396 :** उस के वसाविस व शुबुहात में न आओ।

www.dawateislami.net

جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۰۹﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ

तुम्हारे पास रोशन हुक्म आ चुके[397] तो जान लो कि अल्लाह ज़बर दस्त हिक्मत वाला है काहे के इन्तिज़ार में हैं[398]

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِیْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓىٕكَةُ وَقُضِیَ الْاَمْرُ ؕ

मगर येही कि अल्लाह का अ़ज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़िरिश्ते उतरें[399] और काम हो चुके

وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾ سَلْ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ كَمْ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنْ اٰیَةٍۭ

और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह ही की त़रफ़ है बनी इसराईल से पूछो हम ने कितनी रोशन निशानियां उन्हें

بَیِّنَةٍ ؕ وَمَنْ یُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ

दीं[400] और जो अल्लाह की आई हुई ने'मत को बदल दे[401] तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब

الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾ زُیِّنَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَیَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِیْنَ

सख़्त है काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता की गई[402] और मुसल्मानों से हंसते

اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِیْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ

हैं[403] और डर वाले उन से ऊपर होंगे क़ियामत के दिन[404] और ख़ुदा जिसे

یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِیّٖنَ

चाहे बे गिनती दे लोग एक दीन पर थे[405] फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِیَحْكُمَ بَیْنَ

ख़ुश ख़बरी देते[406] और डर सुनाते[407] और उन के साथ सच्ची किताब उतारी[408] कि वोह लोगों में

وقف لازم

397 : और बा वुजूद वाज़ेह़ दलीलों के इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो **398 :** मिल्लते इस्लाम के छोड़ने और शैत़ान की फ़रमां बरदारी करने वाले **399 :** जो अ़ज़ाब पर मामूर हैं। **400 :** कि उन के अम्बिया के मो'जिज़ात को उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील बनाया, उन के इर्शाद और उन की किताबों को दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का शाहिद किया। **401 :** अल्लाह की ने'मत से आयाते इलाहिय्यह मुराद हैं जो सबबे रुश्दो हिदायत हैं और इन की बदौलत गुमराही से नजात ह़ासिल होती है, इन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और हुज़ूर की नुबुव्वत व रिसालत का बयान है। यहूदो नसारा की तह़रीफ़ें उस ने'मत की तब्दील है। **402 :** वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं **403 :** और सामाने दुन्यवी से इन की बे रग़बती देख कर इन की तह़क़ीर करते हैं, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द और अ़म्मार बिन यासिर और सुहैब व बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को देख कर कुफ़्फ़ार तमस्ख़ुर (मज़ाक़) करते थे और दौलते दुन्या के ग़ुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे। **404 :** या'नी ईमानदार रोज़े क़ियामत जन्नाते आ़लिया में होंगे और मग़रूर कुफ़्फ़ार जहन्नम में ज़लीलो ख़्वार। **405 :** ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने से अ़हदे नूह़ तक सब लोग एक दीन और एक शरीअ़त पर थे, फिर इन में इख़्तिलाफ़ हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, येह बि'सत में पहले रसूल हैं। (خازن) **406 :** ईमानदारों और फ़रमां बरदारों को सवाब की। (مدارک وخازن) **407 :** काफ़िरों और ना फ़रमानों को अ़ज़ाब का। (خازن) **408 :** जैसा कि ह़ज़रते आदम व शीस व इदरीस पर सह़ाइफ़ और ह़ज़रते मूसा पर तौरैत, ह़ज़रते दावूद पर ज़बूर, ह़ज़रते ईसा पर इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर क़ुरआन।

www.dawateislami.net

النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ

उन के इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला कर दे और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी[409] बा'द इस के कि

بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا

उन के पास रोशन हुक्म आ चुके[410] आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वोह हक़ बात सुझा दी

اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ

जिस में झगड़ रहे थे अपने हुक्म से और अल्लाह जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ

सीधी राह दिखाए क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर

مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۖ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا

अगलों की सी रूदाद न आई[411] पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए

حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ ۗ أَلَا إِنَّ

यहां तक कि कह उठा रसूल[412] और उस के साथ के ईमान वाले कब आएगी अल्लाह की मदद[413] सुन लो बेशक

نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ

अल्लाह की मदद क़रीब है तुम से पूछते हैं[414] क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ

करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है

409 : येह इख़्तिलाफ़ तब्दील व तहरीफ़ और ईमान व कुफ़्र के साथ था जैसा कि यहूदो नसारा से वाक़ेअ़ हुवा। (خازن) **410 :** या'नी येह इख़्तिलाफ़ नादानी से न था बल्कि **411 :** और जैसी सख़्तियां उन पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं, इस में इन्हें सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم सायए का'बा में अपनी चादर मुबारक से तक्या किये हुए तशरीफ़ फ़रमा थे हम ने हुज़ूर से अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यूं मदद नहीं करते ? फ़रमाया : तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे, और इन में की कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी। **412 :** या'नी शिद्दत इस निहायत (ह़द) को पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उन के फ़रमां बरदार मोमिन भी त़लबे मदद में जल्दी करने लगे बा वुजूदे कि रसूल बड़े साबिर होते हैं और उन के अस्ह़ाब भी। लेकिन बा वुजूद इन इन्तिहाई मुसीबतों के वोह लोग अपने दीन पर क़ाइम रहे और कोई मुसीबत व बला उन के हाल को मुतग़य्यर न कर सकी। **413 :** इस के जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और येह इर्शाद हुवा **414** **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्र बिन जमूह़ के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे, इन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से सुवाल किया था

www.dawateislami.net

وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ

और जो भलाई करो[415] बेशक अल्लाह उसे जानता है[416] तुम पर फ़र्ज़ हुवा ख़ुदा की राह में लड़ना

وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْــًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ

और वोह तुम्हें ना गवार है[417] और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि

تُحِبُّوْا شَيْــًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ ع ۲۶

कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[418]

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ

तुम से पूछते हैं माहे हराम में लड़ने का हुक्म[419] तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है[420]

وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ

और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे हराम से रोकना और उस के बसने

اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا

वालों को निकाल देना[421] अल्लाह के नज़्दीक येह गुनाह इस से भी बड़े हैं और इन का फ़साद[422] क़त्ल से सख़्त तर है[423] और

يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ

हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े[424] और तुम में

कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें ? इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कसीर ख़र्च करो उस में सवाब है और मसारिफ़ उस के येह हैं। **मस्अला :** आयत में सदक़ए नाफ़िला का बयान है, मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं (جمل وغیرہ) **415 :** येह हर नेकी को आम है इन्फ़ाक़ हो या और कुछ, और बाक़ी मसारिफ़ भी इस में आ गए। **416 :** उस की जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। **417 मस्अला :** जिहाद फ़र्ज़ है जब इस की शराइत़ पाई जाएं, अगर काफ़िर मुसल्मानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद फ़र्ज़े ऐन होता है वरना फ़र्ज़े किफ़ाया। **418 :** कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है। तो तुम पर लाज़िम है हुक्मे इलाही की इत़ाअ़त करो और उसी को बेहतर समझो चाहे वोह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो। **419 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श की सरकर्दगी में मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रवाना फ़रमाई थी उस ने मुश्रिकीन से क़िताल किया, उन का ख़याल था कि वोह रोज़ जुमादल उख़्रा का आख़िर दिन है मगर दर ह़क़ीक़त चांद 29 को हो गया था और वोह रजब की पहली तारीख़ थी, इस पर कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को आ़र दिलाई कि तुम ने माहे ह़राम में जंग की और हुज़ूर से इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होने लगे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **420 :** मगर सहाबा से येह गुनाह वाक़ेअ़ नहीं हुवा क्यूं कि उन्हें चांद होने की ख़बर ही न थी उन के नज़्दीक वोह दिन माहे ह़राम रजब का न था। **मस्अला :** माह हाए ह़राम में जंग की हुरमत का हुक्म आयए "فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ" (तो मुश्रिकों को मारो जहां पाओ) से मन्सूख़ हो गया। **421 :** जो मुश्रिकीन से वाक़ेअ़ हुवा कि उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब को साले हुदैबिया का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रोका और आप के ज़मानए क़ियामे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप को और आप के अस्हाब को इतनी ईज़ाएं दीं कि वहां से हिजरत करना पड़ी **422 :** या'नी मुश्रिकीन का। कि वोह शिर्क करते हैं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और मोमिनीन को मस्जिदे ह़राम से रोकते और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देते हैं **423 :** क्यूं कि क़त्ल तो बा'ज़ ह़ालात में मुबाह़ होता है और कुफ़्र किसी ह़ाल में मुबाह़ नहीं, और यहां तारीख़ का मश्कूक होना उ़ज़्रे मा'क़ूल है और कुफ़्फ़ार के कुफ़्र के लिये तो कोई उ़ज़्र ही नहीं। **424 :** इस में ख़बर दी गई है कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे कभी इस के ख़िलाफ़ न होगा और जहां तक उन से मुम्किन होगा वोह मुसल्मानों को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने की सई करते

www.dawateislami.net

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

दुन्या में और आख़िरत में[425] (الف) और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिये अपने घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े

اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۱۸﴾ يَسْــَٔلُوْنَكَ

वोह रहमते इलाही के उम्मीद वार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[425] (ب) तुम से शराब

عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ

और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और

اِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है[426] और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें[427] तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे[428]

रहेंगे। "اِنِ اسْتَطَاعُوْا" से मुस्तफ़ाद होता है कि बि करमिही तआ़ला वोह अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे। **425 (الف) मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम आ'माल बातिल हो जाते हैं। आख़िरत में तो इस तरह कि उन पर कोई अज्रो सवाब नहीं, और दुन्या में इस तरह कि शरीअ़त मुरतद के क़त्ल का हुक्म देती है, उस की औ़रत उस पर ह़लाल नहीं रहती, वोह अपने अक़ारिब का वरसा पाने का मुस्तहि़क़ नहीं रहता, उस का माल मा'सूम नहीं रहता, उस की मद्ह़ो सना व इमदाद जाइज़ नहीं। (روح البيان وغيره) **425 (ب) शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श की सरकर्दगी में जो मुजाहिदीन भेजे गए थे उन की निस्बत बा'ज़ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि येह दिन रजब का है इस लिये उस रोज़ क़िताल करना गुनाह तो न हुवा लेकिन इस का कुछ सवाब भी न मिलेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि उन का येह अ़मले जिहाद मक़्बूल है और इस पर उन्हें उम्मीद वारे रह़मते इलाही रहना चाहिये और येह उम्मीद क़त्अ़न पूरी होगी। (خازن) **मस्अला :** "يَرْجُوْنَ" से ज़ाहिर हुवा कि अ़मल से अज्र वाजिब नहीं होता बल्कि सवाब देना मह़्ज़ फ़ज़्ले इलाही है। **426 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़तरा कूंएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं, और अगर दरिया में शराब का क़तरा पड़े फिर दरिया ख़ुश्क हो और वहां घास पैदा हो उस में अपने जानवरों को न चराऊं। سُبْحٰنَ اللّٰه ! गुनाह से किस क़दर नफ़रत है। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى اِتِّبَاعَهُمْ (अल्लाह तआ़ला हमें इन की इत्तिबाअ़ नसीब फ़रमाए)। शराब 3 सि.हि. में ग़ज़्वए अह़ज़ाब से चन्द रोज़ बा'द ह़राम की गई इस से क़ब्ल येह बताया गया था कि जूए और शराब का गुनाह इन के नफ़्अ़ से ज़ियादा है। नफ़्अ़ तो येही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इस की ख़रीदो फ़रोख़्त से तिजारती फ़ाएदा होता है, और जूए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है। और गुनाहों और मफ़्सदों का क्या शुमार ! अ़क़्ल का ज़वाल, ग़ैरत व ह़मिय्यत का ज़वाल, इबादात से मह़रूमी, लोगों से अ़दावतें, सब की नज़र में ख़्वार होना, दौलतो माल की इज़ाअ़त। **एक रिवायत** में है कि जिब्रीले अमीन ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला को जा'फ़रे त़य्यार की चार ख़स्लतें पसन्द हैं हुज़ूर ने ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से दरयाफ़्त फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि **एक** तो येह है कि मैं ने शराब कभी नहीं पी या'नी हुक्मे हुरमत से पहले भी और इस की वज्ह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अ़क़्ल ज़ाइल होती है और मैं चाहता था कि अ़क़्ल और भी तेज़ हो, **दूसरी ख़स्लत** येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है न नफ़्अ़ दे सके न ज़रर, **तीसरी** ख़स्लत येह है कि कभी मैं ज़िना में मुब्तला न हुवा कि इस को बे ग़ैरती समझता था, **चौथी** ख़स्लत येह कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था। **मस्अला :** शत़रन्ज, ताश वग़ैरा हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए सब जूए में दाख़िल और ह़राम हैं। (روح البيان) **427 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को सदक़ा देने की रग़्बत दिलाई तो आप से दरयाफ़्त किया गया कि मिक़्दार इर्शाद फ़रमाएं कितना माल राहे ख़ुदा में दिया जाए ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **428 :** या'नी जितना

www.dawateislami.net

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾ فِی الدُّنْیَا وَ

इसी तरह अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम दुन्या और आख़िरत के काम सोच

الْاٰخِرَةِ ؕ وَ یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ الْیَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَیْرٌ ؕ وَ اِنْ

कर करो[429] और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं[430] तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर

تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ

अपना उन का ख़र्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿٢٢٠﴾ وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ

तो तुम्हें मशक़्क़त में डालता बेशक अल्लाह ज़बर दस्त हिक्मत वाला है और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह़ न करो

حَتّٰى یُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَیْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَ لَا

जब तक मुसल्मान न हो जाएं[431] और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका से अच्छी[432] अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और

تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَتّٰى یُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَیْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ

मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न लाएं[433] और बेशक मुसल्मान ग़ुलाम मुश्रिक से अच्छा

तुम्हारी ह़ाजत से ज़ाइद हो। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ाजत से ज़ाइद माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था, सह़ाबए किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत की क़द्र ले कर बाक़ी सब राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ कर देते थे ! येह हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ हो गया। **429 :** कि जितना तुम्हारी दुन्यवी ज़रूरत के लिये काफ़ी हो वोह ले कर बाक़ी सब अपने नफ़्ए आख़िरत के लिये ख़ैरात कर दो। (خازن) **430 :** कि इन के अम्वाल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है। **शाने नुज़ूल :** आयत "اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا" के नुज़ूल के बा'द लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उन का खाना पीना अ़लाहदा कर दिया, इस में येह सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिये पकाया और उस में से कुछ बच रहा वोह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया उस में यतीमों का नुक़्सान हुवा, येह सूरतें देख कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अगर यतीम के माल की ह़िफ़ाज़त की नज़र से उस का खाना, उस के औलिया अपने खाने के साथ मिला लें तो इस का क्या हुक्म है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ाएदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई। **431 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते मरसद ग़नवी एक बहादुर शख़्स थे सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से तदबीर के साथ मुसल्मानों को निकाल लाएं ! वहां अ़नाक़ नामी एक मुश्रिका औ़रत थी ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के साथ मह़ब्बत रखती थी ह़सीन और मालदार थी, जब उस को इन की आमद की ख़बर हुई तो वोह आप के पास आई और त़ालिबे विसाल हुई, आप ने बख़ौफ़े इलाही उस से ए'राज़ किया और फ़रमाया कि इस्लाम इस की इजाज़त नहीं देता ! तब उस ने निकाह़ की दरख़्वास्त की, आप ने फ़रमाया कि येह भी रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है, अपने काम से फ़ारिग़ हो कर जब आप ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो ह़ाल अ़र्ज़ कर के निकाह़ की बाबत दरयाफ़्त किया ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : जो कोई नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र करे वोह मुश्रिक है ख़्वाह अल्लाह को वाह़िद ही कहता हो और तौह़ीद का मुद्दई हो। (خازن) **432 शाने नुज़ूल :** एक रोज़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने किसी ख़त़ा पर अपनी बांदी के त़मांचा मारा फिर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उस का ह़ाल दरयाफ़्त किया। अ़र्ज़ किया कि वोह अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और हुज़ूर की रिसालत की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब वुज़ू करती और नमाज़ पढ़ती है ! हुज़ूर ने फ़रमाया : वोह मोमिना है। आप ने अ़र्ज़ किया तो उस की क़सम ! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर मब्ऊ़स फ़रमाया मैं उस को आज़ाद कर के उस के साथ निकाह़ करूंगा ! और आप ने ऐसा ही किया, इस पर लोगों ने त़ा'ना ज़नी की, कि तुम ने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह़ किया बा वुजूदे कि फ़ुलां मुश्रिका हुर्रा (आज़ाद) औ़रत तुम्हारे लिये ह़ाज़िर है वोह ह़सीन भी है मालदार भी है, इस पर नाज़िल हुवा "وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ" या'नी मुसल्मान बांदी मुश्रिका से बेहतर है ख़्वाह मुश्रिका आज़ाद हो और हुस्न व माल की वज्ह से अच्छी मा'लूम होती हो। **433 :** येह औ़रत के

www.dawateislami.net

وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ

अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं[434] और **अल्लाह** जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़

وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ ع

ع ۲۸ ۱۵

बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीह़त मानें

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي

और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक्म[435] तुम फ़रमाओ वोह नापाकी है तो औ़रतों से अलग रहो

الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ

हैज़ के दिनों और उन से नज़्दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ

حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

जहां से तुम्हें **अल्लाह** ने हुक्म दिया बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ

तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेती में जिस त़रह़ चाहो[436] और अपने भले का काम पहले करो[437]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَلَا

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है और ऐ मह़बूब बिशारत दो ईमान वालों को और

تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ

अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बना लो[438] कि एह़सान और परहेज़ गारी और लोगों में सुल्ह़ करने

औलिया को ख़ित़ाब है। **मस्अला :** मुसल्मान औ़रत का निकाह़ मुश्रिक व काफ़िर के साथ बात़िल व ह़राम है। **434 :** तो उन से इज्तिनाब ज़रूरी और उन के साथ दोस्ती व क़राबत ना रवा। **435 शाने नुज़ूल :** अ़रब के लोग यहूद व मजूस की त़रह़ हाइज़ा औ़रतों से कमाले नफ़रत करते थे, साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था, बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की त़रफ़ देखना और उन से कलाम भी ह़राम समझते थे, और नसारा इस के बर अ़क्स हैज़ के अय्याम में औ़रतों के साथ बड़ी मह़ब्बत से मश्ग़ूल होते थे और इख़्तिलात़ (मेलजोल) में बहुत मुबालग़ा करते थे। मुसल्मानों ने ह़ुज़ूर से हैज़ का हुक्म दरयाफ़्त किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इफ़रात़ो तफ़्रीत़ की राहें छोड़ कर ए'तिदाल की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि ह़ालते हैज़ में औ़रतों से मुजामअ़त मम्नूअ़ है। **436 :** या'नी औ़रतों की क़ुरबत से नस्ल का क़स्द करो, न क़ज़ाए शह्वत का। **437 :** या'नी आ'माले सालिह़ा या जिमाअ़ से पहले "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ना। **438 :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने अपने बहनोई नो'मान बिन बशीर के घर जाने और उन से कलाम करने और उन के ख़ुसूम (दुश्मनों) के साथ उन की सुल्ह़ कराने से क़सम खा ली थी, जब इस के मुतअ़ल्लिक़ उन से कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क़सम खा चुका हूं इस लिये येह काम कर ही नहीं सकता ! इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क़सम खा लेने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रहने की क़सम खा ले तो उस को चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वोह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी अम्र पर क़सम खा ली फिर मा'लूम हुवा कि ख़ैर और बेहतरी इस के ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है

www.dawateislami.net

النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ

की क़सम कर लो और अल्लाह सुनता जानता है अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए

وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾

हां इस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिल ने किये[439] और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

वोह जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औ़रतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ۭ وَلَا

जानता है[440] और त़लाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक[441] और

يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ

उन्हें ह़लाल नहीं कि छुपाएं वोह जो अल्लाह ने उन के पेट में पैदा किया[442] अगर अल्लाह और

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ

क़ियामत पर ईमान रखती हैं[443] और उन के शोहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का ह़क़ पहुंचता है अगर

कि इस आयत से ब कसरत क़सम खाने की मुमानअ़त साबित होती है। **439 मस्अला :** क़सम तीन त़रह़ की होती है। (1) लग़्व (2) ग़मूस (3) मुन्अ़क़िदा। **लग़्व :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह इस के ख़िलाफ़ हो ! येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं। **ग़मूस :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूटी क़सम खाए ! इस में गुनहगार होगा। **मुन्अ़क़िदा :** येह है कि किसी आयिन्दा अम्र पर क़स्द कर के क़सम खाए ! इस क़सम को अगर तोड़े तो गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम। **440 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का येह मा'मूल था कि अपनी औ़रतों से माल त़लब करते अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो एक साल दो साल तीन साल या इस से ज़ियादा अ़र्सा उन के पास न जाने और सोह़बत तर्क करने की क़सम खा लेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे, न वोह बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं न शोहर दार कि शोहर से आराम पातीं, इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत मुअ़य्यन फ़रमा दी कि अगर औ़रत से चार महीने या इस से ज़ाइद अ़र्से के लिये या ग़ैर मुअ़य्यन मुद्दत के लिये तर्के सोह़बत की क़सम खा ले जिस को ''ईला'' कहते हैं तो इस के लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है, इस अ़र्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औ़रत को छोड़ना इस के लिये बेहतर है या रखना, अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ़ करे तो निकाह़ बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा, और अगर इस मुद्दत में रुजूअ़ न किया और क़सम न तोड़ी तो औ़रत निकाह़ से बाहर हो गई और उस पर त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई। **मस्अला :** अगर मर्द सोह़बत पर क़ादिर हो तो रुजूअ़ सोह़बत ही से होगा और अगर किसी वज्ह से क़ुदरत न हो तो बा'दे क़ुदरत सोह़बत का वा'दा रुजूअ़ है। (تفسیر احمدی) **441 :** इस आयत में मुत़ल्लक़ा औ़रतों की इ़द्दत का बयान है जिन औ़रतों को उन के शोहरों ने त़लाक़ दी, अगर वोह शोहर के पास न गई थीं और उन से ख़ल्वते सह़ीह़ा न हुई थी जब तो उन पर त़लाक़ की इ़द्दत ही नहीं है जैसा कि आयए ''مَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ'' में इर्शाद है। और जिन औ़रतों को ख़ुर्द साली (कम उ़म्री) या किब्र सिनी (बुढ़ापे) की वज्ह से हैज़ न आता हो या जो ह़ामिला हो उन की इ़द्दत का बयान सूरए त़लाक़ में आएगा, बाक़ी जो आज़ाद औ़रतें हैं यहां उन की इ़द्दत व त़लाक़ का बयान है कि उन की इ़द्दत तीन हैज़ है। **442 :** वोह ह़म्ल हो या ख़ूने हैज़। क्यूं कि उस के छुपाने से रज्अ़त और वलद में जो शोहर का ह़क़ है वोह ज़ाएअ़ होगा। **443 :** या'नी येही मुक़्तज़ाए ईमानदारी है।

www.dawateislami.net

اَرَادُوۡۤا اِصۡلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِىۡ عَلَيۡهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ۠ وَ

मिलाप चाहें[444] और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शरअ़ के मुवाफ़िक़[445] और

لِلرِّجَالِ عَلَيۡهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ﴿۲۲۸﴾ ع اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠

मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है येह तलाक़[446] दो बार तक है

فَاِمۡسَاكٌۢ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ تَسۡرِيۡحٌۢ بِاِحۡسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَـكُمۡ اَنۡ

फिर भलाई के साथ रोक लेना है[447] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है[448] और तुम्हें रवा नहीं कि

تَاۡخُذُوۡا مِمَّاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ شَيۡـًٔا اِلَّاۤ اَنۡ يَّخَافَاۤ اَلَّا يُقِيۡمَا حُدُوۡدَ

जो कुछ औरतों को दिया[449] उस में से कुछ वापस लो[450] मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह की हदें क़ाइम न

اللّٰهِ ؕ فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا يُقِيۡمَا حُدُوۡدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِمَا فِيۡمَا

करेंगे[451] फिर अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वोह दोनों ठीक इन्ही हदों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं उस में जो बदला

افۡتَدَتۡ بِهٖ ؕ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ فَلَا تَعۡتَدُوۡهَا ۚ وَمَنۡ يَّتَعَدَّ حُدُوۡدَ

दे कर औरत छुट्टी ले[452] येह अल्लाह की हदें हैं इन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की हदों से आगे

اللّٰهِ فَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۲۲۹﴾ فَاِنۡ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدُ حَتّٰى

बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वोह औरत इसे हलाल न होगी जब तक

444 : या'नी तलाक़े रज्ई में इद्दत के अन्दर शोहर औरत से रुजूअ़ कर सकता है ख़्वाह औरत राज़ी हो या न हो लेकिन अगर शोहर को मिलाप मन्ज़ूर हो तो ऐसा करे, ज़रर रसानी का क़स्द न करे जैसा कि अहले जाहिलिय्यत औरत को परेशान करने के लिये करते थे।
445 : या'नी जिस तरह औरतों पर शोहरों के हुक़ूक़ की अदा वाजिब है इसी तरह शोहरों पर औरतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत लाज़िम है।
446 : या'नी तलाक़े रज्ई। **शाने नुज़ूल :** एक औरत ने सय्यिदे आलम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि उस के शोहर ने कहा है कि वोह इस को तलाक़ देता और रज्अ़त करता रहेगा हर मरतबा जब तलाक़ की इद्दत गुज़रने के क़रीब होगी रज्अ़त कर लेगा फिर तलाक़ दे देगा इसी तरह उम्र भर इस को क़ैद रखेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमा दिया कि तलाक़े रज्ई दो बार तक है इस के बा'द फिर तलाक़ देने पर रज्अ़त का हक़ नहीं। **447 :** रज्अ़त कर के **448 :** इस तरह कि रज्अ़त न करे और इद्दत गुज़र कर औरत बाइना हो जाए। **449 :** या'नी महर **450 :** तलाक़ देते वक़्त **451 :** जो हुक़ूक़े ज़ौजैन के मुतअ़ल्लिक़ हैं। **452 :** या'नी तलाक़ हासिल करे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह के बाब में नाज़िल हुई, येह जमीला साबित इब्ने क़ैस इब्ने शम्मास के निकाह में थीं और शोहर से कमाले नफ़रत रखती थीं, रसूले ख़ुदा ﷺ के हुज़ूर में अपने शोहर की शिकायत लाईं और किसी तरह उन के पास रहने पर राज़ी न हुईं, तब साबित ने कहा कि मैं ने इन को एक बाग़ दिया है अगर येह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अ़लाहदगी चाहती हैं तो वोह बाग़ मुझे वापस करें मैं इन को आज़ाद कर दूं ! जमीला ने इस को मन्ज़ूर किया ! साबित ने बाग़ ले लिया और तलाक़ दे दी। इस तरह की तलाक़ को ख़ुलअ़ कहते हैं। **मस्अला :** ख़ुलअ़ तलाक़े बाइन होता है। **मस्अला :** ख़ुलअ़ में लफ़्ज़े ''ख़ुलअ़'' का ज़िक्र ज़रूरी है। **मस्अला :** अगर जुदाई की तलब गार औरत हो तो ख़ुलअ़ में मिक़्दारे महर से ज़ाइद लेना मक्रूह है, और अगर औरत की तरफ़ से नुशूज़ (ना इत्तिफ़ाक़ी) न हो मर्द ही अ़लाहदगी चाहे तो मर्द को तलाक़ के इवज़ माल लेना मुत्लक़न मक्रूह है।

www.dawateislami.net

تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ

दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे[453] फिर वोह दूसरा अगर उसे त़लाक़ दे दे तो इन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं[454] अगर

ظَنَّاۤ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ

समझते हों कि **अल्लाह** की ह़दें निबाहेंगे और येह **अल्लाह** की ह़दें हैं जिन्हें बयान करता है

يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ

दानिश मन्दों के लिये और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द आ लगे[455] तो उस वक़्त तक या भलाई के

بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ

साथ रोक लो[456] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो[457] और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि ह़द से बढ़ो

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫

और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़्सान करता है[458] और **अल्लाह** की आयतों को ठठ्ठा न बना लो[459]

وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَاۤ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

और याद करो **अल्लाह** का एह़सान जो तुम पर है[460] और वोह जो तुम पर किताब

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ

व ह़िक्मत[461] उतारी तुम्हें नसीह़त देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ ع وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ الربع ٢٩ ١٣

जानता है[462] और जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो और उन की मीआ़द पूरी हो जाए[463] तो ऐ औ़रतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि

يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ

अपने शोहरों से निकाह़ कर लें[464] जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ा मन्द हो जाएं[465] येह नसीह़त उसे दी जाती है

453 मस्अला : तीन त़लाक़ों के बा'द औ़रत शोहर पर ब हुर्मते मुग़ल्लज़ा ह़राम हो जाती है अब न उस से रुजूअ़ हो सकता है न दोबारा निकाह़ जब तक कि ह़लाला न हो या'नी बा'दे इ़द्दत दूसरे से निकाह़ करे और वोह बा'दे सोह़बत त़लाक़ दे फिर इ़द्दत गुज़रे। **454 :** दोबारा निकाह़ कर लें। **455 :** या'नी इ़द्दत तमाम होने के क़रीब हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन्हों ने अपनी औ़रत को त़लाक़ दी थी और जब इ़द्दत क़रीबे ख़त्म होती थी रज्अ़त कर लिया करते थे ताकि औ़रत क़ैद में पड़ी रहे। **456 :** या'नी निबाहने और अच्छा मुआ़मला करने की निय्यत से रज्अ़त करो **457 :** और इ़द्दत गुज़र जाने दो ताकि बा'दे इ़द्दत वोह आज़ाद हो जाएं। **458 :** कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त कर के गुनहगार होता है। **459 :** कि इन की परवाह न करो और इन के ख़िलाफ़ अ़मल करो। **460 :** कि तुम्हें मुसल्मान किया और सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का उम्मती बनाया। **461 :** किताब से क़ुरआन और ह़िक्मत से अह़कामे क़ुरआन व सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद है। **462 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं। **463 :** या'नी उन की इ़द्दत गुज़र चुके **464 :** जिन को उन्हों ने अपने निकाह़ के लिये तजवीज़ किया हो ख़्वाह वोह नए हों या येही त़लाक़ देने वाले, या इन से पहले जो त़लाक़ दे चुके थे। **465 :** अपने कुफ़्व में महरे मिस्ल पर। क्यूं कि इस के ख़िलाफ़ की सूरत में औलिया ए'तिराज़ व

www.dawateislami.net

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ

जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और

اَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ

पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते और माएं दूध पिलाएं अपने

اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى

बच्चों को[466] पूरे दो बरस उस के लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे[467] और जिस का

الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا

बच्चा है[468] उस पर औरतों का खाना पहनना है हस्बे दस्तूर[469] किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के

وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى

मक़्दूर भर मां को ज़रर न दिया जाए उस के बच्चे से[470] और न औलाद वाले को उस की औलाद से[471] या मां ज़रर न दे अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को[472] और जो

الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा

तअर्रुज़ का हक़ रखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मा'क़िल बिन यसार मुज़नी की बहन का निकाह़ आ़सिम बिन अ़दी के साथ हुवा था, उन्हों ने त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़रने के बा'द फिर आ़सिम ने दरख़्वास्त की तो मा'क़िल बिन यसार मानेअ़ हुए ! उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। (بخاری شریف) **466 :** बयाने त़लाक़ के बा'द येह सुवाल त़ब्अ़न सामने आता है कि अगर त़लाक़ वाली औ़रत की गोद में शीर ख़्वार बच्चा हो तो इस जुदाई के बा'द उस की परवरिश का क्या त़रीक़ा होगा ? इस लिये येह क़रीने ह़िक्मत है कि बच्चे की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ मां बाप पर जो अह़काम हैं वोह इस मौक़अ़ पर बयान फ़रमा दिये जाएं ! लिहाज़ा यहां उन मसाइल का बयान हुवा। **मस्अला :** मां ख़्वाह मुत़ल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है बशर्ते कि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की क़ुदरत व इस्तित़ाअ़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध क़बूल न करे, अगर येह बातें न हों या'नी बच्चे की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़ूफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तह़ब है। (تفسیر احمدی وجمل وغیرہ) **467 :** या'नी इस मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं। अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उस के लिये ख़त़रा न हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی خازن وغیرہ) **468 :** या'नी वालिद। इस अन्दाज़े बयान से मा'लूम हुवा कि नसब बाप की त़रफ़ रुजूअ़ करता है। **469 मस्अला :** बच्चे की परवरिश और उस को दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है इस के लिये वोह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो मुस्तह़ब है। **मस्अला :** शोहर अपनी ज़ौजा पर बच्चे के दूध पिलाने के लिये जब्र नहीं कर सकता और न औ़रत शोहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत त़लब कर सकती है जब तक कि उस के निकाह़ या इ़द्दत में रहे। **मस्अला :** अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़ौजा को त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़र चुकी तो वोह उस से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है। **मस्अला :** अगर बाप ने किसी औ़रत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर ब उजरत मुक़र्रर किया और उस की मां उसी उजरत पर या बे मुआ़वज़ा दूध पिलाने पर राज़ी हुई तो मां ही दूध पिलाने की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है, और अगर मां ने ज़ियादा उजरत त़लब की तो बाप को उस से दूध पिलवाने पर मजबूर न किया जाएगा। (تفسیر احمدی ومدارک) ''اَلْمَعْرُوْف'' से मुराद येह है कि ह़स्बे ह़ैसिय्यत हो बिग़ैर तंगी और फ़ुज़ूल ख़र्ची के। **470 :** या'नी उस को उस के ख़िलाफ़े मरज़ी दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए। **471 :** ज़ियादा उजरत त़लब करे **472 :** मां का बच्चे को ज़रर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध न दे और उस की निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बा'द छोड़ दे, और बाप का बच्चे को ज़रर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के हक़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़्सान पहुंचे।

www.dawateislami.net

وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْۤا

और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को

اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّاۤ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَ

दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और

اتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾ وَالَّذِيْنَ

अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है और तुम में जो

يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ

मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को

اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا

रोके रहें[473] तो जब उन की इद्दत पूरी हो जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआख़ज़ा नहीं उस काम में

فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾ وَلَا

जो औ़रतें अपने मुआ़मले में मुवाफ़िक़े शरअ़ करें और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْۤ

तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा रख कर तुम औ़रतों के निकाह़ का पयाम दो या अपने दिल में

اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

छुपा रखो[474] **अल्लाह** जानता है कि अब तुम उन की याद करोगे[475] हां उन से ख़ुफ़्या वा'दा न

سِرًّا اِلَّاۤ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ۬ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى

कर रखो मगर येह कि इतनी ही बात कहो जो शरअ़ में मा'रूफ़ है और निकाह़ की गिरह पक्की न करो जब तक

473 : ह़ामिला की इद्दत तो वज़्ए़ ह़म्ल है जैसा कि सूरए त़लाक़ में मज़्कूर है। यहां ग़ैरे ह़ामिला का बयान है जिस का शोहर मर जाए उस की इद्दत चार माह दस रोज़ है इस मुद्दत में न वोह निकाह़ करे न अपना मस्कन छोड़े न बे उ़ज़्र तेल लगाए न ख़ुश्बू लगाए न सिंगार करे न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेहंदी लगाए न जदीद निकाह़ की बातचीत खुल कर करे, और जो त़लाक़े बाइन की इद्दत में हो उस का भी येही हुक्म है। अलबत्ता जो औ़रत त़लाक़े रज्ई की इद्दत में हो उस को ज़ीनत और सिंगार करना मुस्तह़ब है। **474 :** या'नी इद्दत में निकाह़ और निकाह़ का खुला हुवा पयाम तो मम्नूअ़ है लेकिन पर्दे के साथ ख़्वाहिशे निकाह़ का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन येह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो, या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी त़रह़ न कहे। **475 :** और तुम्हारे दिलों में ख़्वाहिश होगी इसी लिये तुम्हारे वासित़े ता'रीज़ मुबाह़ की गई।

www.dawateislami.net

يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ

लिखा हुवा हुक्म अपनी मीआ़द को न पहुंच ले[476] और जान लो कि **अल्लाह** तुम्हारे दिल की जानता है

ع ٣٠ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ

तो उस से डरो और जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला हि़ल्म वाला है तुम पर कुछ मुत़ालबा नहीं[477] अगर

طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ

तुम औ़रतों को त़लाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई महर मुक़र्रर न कर लिया हो[478]

وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا

और उन को कुछ बरत्ने को दो[479] मक़्दूर वाले पर उस के लाइक़ और तंगदस्त पर उस के लाइक़ ह़स्बे दस्तूर

بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾ وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कुछ बरत्ने की चीज़ येह वाजिब है भलाई वालों पर[480] और अगर तुम ने औ़रतों को बे छूए

تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّاۤ اَنْ

त़लाक़ दे दी और उन के लिये कुछ महर मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औ़रतें

يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَ اَنْ تَعْفُوْۤا اَقْرَبُ

कुछ छोड़ दें[481] या वोह ज़ियादा दे[482] जिस के हाथ में निकाह़ की गिरह है[483] और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी से

لِلتَّقْوٰى ؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۷﴾

नज़्दीक तर है और आपस में एक दूसरे पर एह़सान को भुला न दो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है[484]

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ فَاِنْ

निगहबानी करो सब नमाज़ों[485] और बीच की नमाज़ की[486] और खड़े हो **अल्लाह** के हु़ज़ूर अदब से[487] फिर अगर

476 : या'नी इ़द्दत गुज़र चुके। **477 :** महर का **478 शाने नुज़ूल :** येह आयत एक अन्सारी के बाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने क़बीलए बनी ह़नीफ़ा की एक औ़रत से निकाह़ किया और कोई महर मुअ़य्यन न किया फिर हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दे दी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो अगर उस को हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दी तो महर लाज़िम नहीं। हाथ लगाने से मुजामअ़त मुराद है, और ख़ल्वते सह़ीह़ा इसी के हुक्म में है। येह भी मा'लूम हुवा कि बे ज़िक्रे महर भी निकाह़ दुरुस्त है मगर इस सूरत में बा'दे निकाह़ महर मुअ़य्यन करना होगा अगर न किया तो बा'दे दुख़ूल महरे मिस्ल लाज़िम हो जाएगा। **479 :** तीन कपड़ों का एक जोड़ा। **480 :** जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो और उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी हो उस को तो जोड़ा देना वाजिब है, और इस के सिवा हर मुत़ल्लक़ा के लिये मुस्तह़ब है। (مدارک) **481 :** अपने उस निस्फ़ में से **482 :** निस्फ़ से। जो इस सूरत में वाजिब है। **483 :** या'नी शोहर। **484 :** इस में ह़ुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक़ (अच्छे अख़्लाक़) की तरग़ीब है। **485 :** या'नी पन्जगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवक़ात पर अरकान व शराइत़ के साथ अदा करते रहो। इस में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और औलाद व अज़्वाज के मसाइल व अह़काम के दरमियान में नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचाता है कि इन को अदाए

www.dawateislami.net

خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا

खौ़फ़ में हो तो पियादा या सुवार जैसे बन पड़े   फिर जब इत्मीनान से हो तो **अल्लाह** की याद करो जैसा उस ने सिखाया जो

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ

तुम न जानते थे   और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़

اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ

जाएं वोह अपनी औरतों के लिये वसिय्यत कर जाएं[488] साल भर तक नान व नफ़्क़ा देने की बे निकाले[489] फिर अगर

خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ

वोह खुद निकल जाएं तो तुम पर उस का मुआख़ज़ा नहीं जो उन्हों ने अपने मुआमले में मुनासिब तौ़र पर किया

وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۰﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى

और **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है   और त़लाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब तौ़र पर नान व नफ़्क़ा है   येह वाजिब है

الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۴۱﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۲﴾ ع اَلَمْ ع ٣١ ٧ ١٥

परहेज़ गारों पर   **अल्लाह** यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो   ऐ महबूब क्या

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪

तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ   फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया   बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴۳﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं[490]   और लड़ो **अल्लाह** की राह में[491] और जान लो

नमाज़ से ग़ाफ़िल न होने दो, और नमाज़ की पाबन्दी से क़ल्ब की इस्लाह़ होती है जिस के बिग़ैर मुआमलात का दुरुस्त होना मुतसव्वर नहीं। **486 :** ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा और जम्हूर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم का मज़हब येह है कि इस से नमाज़े ख़ौफ़ मुराद है और अह़ादीस भी इस पर दलालत करती हैं। **487 :** इस से नमाज़ के अन्दर क़ियाम का फ़र्ज़ होना साबित हुवा। **488 :** अपने अक़ारिब को **489 :** इब्तिदाए इस्लाम में बेवा की इद्दत एक साल की थी और एक साल कामिल वोह शोहर के यहां रह कर नान व नफ़्क़ा पाने की मुस्तह़िक़ होती थी फिर एक साल की इद्दत तो "یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا" से मन्सूख़ हुई जिस में बेवा की इद्दत चार माह दस दिन मुक़र्रर फ़रमाई गई, और साल भर का नफ़्क़ा आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा जिस में औ़रत का ह़िस्सा शोहर के तर्के से मुक़र्रर किया गया ! लिहाज़ा अब इस वसिय्यत का हुक्म बाक़ी न रहा। ह़िक्मत इस की येह है कि अ़रब के लोग अपने मूरिस (या'नी मरने वाले) की बेवा का निकलना या ग़ैर से निकाह़ करना बिल्कुल गवारा ही न करते थे और इस को आ़र समझते थे इस लिये अगर एक दम चार माह दस रोज़ की इद्दत मुक़र्रर की जाती तो येह उन पर बहुत शाक़ होती ! लिहाज़ा ब तदरीज उन्हें राह पर लाया गया। **490 :** बनी

www.dawateislami.net

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

कि अल्लाह सुनता जानता है है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे[492]

فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِيْرَةًؕ وَ اللّٰهُ يَقْبِضُ وَ يَبْصُۜطُ۪ وَ اِلَيْهِ

तो अल्लाह उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और अल्लाह तंगी और कशाइश करता है[493] और तुम्हें उसी की त़रफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰىۘ

फिर जाना ऐ मह़बूब क्या तुम ने न देखा बनी इसराईल के एक गुरोह को जो मूसा के बा'द हुवा[494]

وقف لازم

اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِؕ قَالَ هَلْ

जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिये खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें नबी ने फ़रमाया क्या

عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْاؕ قَالُوْا وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا

तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुवा कि

نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ قَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ اَبْنَآىٕنَاؕ فَلَمَّا

हम अल्लाह की राह में न लड़ें ह़ालां कि हम निकाले गए हैं अपने वत़न और अपनी औलाद से[495] तो फिर जब

इसराईल की एक जमाअ़त थी जिस के बिलाद (शहरों) में त़ाऊ़न हुवा तो वोह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ कर भागे और जंगल में जा पड़े, ब हुक्मे इलाही सब वहीं मर गए ! कुछ अ़र्से के बा'द ह़ज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और वोह मुद्दतों ज़िन्दा रहे। इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है जो मौत मुक़द्दर है वोह ज़रूर पहुंचेगी बन्दे को चाहिये कि रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहे, मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ़्अ़ नहीं कर सकता लिहाज़ा दिल मज़बूत़ रखना चाहिये। **491 :** और मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्यूं कि मौत से भागना काम नहीं आता। **492 :** या'नी राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करे। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाले लुत़्फ़ो करम है, बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा, ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है, मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन पाएगा और बहुत ज़ियादा पाएगा। **493 :** जिस के लिये चाहे रोज़ी तंग करे जिस के लिये चाहे वसीअ़ फ़रमाए तंगी व फ़राख़ी उस के क़ब्ज़े में है और वोह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुस्अ़त का वा'दा करता है। **494 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन्हों ने अ़हदे इलाही को फ़रामोश किया बुत परस्ती में मुब्तला हुए सरकशी और बद अफ़्आ़ली इन्तिहा को पहुंची, उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत़ हुई जिस को अ़मालिक़ा कहते हैं क्यूं कि जालूत इ़मलीक़ बिन आ़द की औलाद से एक निहायत जाबिर बादशाह था उस की क़ौम के लोग मिस्र व फ़िलिस्त़ीन के दरमियान बह़्रे रूम के साह़िल पर रहते थे। उन्हों ने बनी इसराईल के शहर छीन लिये आदमी गिरिफ़्तार किये त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां कीं, उस ज़माने में कोई नबी क़ौमे बनी इसराईल में मौजूद न थे, ख़ानदाने नुबुव्वत से सिर्फ़ एक बीबी बाक़ी रही थीं जो ह़ामिला थीं उन के फ़रज़न्द तवल्लुद (पैदा) हुए उन का नाम इश्मवील रखा, जब वोह बड़े हुए तो उन्हें इ़ल्मे तौरैत ह़ासिल करने के लिये बैतुल मक़्दिस में एक कबीरुस्सिन (बुज़ुर्ग) आ़लिम के सिपुर्द किया वोह आप के साथ कमाले शफ़्क़त करते और आप को फ़रज़न्द कहते, जब आप सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे तो एक शब आप उस आ़लिम के क़रीब आराम फ़रमा रहे थे कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी आ़लिम की आवाज़ में या इश्मवील कह कर पुकारा, आप आ़लिम के पास गए और फ़रमाया कि आप ने मुझे पुकारा है ? आ़लिम ने ब ईं ख़याल कि इन्कार करने से कहीं आप डर न जाएं येह कह दिया कि फ़रज़न्द तुम सो जाओ ! फिर दोबारा ह़ज़रते जिब्रील ने इसी त़रह़ पुकारा और ह़ज़रते इश्मवील عَلَيْهِ السَّلَام आ़लिम के पास गए आ़लिम ने कहा ऐ फ़रज़न्द अब अगर मैं तुम्हें

www.dawateislami.net

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गए मगर उन में के थोड़े[496] और अल्लाह ख़ूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

ज़ालिमों को और उन से उन के नबी ने फ़रमाया बेशक अल्लाह ने ताृलूत को तुम्हारा बादशाह बना कर

مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ

भेजा है[497] बोले उसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी[498] और हम उस से ज़ियादा सल्तनत के मुस्तहिक़

مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَ

हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई[499] फ़रमाया उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया[500] और

زَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ

उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी[501] और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे[502] और

اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है[503] और उन से उन के नबी ने फ़रमाया उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास

التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ

ताबूत[504] जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़

फिर पुकारूं तो तुम जवाब न देना, तीसरी मरतबा में हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ज़ाहिर हो गए और उन्हों ने बिशारत दी कि अल्लाह तआ़ला ने आप को नुबुव्वत का मन्सब अ़ता फ़रमाया आप अपनी क़ौम की तरफ़ जाइये और अपने रब के अहकाम पहुंचाइये जब आप क़ौम की तरफ़ तशरीफ़ लाए उन्हों ने तक्ज़ीब की और कहा कि आप इतनी जल्दी नबी बन गए ! अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह क़ाइम कीजिये। (خازن وغیرہ) **495 :** कि क़ौमे जालूत ने हमारी क़ौम के लोगों को उन के वतन से निकाला उन की औलाद को क़त्लो ग़ारत किया चार सो चालीस शाही ख़ानदान के फ़रज़न्दों को गिरिफ़्तार किया जब हालत यहां तक पहुंच चुकी तो अब हमें जिहाद से क्या चीज़ मानेअ़ हो सकती है ? तब नबिय्युल्लाह की दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने उन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाई और उन के लिये एक बादशाह मुक़र्रर किया और जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया (خازن) **496 :** जिन की ता'दाद अहले बद्र के बराबर तीन सो तेरह थी। **497 :** "ताृलूत" बिन्यामीन बिन हज़रते या'कूब عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद से हैं आप का नाम तूले क़ामत की वज्ह से ताृलूत है, हज़रते इशमवील عَلَیْہِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक अ़सा मिला था और बताया गया था कि जो शख़्स तुम्हारी क़ौम का बादशाह होगा उस का क़द इस अ़सा के बराबर होगा ! आप ने उस अ़सा से ताृलूत का क़द नाप कर फ़रमाया कि मैं तुम को ब हुक्मे इलाही बनी इसराईल का बादशाह मुक़र्रर करता हूं ! और बनी इसराईल से फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ताृलूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है। (خازن وجمل) **498 :** बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी हज़रते इशमवील عَلَیْہِ السَّلَام से कहा कि नुबुव्वत तो लावा बिन या'कूब عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में चली आती है और सल्तनत यहूद बिन या'कूब की औलाद में, और ताृलूत इन दोनों ख़ानदानों में से नहीं हैं तो बादशाह कैसे हो सकते हैं। **499 :** वोह ग़रीब शख़्स हैं बादशाह को साहिबे माल होना चाहिये **500 :** या'नी सल्तनत वरसा नहीं कि किसी नस्ल व ख़ानदान के साथ ख़ास हो येह महज़ फ़ज़्ले इलाही पर है। इस में शीआ़ का रद है जिन का ए'तिक़ाद येह है कि इमामत विरासत है। **501 :** या'नी "नस्ल व दौलत" पर सल्तनत का इस्तिहक़ाक़ नहीं "इल्म व क़ुव्वत" सल्तनत के लिये बड़े मुईन हैं। और ताृलूत उस ज़माने में तमाम बनी इसराईल से ज़ियादा इल्म रखते थे और सब से जसीम और तुवाना थे। **502 :** इस में विरासत को कुछ दख़्ल नहीं। **503 :** जिसे चाहे ग़नी कर दे और वुस्अ़ते माल अ़ता फ़रमा दे। इस के बा'द बनी इसराईल ने हज़रते इशमवील عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सल्तनत के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है तो इस की

www.dawateislami.net

هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

हारून के तर्के की उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते   बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर

ع ٣٢ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۴۸﴾ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِیْكُمْ

ईमान रखते हो   फिर जब तालूत लश्करों को ले कर शहर से जुदा हुआ[505] बोला बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर से

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَیْسَ مِنِّیْ ۚ وَمَنْ لَّمْ یَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۤ

आज़माने वाला है   तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं   और जो न पिये वोह मेरा है

اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِیَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا

मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले[506]   तो सब ने उस से पिया मगर थोड़ों ने[507] फिर जब

جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْیَوْمَ بِجَالُوْتَ

तालूत और उस के साथ के मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत

निशानी क्या है ? (خازن ومدارک) **504 :** येह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक ज़र अन्दूद (सोने का काम किया हुवा) सन्दूक़ था जिस का तूल तीन हाथ का और अर्ज़ दो हाथ का था, इस को **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया था, इस में तमाम अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्वीरें थीं इन के मसाकिन व मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की, और हुज़ूर की दौलत सराए अक़्दस की तस्वीर एक याक़ूते सुर्ख़ में थी कि हुज़ूर ब ह़ालते नमाज़ क़ियाम में हैं और गिर्द आप के आप के अस्ह़ाब। ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام ने इन तमाम तस्वीरों को देखा, येह सन्दूक़ विरासतन मुन्तक़िल होता हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام तक पहुंचा, आप इस में तौरैत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी चुनान्चे इस ताबूत में अल्वाहे़ तौरैत के टुकड़े भी थे और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अ़सा और आप के कपड़े और आप की ना'लैने शरीफ़ैन और ह़ज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام का इमामा और उन का अ़सा और थोड़ा सा "मन्न" जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था। ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام जंग के मौक़ओं पर इस सन्दूक़ को आगे रखते थे इस से बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आप के बा'द येह ताबूत बनी इसराईल में मुतवारिस (बतौरे विरासत मुन्तक़िल) होता चला आया जब उन्हें कोई मुश्किल दरपेश होती वोह इस ताबूत को सामने रख कर दुआएं करते और काम्याब होते, दुश्मनों के मुक़ाबले में इस की बरकत से फ़त्ह़ पाते, जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन की बद अ़मली बहुत बढ़ गई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर अ़मालिक़ा को मुसल्लत़ किया तो वोह उन से ताबूत छीन कर ले गए और इस को नजिस और गन्दे मक़ामात में रखा और इस की बे हु़रमती की और इन गुस्ताख़ियों की वज्ह से वोह त़रह़ त़रह़ के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला हुए उन की पांच बस्तियां हलाक हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि ताबूत की इहानत उन की बरबादी का बाइस है तो उन्हों ने ताबूत एक बेलगाड़ी पर रख कर बेलों को छोड़ दिया और फ़िरिश्ते इस को बनी इसराईल के सामने त़ालूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिये त़ालूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था, बनी इसराईल येह देख कर उस की बादशाही के मुक़िर हुए और बे दरंग जिहाद के लिये आमादा हो गए क्यूं कि ताबूत पा कर उन्हें अपनी फ़त्ह़ का यक़ीन हो गया, त़ालूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़ार जवान मुन्तख़ब किये जिन में ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام भी थे। (جلالین وجمل وخازن ومدارک وغیرہ)

फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात का ए'ज़ाज़ो एह़तिराम लाज़िम है इन की बरकत से दुआएं क़बूल होती और ह़ाजतें रवा होती हैं और तबर्रुकात की बे हु़रमती गुमराहों का त़रीक़ा और बरबादी का सबब है। **फ़ाएदा :** ताबूत में अम्बिया की जो तस्वीरें थीं वोह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं **अल्लाह** की त़रफ़ से आई थीं। **505 :** या'नी बैतुल मक़्दिस से दुश्मन की त़रफ़ रवाना हुवा वोह वक़्त निहायत शिद्दत की गरमी का था, लश्करियों ने त़ालूत से इस की शिकायत की और पानी के त़लब गार हुए **506 :** येह इम्तिह़ान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि शिद्दते तिश्नगी के वक़्त जो इत़ाअ़ते हुक्म पर मुस्तक़िल रहा वोह आयिन्दा भी मुस्तक़िल रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़्लूब हो और ना फ़रमानी करे वोह आयिन्दा सख़्तियों को क्या बरदाश्त करेगा। **507 :** जिन की ता'दाद तीन सो तेरह थी उन्हों ने सब्र किया और एक चुल्लू उन के और उन के जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उन के क़ल्बो ईमान को क़ुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए, और जिन्हों ने ख़ूब पिया था उन के होंट सियाह हो गए तिश्नगी और बढ़ गई और हिम्मत हार गए।

www.dawateislami.net

وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ

और उस के लश्करों की बोले वोह जिन्हें अल्लाह से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम

قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़ियादा गुरौह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है[508] फिर जब

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ

पाउं जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर तो इन्हों ने उन को भगा दिया अल्लाह के

اللّٰهِ ۙ قف وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

हुक्म से और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को[509] और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिक्मत[510] अ़ता फ़रमाई और उसे जो

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ

चाहा सिखाया[511] और अगर अल्लाह लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे[512] तो ज़रूर ज़मीन

الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है येह अल्लाह की आयतें हैं कि हम ऐ मह़बूब

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो

508 : उन की मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है। **509 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद "ईशा" त़ालूत के लश्कर में थे और उन के साथ उन के तमाम फ़रज़न्द भी, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام उन सब में छोटे थे बीमार थे रंग ज़र्द था बकरियां चराते थे, जब जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबिल त़लब किया वोह उस की क़ुव्वते जसामत देख कर घबराए क्यूं कि वोह बड़ा जाबिर क़वी शहज़ोर अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े और मोटे जिस्म वाला) क़दआवर था, त़ालूत ने अपने लश्कर में ए'लान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उस के निकाह़ में दूंगा और निस्फ़ मुल्क उस को दूंगा मगर किसी ने इस का जवाब न दिया तो त़ालूत ने अपने नबी ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि बारगाहे इलाही में दुआ़ करें, आप ने दुआ़ की तो बताया गया कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام जालूत को क़त्ल करेंगे, त़ालूत ने आप से अ़र्ज़ किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आप के निकाह़ में दूं और निस्फ़ मुल्क पेश करूं ! आप ने क़बूल फ़रमाया और जालूत की त़रफ़ रवाना हो गए, सफ़े क़िताल क़ाइम हुई और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام दस्ते मुबारक में फ़लाख़न (पथ्थर फेंकने का आला) ले कर मुक़ाबिल हुए, जालूत के दिल में आप को देख कर दहशत पैदा हुई मगर उस ने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आप को अपनी क़ुव्वत से मरऊ़ब करना चाहा आप ने फ़लाख़न में पथ्थर रख कर मारा वोह उस की पेशानी को तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को ला कर त़ालूत के सामने डाल दिया, तमाम बनी इसराईल ख़ुश हुए और त़ालूत ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ह़स्बे वा'दा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आप के साथ निकाह़ कर दिया, एक मुद्दत के बा'द त़ालूत ने वफ़ात पाई तमाम मुल्क पर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सल्त़नत हुई। (جمل وغیرہ) **510 :** हिक्मत से नुबुव्वत मुराद है। **511 :** जैसे कि ज़िरह बनाना और जानवरों का कलाम समझना। **512 :** या'नी अल्लाह तआ़ला

www.dawateislami.net

الجزء الثالث (3) وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ

येह[513] रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया[514] इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया[515] और कोई वोह है

بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ

जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया[516] और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं[517] और पाकीज़ा रूह से

الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

उस की मदद की[518] और **अल्लाह** चाहता तो उन के बा'द वाले आपस में न लड़ते बा'द इस के कि

جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ

उन के पास खुली निशानियां आ चुकीं[519] लेकिन वोह तो मुख़्तलिफ़ हो गए उन में कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया[520]

ع ٣٣/٥-

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

और **अल्लाह** चाहता तो वोह न लड़ते मगर **अल्लाह** जो चाहे करे[521] ऐ

नेकों के सदक़े में दूसरों की बलाएं भी दफ़्अ़ फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला एक सालेह़ मुसल्मान की बरकत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है। سُبْحٰنَ اللّٰہ नेकों का क़ुर्ब भी फ़ाएदा पहुंचाता है। (خازن) **513 :** येह ह़ज़रात जिन का ज़िक्र मा सबक़ (गुज़श्ता आयात) में और ख़ास आयए ''اِنَّکَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ'' में फ़रमाया गया। **514 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के मरातिब जुदागाना हैं, बा'ज़ ह़ज़रात से बा'ज़ अफ़्ज़ल हैं अगर्चे नुबुव्वत में कोई तफ़्रिक़ा नहीं, वस्फ़े नुबुव्वत में सब शरीके यक दिगर (बराबर के शरीक) हैं मगर ख़साइस व कमालात में दरजे मुतफ़ावित (अलग अलग) हैं, येही आयत का मज़्मून है और इसी पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है। (خازن و مدارک) **515 :** या'नी बे वासित़ा जैसे कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को तूर पर कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मे'राज में। (جمل) **516 :** वोह हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم हैं कि आप को ब दरजाते कसीरा तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام पर अफ़्ज़ल किया। इस पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है और ब कसरत अह़ादीस से साबित है। आयत में हुज़ूर की इस रिफ़्अ़ते मर्तबत का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह़ (वज़ाह़त) न की गई। इस से भी हुज़ूरे अक़्दस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उ़लुव्वे शान (मरातिब की बुलन्दी) का इज़्हार मक़्सूद है कि ज़ाते वाला की येह शान है कि जब तमाम अम्बिया पर फ़ज़ीलत का बयान किया जाए तो सिवाए ज़ाते अक़्दस के येह वस्फ़ किसी पर सादिक़ ही न आए और कोई इश्तिबाह राह न पा सके। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वोह ख़साइस व कमालात जिन में आप तमाम अम्बिया पर फ़ाइक़ व अफ़्ज़ल हैं और आप का कोई शरीक नहीं, बे शुमार हैं कि क़ुरआने करीम में येह इर्शाद हुवा : ''दरजों बुलन्द किया।'' इन दरजों की कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाई, तो अब कौन ह़द लगा सकता है। इन बे शुमार ख़साइस में से बा'ज़ का इज्माली व मुख़्तसर बयान येह है कि आप की रिसालत आ़म्मा है, तमाम काएनात आप की उम्मत है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا کَآفَّۃً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا'', दूसरी आयत में फ़रमाया : ''لِیَکُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا'', मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इर्शाद हुवा : ''اُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلَآئِقِ کَآفَّۃً'' और आप पर नुबुव्वत ख़त्म की गई। क़ुरआने पाक में आप को ख़ातमुन्नबिय्यीन फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा ''خُتِمَ بِیَ النَّبِیُّوْنَ'' आयाते बय्यिनात व मो'जिज़ाते बाहिरात में आप को तमाम अम्बिया पर अफ़्ज़ल फ़रमाया गया, आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़्ज़ल किया गया, शफ़ाअ़ते कुब्रा आप को मर्ह़मत हुई, क़ुर्बे ख़ास मे'राज आप को मिला, इ़ल्मी व अ़मली कमालात में आप को सब से आ'ला किया और इस के इ़लावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को अ़त़ा हुए। (مدارک، جمل، خازن، بیضاوی وغیرہ) **517 :** जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरुस्त करना, मिट्टी से परिन्द बनाना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरा। **518 :** या'नी जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से जो हमेशा आप के साथ रहते थे। **519 :** या'नी अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के मो'जिज़ात। **520 :** या'नी अम्बियाए साबिक़ीन की उम्मतें भी ईमान व कुफ़्र में मुख़्तलिफ़ रहीं, येह न हुवा कि तमाम उम्मत मुत़ीअ़ हो जाती। **521 :** उस के मुल्क में उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और येही ख़ुदा की शान है।

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ

ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न ख़रीदो फ़रोख़्त

فِيْهِ وَ لَا خُلَّةٌ وَّ لَا شَفَاعَةٌ ؕ وَ الْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۵۴﴾ اَللّٰهُ لَاۤ

है न काफ़िरों के लिये दोस्ती न शफ़ाअ़त और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं[522] अल्लाह है जिस

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي

के सिवा कोई मा'बूद नहीं[523] वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला[524] उसे न ऊंघ आए न नींद[525] उसी का है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[526] वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के[527]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ

जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[528] और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से

اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا يَـُٔوْدُهٗ

मगर जितना वोह चाहे[529] उस की कुरसी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन[530] और उसे भारी नहीं

حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۲۵۵﴾ لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ۫ قَدْ تَّبَيَّنَ

इन की निगहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला[531] कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में[532] बेशक ख़ूब जुदा हो गई है

522 : कि उन्हों ने ज़िन्दगानिये दुन्या में रोज़े ह़ाजत या'नी क़ियामत के लिये कुछ न किया। **523 :** इस में अल्लाह तआ़ला की उलूहिय्यत और उस की तौह़ीद का बयान है। इस आयत को आयतुल कुरसी कहते हैं, अह़ादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं। **524 :** या'नी वाजिबुल वुजूद और आ़लम का ईजाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला। **525 :** क्यूं कि येह नक़्स है और वोह नक़्स व ऐब से पाक। **526 :** इस में उस की मालिकिय्यत और नफ़ाज़े अम्र व तसर्रुफ़ का बयान है और निहायत लत़ीफ़ पैराए में रद्दे शिर्क है कि जब सारा जहान उस की मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है! मुश्रिकीन या तो कवाकिब को पूजते हैं जो आस्मानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पथ्थरों, दरख़्तों, जानवरों, आग वग़ैरा को जो ज़मीन में हैं। जब आस्मान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो येह कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं। **527 :** इस में मुश्रिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बता दिया गया कि कुफ़्फ़ार के लिये शफ़ाअ़त नहीं। अल्लाह के हुज़ूर माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता लोगों) के सिवा कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इज़्न वाले अम्बिया व मलाएका व मोमिनीन हैं। **528 :** या'नी मा क़ब्ल व मा बा'द या उमूरे दुन्या व आख़िरत। **529 :** और जिन को वोह मुत्तलअ़ फ़रमाए वोह अम्बिया व रुसुल हैं जिन को ग़ैब पर मुत्तलअ़ फ़रमाना उन की नुबुव्वत की दलील है। दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ'' (خازن) **530 :** इस में उस की अ़ज़मते शान का इज़्हार है और कुरसी से या इल्मो क़ुदरत मुराद है या अ़र्श या वोह जो अ़र्श के नीचे और सातों आस्मानों के ऊपर है और मुम्किन है कि येह वोही हो जो ''फ़लकुल बुरूज'' के नाम से मश्हूर है। **531 :** इस आयत में इलाहिय्यात के आ'ला मसाइल का बयान है और इस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला मौजूद है, इलाहिय्यत में वाह़िद है, ह़यात के साथ मुत्तसिफ़ है, वाजिबुल वुजूद अपने मा सिवा का मूजिद है, तह़य्युज़ व ह़ुलूल से मुनज़्ज़ा और तग़य्युर और फ़ुतूर से मुबर्रा है, न किसी को उस से मुशाबहत, न अ़वारिज़े मख़्लूक़ को उस तक रसाई, मुल्क व मलकूत का मालिक, उसूल व फ़ुरूअ़ का मुब्दिअ़, क़वी गिरिफ़्त वाला, जिस के हुज़ूर सिवाए माज़ून (इजाज़त याफ़्ता) के कोई शफ़ाअ़त के लिये लब न हिला सके, तमाम अश्या का जानने वाला, जली (ज़ाहिर) का भी और ख़फ़ी का भी, कुल्ली का भी और जुज़्ई का भी, وَاسِعُ الْمُلْكِ وَالْقُدْرَةِ, इदराक व वहमो फ़ह्म से बर तरो बाला। **532 :** सिफ़ाते इलाहिय्यह के बा'द ''لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ'' फ़रमाने में येह इश्आ़र (बता देना) है कि अब आ़क़िल के लिये क़बूले ह़क़ में तअम्मुल की कोई वज्ह बाक़ी न रही।

www.dawateislami.net

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ

नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए[533] उस ने

اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾

बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ۬

अल्लाह वाली है मुसल्मानों का इन्हें अंधेरियों से[534] नूर की तरफ़ निकालता है

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى

और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़

الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى

निकालते हैं येही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था

الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में इस पर[535] कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी[536] जब कि इब्राहीम ने कहा कि

رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है[537] बोला मैं जिलाता और मारता हूं[538] इब्राहीम ने फ़रमाया

ع ٣٤ — وقف لازم

533 : इस में इशारा है कि काफ़िर के लिये अव्वल अपने कुफ़्र से तौबा व बेज़ारी ज़रूर है, इस के बा'द ईमान लाना सहीह होता है। **534 :** कुफ़्रो ज़लालत की, ईमान व हिदायत की रोशनी और **535 :** ग़ुरूरो तकब्बुर पर। **536 :** और तमाम ज़मीन की सल्तनत अ़ता फ़रमाई, इस पर उस ने बजाए शुक्र व ताअ़त के तकब्बुर व तजब्बुर किया और रबूबिय्यत का दा'वा करने लगा। इस का नाम नमरूद बिन किन्आ़न था। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला येही है। जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस को ख़ुदा परस्ती की दा'वत दी, ख़्वाह आग में डाले जाने से क़ब्ल या इस के बा'द तो वोह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो ? **537 :** या'नी अज्साम में मौत व हयात पैदा करता है। एक ख़ुदा ना शनास के लिये येह बेहतरीन हिदायत थी और इस में बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उस के वुजूद की शाहिद है कि तू एक बेजान नुत्फ़ा था, जिस (ज़ात) ने इस को इन्सानी सूरत दी और हयात अ़ता फ़रमाई वोह रब है और ज़िन्दगी के बा'द फिर ज़िन्दा अज्साम को जो मौत देता है वोह परवर दगार है, उस की क़ुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व हयात में मौजूद है, उस के वुजूद से बे ख़बर रहना कमाले जहालत व सफ़ाहत (बे वुक़ूफ़ी) और इन्तिहाई बद नसीबी है। येह दलील ऐसी ज़बर दस्त थी कि इस का जवाब नमरूद से बन न पड़ा और इस ख़याल से कि मज्मअ़ के सामने उस को ला जवाब और शरमिन्दा होना पड़ता है उस ने कज बहसी (फ़ुज़ूल तकरार) इख़्तियार की। **538 :** नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया, उन में से एक को क़त्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूं, या'नी किसी को गिरिफ़्तार कर के छोड़ देना उस को जिलाना है, येह उस की निहायत अहमक़ाना बात थी, कहां क़त्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व हयात पैदा करना ! क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आ़जिज़ रहना, और बजाए इस के ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उस की ज़िल्लत के लिये काफ़ी था। उ़क़ला पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो हुज्जत हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ाइम फ़रमाई वोह क़ाते़अ़ है और उस का जवाब मुम्किन नहीं, लेकिन चूंकि नमरूद के जवाब में शाने दा'वा पैदा हो गई तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व हयात का पैदा करना तो तेरे मक़्दूर (इख़्तियार) में नहीं, ऐ रबूबिय्यत के झूटे मुद्दई ! तू इस से सहल (आसान) काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्रिक जिस्म की हरकत का बदलना है।

www.dawateislami.net

فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ

तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ[539] तो होश उड़ गए

الَّذِیْ كَفَرَؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَۚ۝۲۵۸ اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰی

काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को या उस की तरह जो गुज़रा

قَرْیَةٍ وَّ هِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰی عُرُوْشِهَاۚ قَالَ اَنّٰی یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

एक बस्ती पर[540] और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर[541] बोला इसे क्यूंकर जिलाएगा अल्लाह इस की

539 : येह भी न कर सके तो रबूबिय्यत का दा'वा किस मुंह से करता है ! **मस्अला :** इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है। **540 :** बक़ौले अक्सर येह वाक़िआ हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का है और बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है। जब बख़्ते नस्र बादशाह ने बैतुल मक़्दिस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्ल किया, गिरिफ़्तार किया, तबाह कर डाला, फिर हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام वहां गुज़रे, आप के साथ एक बरतन, खजूर और एक पियाला अंगूर का रस था और आप एक दराज़ गोश पर सुवार थे तमाम बस्ती में फिरे किसी शख़्स को वहां न पाया। बस्ती की इमारतों को मुन्हदिम देखा तो आप ने बराहे तअज्जुब कहा : ''اَنّٰى يُحْيِ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا'' (इसे क्यूंकर जिलाएगा अल्लाह इस की मौत के बा'द !) और आप ने अपनी सुवारी के हिमार को वहां बांध दिया और आप ने आराम फ़रमाया, इसी हालत में आप की रूह क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया। येह सुब्ह के वक़्त का वाक़िआ है, इस से सत्तर बरस बा'द अल्लाह तआला ने शाहाने फ़ार्स में से एक बादशाह को मुसल्लत़ किया और वोह अपनी फ़ौजें ले कर बैतुल मक़्दिस पहुंचा और उस को पहले से भी बेहतर त़रीक़े पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे अल्लाह तआला उन्हें फिर यहां लाया और वोह बैतुल मक़्दिस और उस के नवाह़ में आबाद हुए और उन की ता'दाद बढ़ती रही, उस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को दुन्या की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आप को न देख सका। जब आप की वफ़ात को सो बरस गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने आप को ज़िन्दा किया, पहले आंखों में जान आई, अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था, वोह आप के देखते देखते ज़िन्दा किया गया। येह वाक़िआ शाम के वक़्त ग़ुरूबे आफ़ताब के क़रीब हुवा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : तुम यहां कितने दिन ठहरे ? आप ने अन्दाज़े से अ़र्ज़ किया कि एक दिन या कुछ कम। आप का ख़याल येह हुवा कि येह उसी दिन की शाम है जिस की सुब्ह़ को सोए थे। फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम सो बरस ठहरे, अपने खाने और पानी या'नी खजूर और अंगूर के रस को देखिये कि वैसा ही है उस में बू तक न आई और अपने गधे को देखिये। देखा तो वोह मर गया था, गल गया, आ'ज़ा बिखर गए थे, हड्डियां सफ़ेद चमक रही थीं, आप की निगाह के सामने उस के आ'ज़ा जम्अ़ हुए, आ'ज़ा अपने अपने मवाक़ेअ़ पर आए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले, फिर उस में रूह़ फूंकी, वोह उठ खड़ा हुवा और आवाज़ करने लगा। आप ने अल्लाह तआला की क़ुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया : मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है, फिर आप अपनी उस सुवारी पर सुवार हो कर अपने महल्ले में तशरीफ़ लाए, सरे अक़्दस और रीश मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उ़म्र वोही चालीस साल की थी, कोई आप को न पहचानता था। अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिस के पाउं रह गए थे, वोह नाबीना हो गई थी, वोह आप के घर की बांदी थी और उस ने आप को देखा था। आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह उज़ैर का मकान है ? उस ने कहा : हां, और उज़ैर कहां ! उन्हें मफ़्क़ूद (गुम) हुए सो बरस गुज़र गए येह कह कर ख़ूब रोई। आप ने फ़रमाया : मैं उज़ैर हूं। उस ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه येह कैसे हो सकता है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने मुझे सो बरस मुर्दा रखा, फिर ज़िन्दा किया। उस ने कहा : हज़रते उज़ैर ''मुस्तजाबुद्दा'वात'' थे, जो दुआ़ करते क़बूल होती, आप दुआ़ कीजिये कि मैं बीना हो जाऊं ताकि मैं अपनी आंखों से आप को देखूं। आप ने दुआ़ फ़रमाई, वोह बीना हुई, आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमाया ? उठ ख़ुदा के हुक्म से। येह फ़रमाते ही उस के मारे हुए पाउं दुरुस्त हो गए। उस ने आप को देख कर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूं कि आप बेशक हज़रते उज़ैर हैं। वोह आप को बनी इसराईल के महल्ले में ले गई वहां एक मजलिस में आप के फ़रज़न्द थे जिन की उ़म्र एक सो अठ्ठारह साल की हो चुकी थी और आप के पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे, बुढ़िया ने मजलिस में पुकारा कि येह हज़रते उज़ैर तशरीफ़ ले आए, अहले मजलिस ने उस को झुटलाया, उस ने कहा : मुझे देखो ! आप की दुआ़ से मेरी येह हालत हो गई। लोग उठे और आप के पास आए आप के फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साहिब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक हिलाल था। जिस्मे मुबारक खोल कर दिखाया गया तो वोह मौजूद था। उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्ख़ा न रहा था, कोई उस का जानने वाला मौजूद न था, आप ने तमाम तौरैत हिफ़्ज़ पढ़ दी। एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मा'लूम हुवा कि बख़्ते नस्र की सितम अंगेज़ियों के बा'द गिरिफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़्न कर दी थी उस का पता मुझे मा'लूम है, उस पते पर जुस्तजू कर के तौरैत का वोह मदफ़ून नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उस से मुक़ाबला किया गया तो एक हर्फ़ का फ़र्क़ न था। (جمل) **541 :** कि पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें आ पड़ीं।

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ

मौत के बा'द तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अ़र्ज़ की

لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى

दिन भर ठहरा होउंगा या कुछ कम फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने

طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ قف وَ لِنَجْعَلَكَ

खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों

اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَ انْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ

के वासिते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾ وَ اِذْ قَالَ

जब येह मुआ़मला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَيْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى

इब्राहीम ने[542] ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं[543] अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं

وَ لٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ

मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए[544] फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ

اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ

हिला ले[545] फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते[546]

542 : मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था। जुवार भाटे में समुन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता है, जब पानी चढ़ता तो मछलियां उस लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्द खाते, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो आप को शौक़ हुवा कि आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएं कि मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा किये जाएंगे। आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : या रब ! मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उन के अज्ज़ा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोटों से जम्अ़ फ़रमाएगा, लेकिन मैं येह अ़जीब मन्ज़र देखने की आरज़ू रखता हूं। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लील किया, मलकुल मौत ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त से इज़्न ले कर आप को येह बिशारत सुनाने आए, आप ने बिशारत सुन कर **अल्लाह** की ह़म्द की और मलकुल मौत से फ़रमाया कि इस ख़ुल्लत की अ़लामत क्या है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह कि **अल्लाह** तआ़ला आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाए और आप के सुवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करे। तब आप ने येह दुआ़ की। (خازن) **543 :** **अल्लाह** तआ़ला आ़लिमे ग़ैब व शहादत है उस को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के कमाले ईमानो यक़ीन का इ़ल्म है बा वुजूद इस के येह सुवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यक़ीन नहीं? इस लिये है कि सामिईन को सुवाल का मक़्सद मा'लूम हो जाए और वोह जान लें कि येह सुवाल किसी शको शुबे की बिना पर न था। (بیضاوی وجمل وغیرہ) **544 :** और इन्तिज़ार की बेचैनी रफ़्अ़ हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील बनाया। **545 :** ताकि अच्छी त़रह़ शनाख़्त हो जाए। **546 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने चार परिन्दे लिये : मोर, मुर्ग़, कबूतर, कव्वा। उन्हें ब हुक्मे इलाही ज़ब्ह़

وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶۰﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ ٣٥

और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में

سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ

ख़र्च करते हैं[547] उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें[548] हर बाल में सो

حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾ اَلَّذِيْنَ

दाने[549] और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है वोह जो

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ

अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं[550] फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न

اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

तक्लीफ़ दें[551] उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न

يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ

कुछ ग़म अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना[552] उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द

किया, उन के पर उखाड़े और क़ीमा कर के उन के अज्ज़ा बाहम ख़ल्त़ कर दिये और उस मज्मूए़ के कई ह़िस्से किये। एक एक ह़िस्सा एक एक पहाड़ पर रखा और सर सब के अपने पास मह़फ़ूज़ रखे फिर फ़रमाया : चले आओ ! हुक्मे इलाही से। येह फ़रमाते ही वोह अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर अपनी तरतीब से जम्अ़ हुए और परिन्दों की शक्लें बन कर अपने पाउं से दौड़ते ह़ाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिल कर बिऐनिही पहले की त़रह़ मुकम्मल हो कर उड़ गए। سُبْحٰنَ الله **547 :** ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल, तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है ख़्वाह किसी त़ालिबे इ़ल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या अम्वात के ईसाले सवाब के लिये तीजे, दसवें, बीसवें, चालीसवें के त़रीक़े पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए। **548 :** उगाने वाला ह़क़ीक़त में अल्लाह ही है दाने की त़रफ़ निस्बत मजाज़ी है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इस्नादे मजाज़ी जाइज़ है जब कि इस्नाद करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को "मुस्तक़िल फ़ित्तसर्रुफ़" ए'तिक़ाद न करता हो। इसी लिये येह कहना जाइज़ है कि येह दवा नाफ़ेअ़ है, येह मुज़िर है, येह दर्द की दाफ़ेअ़ है, मां बाप ने पाला, आ़लिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने ह़ाजत रवाई की वग़ैरा, सब में इस्नादे मजाज़ी है और मुसल्मान के ए'तिक़ाद में फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है बाक़ी सब वसाइल। **549 :** तो एक दाने के सात सो दाने हो गए, इसी त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से सात सो गुना अज्र हो जाता है। **550 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर हैं, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे अल्लाह तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए। **551 :** एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर (रन्जीदा व ग़मगीन) करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था, हम ने तेरी ख़बरगीरी की या और त़रह़ दबाव दें, येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **552 :** या'नी अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ जवाब देना जो उस को ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र करना।

www.dawateislami.net

اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿۲۶۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

सताना हो[553] और अल्लाह बे परवा हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो अपने सदक़े

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا

बातिल न कर दो एह्सान रख कर और ईज़ा दे कर[554] उस की तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ

अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है

فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा[555] अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶۴﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता और उन की कहावत जो अपने माल

اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ

अल्लाह की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को[556] उस बाग़ की सी है

بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ

जो भूड़ (रेतली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे

فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ

तो ओस काफ़ी है[557] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[558] क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा[559] कि उस के पास

جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ

एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का[560] जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये उस में हर क़िस्म के

553 : आर दिला कर या एह्सान जता कर या और कोई तक्लीफ़ पहुंचा कर। 554 : या'नी जिस तरह मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती, वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस तरह तुम एह्सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो। 555 : येह मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस तरह पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है ख़ाली पथ्थर रह जाता है, येही हाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बातिल होंगे क्यूं कि रिज़ाए इलाही के लिये न थे। 556 : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने पर। 557 : येह मोमिने मुख़्लिस के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस तरह बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो, अल्लाह तआला उस को बढ़ाता है। 558 : और तुम्हारी निय्यत व इख़्लास को जानता है। 559 : या'नी कोई पसन्द न करेगा क्यूं कि येह बात किसी आ़क़िल के गवारा करने के क़ाबिल नहीं है। 560 : गर्चे उस बाग़ में भी क़िस्म क़िस्म के दरख़्त होंगे मगर खजूर और अंगूर का ज़िक्र इस लिये किया कि येह नफ़ीस मेवे हैं।

www.dawateislami.net

الثَّمَرٰتِ ۙ وَ اَصَابَهُ الْكِبَرُ وَ لَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ

फलों से है[561] और उसे बुढ़ापा आया[562] और उस के नातुवां बच्चे हैं[563] तो आया उस पर एक बगूला (इन्तिहाई तेज़ हवा का चक्कर)

فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

जिस में आग थी तो जल गया[564] ऐसा ही बयान करता है **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ

ध्यान लगाओ[565] ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो[566]

وَ مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَ لَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ

और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला[567] और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि

تُنْفِقُوْنَ وَ لَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

दो तो उस में से[568] और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह**

غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾ اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ يَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ

बे परवा सराहा गया है शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है[569] मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का[570]

وَ اللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۖ ﴿٢٦٨﴾ يُّؤْتِي

और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का[571] और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है **अल्लाह**

---

561 : या'नी वोह बाग़ फ़रहत अंगेज़ व दिलकुशा भी है और नाफ़ेअ़ और उ़म्दा जाएदाद भी। **562 :** जो ह़ाजत का वक़्त होता है और आदमी कस्बो मआ़श के क़ाबिल नहीं रहता। **563 :** जो कमाने के क़ाबिल नहीं और उन की परवरिश की ह़ाजत है। ग़रज़ वक़्त निहायत शिद्दते ह़ाजत का है और दारो मदार सिर्फ़ बाग़ पर और बाग़ भी निहायत उ़म्दा है। **564 :** वोह बाग़। तो उस वक़्त उस के रन्जो ग़म और ह़स्रतो यास की क्या इन्तिहा है, येही ह़ाल उस का है जिस ने आ'माले ह़सना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से, और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते ह़ाजत का वक़्त या'नी क़ियामत का दिन आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन आ'माल को ना मक़्बूल कर दे, उस वक़्त उस को कितना रन्ज और कितनी ह़सरत होगी। एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْه ने सह़ाबए किराम से फ़रमाया कि आप के इ़ल्म में येह आयत किस बाब में नाज़िल हुई ? ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह मिसाल है एक दौलत मन्द शख़्स के लिये जो नेक अ़मल करता हो फिर शैत़ान के इग़्वा से गुमराह हो कर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाएअ़ कर दे। (مدارک وخازن) **565 :** और समझो कि दुन्या फ़ानी और आ़क़िबत आनी है। **566 मस्अला :** इस से कस्ब की इबाह़त और अम्वाले तिजारत में ज़कात साबित होती है। (خازن ومدارک) येह भी हो सकता है कि आयत सदक़ए नाफ़िला व फ़र्ज़िया दोनों को आ़म हो। (تفسیر احمدی) **567 :** ख़्वाह वोह ग़ल्ले हों या फल या मआ़दिन वग़ैरा। **568 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग ख़राब माल सदक़े में देते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** मुसद्दिक़ या'नी सदक़ा वुसूल करने वाले को चाहिये कि वोह मुतवस्सित़ माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सब से आ'ला। **569 :** कि अगर ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो नादार हो जाओगे। **570 :** या'नी बुख़्ल का और ज़कात व सदक़ा न देने का। इस आयत में येह लत़ीफ़ा है कि शैत़ान किसी त़रह़ बुख़्ल की ख़ूबी ज़ेह्न नशीन नहीं कर सकता इस लिये वोह येही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके। आज कल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर (डटे हुए) हैं वोह भी इसी ह़ीले से काम लेते हैं। **571 :** सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर।

الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ

हिक्मत देता है[572] जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले और तुम जो ख़र्च करो[573] या मन्नत

مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ اِنْ تُبْدُوا

मानो[574] अल्लाह को उस की ख़बर है[575] और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं अगर ख़ैरात

الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ

अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है[576]

وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है उन्हें राह

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ

देना तुम्हारे ज़िम्मे लाज़िम नहीं[577] हां अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो

خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तो तुम्हारा ही भला है[578] और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो

مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ

तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे उन फ़क़ीरों के लिये जो

572 : हिक्मत से या क़ुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह का इल्म मुराद है या तक़्वा या नुबुव्वत। (مدارک وخازن) 573 : नेकी में ख़्वाह बदी में। 574 : त़ाअ़त की या गुनाह की। "नज़्र" उ़र्फ़ में हदिय्या और पेशकश को कहते हैं और शरअ़ में नज़्र इबादत और क़ुर्बते मक़्सूदा है, इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह सह़ीह़ नहीं हुई। नज़्र ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि अल्लाह के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को नज़्र के सर्फ़ का महल (ख़र्च करने की जगह) मुक़र्रर करे, मसलन किसी ने येह कहा : या रब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फ़ुलां मक़्सद पूरा कर दे कि फ़ुलां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फ़ुलां वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रुपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये तेल या बोरिया हाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है। (ردالمحتار) 575 : वोह तुम्हें उस का बदला देगा। 576 : सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से अल्लाह के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं। **मस्अला :** लेकिन सदक़ा फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर। **मस्अला :** और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़्हार भी अफ़्ज़ल है। (مدارک) 577 : आप बशीरो नज़ीर व दाई बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दा'वत पर तमाम हो जाता है, इस से ज़ियादा जोहद (कोशिश करना) आप पर लाज़िम नहीं। **शाने नुज़ूल :** क़ब्ले इस्लाम मुसलमानों की यहूद से रिश्तेदारियां थीं इस वज्ह से वोह उन के साथ सुलूक किया करते थे, मुसलमान होने के बा'द उन्हें यहूद के साथ सुलूक करना ना गवार होने लगा और उन्हों ने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उन के इस त़र्ज़े अ़मल से यहूद इस्लाम की त़रफ़ माइल हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 578 : तो दूसरों पर इस का एह़सान न जताओ।

www.dawateislami.net

أُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ

राहे ख़ुदा में रोके गए[579] ज़मीन में चल नहीं सकते[580] नादान उन्हें

الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ

तवंगर समझे बचने के सबब[581] तू उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा[582] लोगों से सुवाल

النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۟ ع ٢٧٣ اَلَّذِيْنَ

नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है वोह जो

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर[583] उन के लिये उन का नेग (अज्र) है

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۟ ٢٧٤ اَلَّذِيْنَ

उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म वोह जो

يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

सूद खाते हैं[584] क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने

579 : या'नी सदक़ाते मज़्कूरा जो आयए "وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ" में ज़िक्र हुए उन का बेहतरीन मसरफ़ वोह फ़ुक़रा हैं जिन्हों ने अपने नुफ़ूस को जिहाद व ताअ़ते इलाही पर रोका। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई। इन हज़रात की ता'दाद चार सो के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए तय्यिबा हाज़िर हुए थे, न यहां इन का मकान था, न क़बीला कुम्बा, न इन हज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इबादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना, दिन में जिहाद के काम में रहना। आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है। **580 :** क्यूं कि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुरसत नहीं कि वोह चल फिर कर कस्बे मआ़श कर सकें। **581 :** या'नी चूंकि वोह किसी से सुवाल नहीं करते इस लिये ना वाक़िफ़ लोग उन्हें मालदार ख़याल करते हैं। **582 :** कि मिज़ाज में तवाज़ोअ़ व इन्किसारी है, चेहरों पर ज़ो'फ़ के आसार हैं, भूक से रंग ज़र्द पड़ गए हैं। **583 :** या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ के हक़ में नाज़िल हुई जब कि आप ने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर। एक क़ौल येह है कि येह आयत हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ के हक़ में नाज़िल हुई, जब कि आप के पास फ़क़त चार दिरहम थे और कुछ न था। आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया, एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा, एक को ज़ाहिर। **फ़ाएदा :** आयते करीमा में नफ़्क़ए लैल को नफ़्क़ए नहार (रात के ख़र्च करने को दिन के ख़र्च करने) पर और नफ़्क़ए सिर को नफ़्क़ए अ़लानिया (छुपा कर ख़र्च करने को दिखा कर ख़र्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया गया। इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़्ज़ल है। **584 :** इस आयत में सूद की हुरमत और सूद ख़्वारों की शामत का बयान है। सूद को हराम फ़रमाने में बहुत हिक्मतें हैं, बा'ज़ उन में से येह हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह मुआ़वज़ए मालिया में **एक** मिक़्दारे माल का बिग़ैर बदल व इवज़ के लेना है येह सरीह ना इन्साफ़ी है। **दुवुम** सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद ख़्वार को बे मेहनत माल का हासिल होना तिजारत की मशक़्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआ़शरत को ज़रर पहुंचाती है। **सिवुम** सूद के रवाज से बाहमी मुवद्दत के सुलूक को नुक़्सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आदी हुवा तो वोह किसी को क़र्ज़े हसन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। **चहारुम** सूद से इन्सान की तबीअ़त में दरिन्दों से ज़ियादा बे रहमी पैदा होती है और सूद ख़्वार अपने मदयून (मक़रूज़ों) की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। इस के इलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़्सान हैं और शरीअ़त की मुमानअ़त ऐन हिक्मत है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सूद

www.dawateislami.net

وقف لازم

الشَّیۡطٰنُ مِنَ الۡمَسِّ ؕ ذٰلِکَ بِاَنَّہُمۡ قَالُوۡۤا اِنَّمَا الۡبَیۡعُ مِثۡلُ الرِّبٰوا ۘ

छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो[585] येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है

وَ اَحَلَّ اللّٰہُ الۡبَیۡعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنۡ جَآءَہٗ مَوۡعِظَۃٌ مِّنۡ رَّبِّہٖ

और अल्लाह ने ह़लाल किया बैअ़ और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई

فَانۡتَہٰی فَلَہٗ مَا سَلَفَ ؕ وَ اَمۡرُہٗۤ اِلَی اللّٰہِ ؕ وَ مَنۡ عَادَ فَاُولٰٓئِکَ اَصۡحٰبُ

और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका[586] और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है[587] और जो अब ऐसी ह़रकत करेगा तो वोह

النَّارِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۷۵﴾ یَمۡحَقُ اللّٰہُ الرِّبٰوا وَ یُرۡبِی الصَّدَقٰتِ ؕ

दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे[588] अल्लाह हलाक करता है सूद को[589] और बढ़ाता है ख़ैरात को[590]

وَ اللّٰہُ لَا یُحِبُّ کُلَّ کَفَّارٍ اَثِیۡمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا

और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्र बड़ा गुनहगार बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَوُا الزَّکٰوۃَ لَہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ

काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है

وَ لَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۲۷۷﴾ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ऐ ईमान वालो अल्लाह से

اللّٰہَ وَ ذَرُوۡا مَا بَقِیَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنۡ لَّمۡ

डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो[591] फिर अगर ऐसा

ख़्वार और इस के कार परदाज़ और सूदी दस्तावेज़ के कातिब और इस के गवाहों पर ला'नत की और फ़रमाया : वोह सब गुनाह में बराबर हैं। **585 :** मा'ना येह हैं कि जिस त़रह़ आसेब ज़दा सीधा खड़ा नहीं हो सकता गिरता पड़ता चलता है क़ियामत के रोज़ सूद ख़्वार का ऐसा ही ह़ाल होगा कि सूद से उस का पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वोह उस के बोझ से गिर गिर पड़ेगा। सईद बिन जुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह अ़लामत उस सूद ख़्वार की है जो सूद को ह़लाल जाने। **586 :** या'नी ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल जो लिया उस पर मुआख़ज़ा नहीं। **587 :** जो चाहे अम्र फ़रमाए, जो चाहे मम्नूअ़ व ह़राम करे, बन्दे पर उस की इत़ाअ़त लाज़िम है। **588 मस्अला :** जो सूद को ह़लाल जाने वोह काफ़िर है हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि हर एक ह़रामे क़त़ई का ह़लाल जानने वाला काफ़िर है। **589 :** और उस को बरकत से मह़रूम करता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस से न सदक़ा क़बूल करे, न ह़ज, न जिहाद, न सिला (रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक करना)। **590 :** उस को ज़ियादा करता है और उस में बरकत फ़रमाता है दुन्या में और आख़िरत में उस का अज्रो सवाब बढ़ाता है। **591 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लैन दैन करते थे और उन की गिरां क़द्र सूदी रक़मेें दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं। इस में ह़ुक्म दिया गया कि सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने के बा'द साबिक़ के मुत़ालबे भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़र्रर किया हुवा सूद भी अब लेना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ

न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का[592] और अगर तुम तौबा करो तो अपना

رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ وَ اِنْ كَانَ ذُوْ

अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ[593] न तुम्हें नुक़्सान हो[594] और अगर क़र्ज़दार

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَ اَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर

تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۫ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ

जानो[595] और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की तरफ़ फिरोगे और हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ٣٨

उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा[596] ऐ ईमान वालो जब

تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَ لْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ

तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो[597] तो उसे लिख लो[598] और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला

بِالْعَدْلِ ۪ وَ لَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ

ठीक ठीक लिखे[599] और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे **अल्लाह** ने सिखाया है[600] तो उसे लिख देना चाहिये

592 : येह वईदो तहदीद में मुबालग़ा व तश्दीद है, किस की मजाल कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे, चुनान्चे उन अस्हाब ने अपने सूदी मुतालबे छोड़े और येह अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब ! और ताइब हुए। **593 :** ज़ियादा ले कर। **594 :** रासुल माल घटा कर। **595 :** क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या क़र्ज़ का जुज़्व या कुल मुआफ़ कर देना सबबे अज्रे अ़ज़ीम है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ा मुआफ़ किया **अल्लाह** तआ़ला उस को अपना सायए रहमत अ़ता फ़रमाएगा जिस रोज़ उस के साए के सिवा कोई साया न होगा। **596 :** या'नी न उन की नेकियां घटाई जाएं न बदियां बढ़ाई जाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि येह सब से आख़िरी आयत है जो हुज़ूर पर नाज़िल हुई। इस के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इक्कीस रोज़ दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल में नव शब और एक में सात, लेकिन शअ़बी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْه से येह रिवायत की है कि सब से आख़िर आयते 'रिबा' नाज़िल हुई। **597 :** ख़्वाह वोह दैन मबीअ़ हो या समन, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि इस से बैए सलम मुराद है। बैए सलम येह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत ले कर फ़रोख़्त किया जाए और मबीअ़ मुश्तरी (ख़रीदार) को सिपुर्द करने के लिये एक मुद्दत मुअ़य्यन कर ली जाए। इस बैअ़ के जवाज़ के लिये जिन्स, नौअ़, सिफ़त, मिक्दार, मुद्दत और मकाने अदा और मिक्दारे रासुल माल इन चीज़ों का मा'लूम होना शर्त़ है। **598 :** येह लिखना मुस्तह़ब है। **फ़ाएदा** इस का येह है कि भूलचूक और मदयून के इन्कार का अन्देशा नहीं रहता। **599 :** अपनी त़रफ़ से कोई कमी बेशी न करे, न फ़रीक़ैन में से किसी की रू व रिआ़यत। **600 :** ह़ासिल मा'ना येह कि कोई कातिब लिखने से मन्अ़ न करे, जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस को वसीक़ा नवीसी (अ़ह्दो पैमान लिखने) का इल्म दिया, बे तग़य्युरो तब्दील दियानत व अमानत के साथ लिखे। येह किताबत एक क़ौल पर फ़र्ज़े किफ़ाया है, और एक क़ौल पर फ़र्ज़े ऐन बशर्त़ फ़राग़े कातिब जिस सूरत में इस के सिवा और न पाया जाए, और एक क़ौल पर मुस्तह़ब, क्यूं कि इस में मुसल्मान की ह़ाजत बरआरी (ह़ाजत पूरी करने) और ने'मते इल्म का शुक्र है, और एक क़ौल येह है कि पहले येह किताबत फ़र्ज़ थी फिर "لَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ" से मन्सूख़ हुई।

وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ
और जिस पर हक़ आता है वोह लिखाता जाए और अल्लाह से डरे जो उस का रब है और हक़ में से कुछ रख न

شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ
छोड़े फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे अक़्ल या नातुवां हो या लिखा न

اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ
सके[601] तो उस का वली इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह कर लो अपने

رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ
मर्दों में से[602] फिर अगर दो मर्द न हों[603] तो एक मर्द और दो औ़रतें ऐसे गवाह जिन को

مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ
पसन्द करो[604] कि कहीं उन में एक औ़रत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिलावे

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا
और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें[605] और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो

اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
या बड़ा उस की मीआ़द तक लिखत कर लो येह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही खूब ठीक रहेगी

وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا
और येह इस से क़रीब है कि तुम्हें शुबा न पड़े मगर येह कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त

601 : या'नी अगर मदयून मज्नून या नाक़िसुल अ़क़्ल या बच्चा या शैखे़ फ़ानी हो या गूंगा होने या ज़बान न जानने की वज्ह से अपने मुद्दआ़ का बयान न कर सकता हो। **602 :** गवाह के लिये हुर्रिय्यत व बुलूग़ मअ़ इस्लाम शर्त है। कुफ़्फ़ार की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़ार पर मक़्बूल है। **603 मस्अला :** तन्हा औ़रतों की शहादत जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह चार क्यूं न हों मगर जिन उमूर पर मर्द मुत्तलअ़ नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, बाकिरा होना और निसाई उ़यूब उन में एक औ़रत की शहादत भी मक़्बूल है। **मस्अला :** हुदूद व क़िसास में औ़रतों की शहादत बिल्कुल मो'तबर नहीं, सिर्फ़ मर्दों की शहादत ज़रूरी है। इस के सिवा और मुआ़मलात में एक मर्द और दो औ़रतों की शहादत भी मक़्बूल है। (مدارک واحمدی) **604 :** जिन का आ़दिल होना तुम्हें मा'लूम हो और जिन के सालेह होने पर तुम ए'तिमाद रखते हो। **605 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अदाए शहादत फ़र्ज़ है। जब मुद्दई गवाहों को त़लब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जाइज़ नहीं। येह हुक्म हुदूद के सिवा और उमूर में है, लेकिन हुदूद में गवाह को इज़्हार व इख़्फ़ा का इख़्तियार है बल्कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसल्मान की पर्दापोशी करे अल्लाह तबारक व तआ़ला दुन्या व आख़िरत में उस की सत्तारी करेगा, लेकिन चोरी में माल लेने की शहादत देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी किया गया है उस का हक़ तलफ़ न हो। गवाह इतनी एहतियात़ कर सकता है कि चोरी का लफ़्ज़ न कहे, गवाही में येह कहने पर इक्तिफ़ा करे कि येह माल फ़ुलां शख़्स ने लिया है।

بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا

(हाथों हाथ) हो तो उस के न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं[606] और जब ख़रीदो फ़रोख़्त

تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ۬ؕ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ

करो तो गवाह कर लो[607] और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए न गवाह को (या न लिखने वाला ज़रर दे न गवाह)[608] और जो ऐसा करो तो येह

فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ

तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है और **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۲۸۲﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

जानता है और अगर तुम सफ़र में हो[609] और लिखने वाला न पाओ[610] तो गिरव हो क़ब्ज़े में दिया हुवा[611]

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِی اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अगर तुम में एक दूसरे पर इत्मीनान हो तो वोह जिसे इस ने अमीन समझा था[612] अपनी अमानत अदा करे[613] और **अल्लाह** से डरे जो

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ

उस का रब है और गवाही न छुपाओ[614] और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है[615] और **अल्लाह**

بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۳﴾ ع لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ ع ۳۹ ۷

तुम्हारे कामों को जानता है **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर

606 : चूंकि इस सूरत में लेन देन हो कर मुआमला ख़त्म हो गया और कोई अन्देशा बाक़ी न रहा नीज़ ऐसी तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त ब कसरत जारी रहती है, इस में किताबत व अश्हाद (लिखत पढ़त और गवाह बनाने) की पाबन्दी शाक़ व गिरां होगी। **607 :** येह मुस्तहब है, क्यूं कि इस में एहतियात है। **608 :** "يُضَآرَّ" में दो एहतिमाल हैं मज्हूल व मा'रूफ़ होने के, क़िराअते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما अव्वल की और क़िराअते उमर رضی اللہ عنہ सानी की मुअय्यिद है। **पहली** तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि अहले मुआमला कातिबों और गवाहों को ज़रर न पहुंचाएं, इस तरह कि वोह अगर अपनी ज़रूरतों में मश्ग़ूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उन के काम छुड़ाएं या हक़्क़े किताबत न दें या गवाह को सफ़र ख़र्च न दें अगर वोह दूसरे शहर से आया हो। **दूसरी** तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि कातिब व शाहिद अहले मुआमला को ज़रर न पहुंचाएं इस तरह कि बा वुजूद फ़ुरसत व फ़राग़त के न आएं या किताबत में तहरीफ़ व तब्दील, ज़ियादती व कमी करें। **609 :** और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए **610 :** और वसीक़ा व दस्तावेज़ की तहरीर का मौक़अ़ न मिले तो इत्मीनान के लिये। **611 :** या'नी कोई चीज़ दाइन (क़र्ज़ देने वाले) के क़ब्ज़े में गिरवी के तौर पर दे दो। **मस्अला :** येह मुस्तहब है और हालते सफ़र में रहन आयत से साबित हुवा और ग़ैरे सफ़र की हालत में हदीस से साबित है, चुनान्चे रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने मदीनए तृय्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस साअ़ जव लिये। **मस्अला :** इस आयत से रहन का जवाज़ और क़ब्ज़े का शर्त होना साबित होता है। **612 :** या'नी मदयून जिस को दाइन ने अमीन समझा था। **613 :** इस अमानत से दैन मुराद है। **614 :** क्यूं कि इस में साहिबे हक़ के हक़ का इब्ताल है। येह ख़िताब गवाहों को है कि वोह जब शहादत की इक़ामत व अदा के लिये तलब किये जाएं तो हक़ को न छुपाएं और एक क़ौल येह है कि येह ख़िताब मदयूनों को है कि वोह अपने नफ़्स पर शहादत देने में तअम्मुल न करें। **615 :** हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से एक हदीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** के साथ शरीक करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है।

تُبۡدُوۡا مَا فِیۡۤ اَنۡفُسِکُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡہُ یُحَاسِبۡکُمۡ بِہِ اللّٰہُ ؕ فَیَغۡفِرُ لِمَنۡ

तुम ज़ाहिर करो जो कुछ[616] तुम्हारे जी में है या छुपाओ अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा[617] तो जिसे चाहेगा

یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰہُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ

बख़्शेगा[618] और जिसे चाहेगा सज़ा देगा[619] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है रसूल

الرَّسُوۡلُ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡہِ مِنۡ رَّبِّہٖ وَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ کُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰہِ

ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना[620] अल्लाह और उस के

وَ مَلٰٓئِکَتِہٖ وَ کُتُبِہٖ وَ رُسُلِہٖ ۟ قف لَا نُفَرِّقُ بَیۡنَ اَحَدٍ مِّنۡ رُّسُلِہٖ ۟ قف

फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को[621] येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते[622]

وَ قَالُوۡا سَمِعۡنَا وَ اَطَعۡنَا ٭۫ غُفۡرَانَکَ رَبَّنَا وَ اِلَیۡکَ الۡمَصِیۡرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا یُکَلِّفُ

और अ़र्ज़ की, कि हम ने सुना और माना[623] तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है अल्लाह किसी

616 : बदी **617 :** इन्सान के दिल में दो त़रह़ के ख़यालात आते हैं : **एक** बत़ौर वस्वसा के, इन से दिल का ख़ाली करना इन्सान की मक़्दिरत (त़ाक़त व इख़्तियार) में नहीं, लेकिन वोह इन को बुरा जानता है और अ़मल में लाने का इरादा नहीं करता इन को ह़दीसे नफ़्स और वस्वसा कहते हैं, इस पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वस्वसे गुज़रते हैं अल्लाह तआ़ला इन से तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वोह इन्हें अ़मल में न लाएं या उन के साथ कलाम न करें, येह वस्वसे इस आयत में दाख़िल नहीं। **दूसरे** वोह ख़यालात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुआख़ज़ा होगा, और उन्हीं का बयान इस आयत में है। **मस्अला :** कुफ़्र का अ़ज़्म करना कुफ़्र है और गुनाह का अ़ज़्म कर के अगर आदमी उस पर साबित रहे और उस का क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अ़मल में लाने के अस्बाब उस को बहम न पहुंचें और मजबूरन वोह उस को कर न सके तो जम्हूर के नज़्दीक उस से मुआख़ज़ा किया जाएगा। शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अइम्मा ह़लवानी इसी त़रफ़ गए हैं और उन की दलील आयए "اِنَّ الَّذِیۡنَ یُحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِیۡعَ الۡفَاحِشَۃُ" और ह़दीसे ह़ज़रते आ़इशा है जिस का मज़्मून येह है कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वोह अ़मल में न आए जब भी उस पर इ़क़ाब किया जाता है। **मस्अला :** अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया, फिर उस पर नादिम हुवा, इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह उस को मुआ़फ़ फ़रमाएगा। **618 :** अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को। **619 :** अपने अ़द्ल से। **620 :** ज़ज्जाज ने कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने इस सूरत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, ह़ज की फ़र्ज़िय्यत और त़लाक़, ईला, ह़ैज़ व जिहाद के अह़काम और अम्बिया के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए तो सूरत के आख़िर में येह ज़िक्र फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم और मोमिनीन ने उस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और इस के जुम्ला शराएअ़ व अह़काम के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (अल्लाह की त़रफ़ से नाज़िल) होने की तस्दीक़ की। **621 :** येह उसूल व ज़रूरिय्याते ईमान के चार मर्तबे हैं : (1) "**अल्लाह पर ईमान लाना**" येह इस त़रह़ कि ए'तिक़ाद व तस्दीक़ करे कि अल्लाह वाह़िद, अह़द है, उस का कोई शरीक व नज़ीर नहीं, उस के तमाम अस्माए ह़ुस्ना व सिफ़ाते उ़ल्या पर ईमान लाए और यक़ीन करे और माने कि वोह अ़लीम और हर शै पर क़दीर है और उस के इ़ल्मो क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं। (2) "**मलाएका पर ईमान लाना**" येह इस त़रह़ पर है कि यक़ीन करे और माने कि वोह मौजूद हैं, मा'सूम हैं, पाक हैं, अल्लाह के और उस के रसूलों के दरमियान अह़काम व पयाम के वसाइत़ (वासित़े) हैं। (3) "**अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना**" इस त़रह़ कि जो किताबें अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाईं और अपने रसूलों के पास ब त़रीक़े वह़्य भेजीं बे शको शुबा सब ह़क़ व सिद्क़ और अल्लाह की त़रफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तग़य्युर, तब्दील, तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है और मोह़कम और मुतशाबह पर मुश्तमिल है। (4) "**रसूलों पर ईमान लाना**" इस त़रह़ पर कि ईमान लाए कि वोह अल्लाह के रसूल हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों की त़रफ़ भेजा, उस की वह़्य के अमीन हैं, गुनाहों से पाक मा'सूम हैं, सारी ख़ल्क़ से अफ़्ज़ल हैं, उन में बा'ज़ ह़ज़रात बा'ज़ से अफ़्ज़ल हैं। **622 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए, बा'ज़ का इन्कार किया। **623 :** तेरे ह़ुक्म व इर्शाद को।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا

जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई[624] ऐ रब हमारे

تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ اِصْرًا كَمَا

हमें न पकड़ अगर हम भूलें[625] या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताक़त)

بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٚ وَاغْفِرْ لَنَا ٚ وَارْحَمْنَا ٚ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا

न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर (रहम) कर तू हमारा मौला है तो

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

काफ़िरों पर हमें मदद दे

اٰیاتها ۲۰۰ ۳ سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِیَّةٌ ۸۹ رکوعاتها ۲۰

सूरए आले इमरान मदनिय्या है[1], इस में दो सो आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الٓمّٓ ۚ ﴿۱﴾ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ؕ ﴿۲﴾ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं[2] आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला उस ने तुम पर येह सच्ची किताब

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۙ ﴿۳﴾ مِنْ

उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील

---

624 : या'नी हर जान को अ़मले नेक का अज्रो सवाब और अ़मले बद का अ़ज़ाब व इ़क़ाब होगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को त़रीक़े दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वोह इस त़रह़ अपने परवर दगार से अ़र्ज़ करें। **625 :** और सह्व से तेरे किसी हुक्म की ता'मील में क़ासिर रहें। **1 :** सूरए आले इमरान मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में दो सो आयतें, तीन हज़ार चार सो अस्सी कलिमे, चौदह हज़ार पांच सो बीस हुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वफ़्दे नजरान के ह़क़ में नाज़िल हुई जो साठ सुवारों पर मुश्तमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बड़े अकाबिर व मुक़्तदा, **एक आ़क़िब** जिस का नाम अ़ब्दुल मसीह़ था, येह शख़्स अमीरे क़ौम था और बिग़ैर इस की राय के नसारा कोई काम नहीं करते थे। **दूसरा सय्यिद** जिस का नाम ऐहम था, येह शख़्स अपनी क़ौम का मो'तमदे आ'ज़म और मालियात का अफ़्सरे आ'ला था। ख़ुर्दो नोश और रसदों (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) के तमाम इन्तिज़ामात इसी के हुक्म से होते थे। **तीसरा अबू ह़ारिसा** इब्ने अ़ल्क़मा था, येह शख़्स नसारा के तमाम उ़लमा और पादरियों का पेश्वाए आ'ज़म था। सलात़ीने रूम इस के इ़ल्म और इस की दीनी अ़ज़्मत के लिह़ाज़ से इस का इक्राम व अदब करते थे। येह तमाम लोग उ़म्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शानो शकोह से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़्दस में दाख़िल हुए, हुज़ूरे

www.dawateislami.net